बीरांगना

बीरांगना

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

BIRANGANA

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-81-936422-2-1
दाम: 251/- (भा.रु.)

तेसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2017)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण भाव

कुवृत्ति वृत्ति चित्र बनि-बनि
रूप समाज सजैए।
दृश्य-अदृश्य, अदृश्य दृष्टिक
रूप धार धारण करैए।
धरिते रूप धार धरिया
दृश्य महार सजैए।
धार-महार महैर-महि
रंग समाज चढ़ए लगैए।
चढ़िते रंग समाज संग
निखाइर रूप निरखैए।
परखनिहारो निखैर-परैख
गति-विधि समाज देखैए।
जेहने गति-विधि समाजक
तेहने शीलो-शूल बनैए।
मन मन्दिर बैस पुजारी
पूजा यज्ञक पूर्ति करैए।



कथाक सन्तैर

भोरक सपना

तीन बजे भोर, दिनक पहिल-पहर, रातिक अन्तिम-पहरक नीनमे रतन लाल सपना देखए लगल। सपनाक अन्त होइत-होइत नीन टुटि गेलइ। नीनो एहेन टुटान टुटलै जे दोहरा कऽ फेर एलै नहि। ओना, रतन लाल सुरुज उगैत ओछाइनसँ उठैत अछि, मुदा आइ पहिनहि छोड़ि देलक।

जखन रतन लाल सपना देखलक तखनसँ वएह मनमे उठि-उठि घुरियाइ छइ। ओना भोरुए-पहर रतन लाल दादीकेँ कहलक-

“दादी, सपना देखलौं।”

मालक थैर बनबैत सुधनी काकी पुछलखिन-

“बौआ, सपना रातिमे देखलह की भोरमे?”

रतन लाल बाजल-

“तीन बजे भोरमे।”

सुधनी दादी रतन लालक प्रश्नकेँ बिनु विचारने बजली-

“रातिक सपना फुसि होइ छइ।”

कहि दादी अपन काजमे लगि गेली। दादीक उत्तरसँ रतन लालक मन जेते मानक चाही से नइ मानलक, तँए प्रश्न मनमे घुरियाइते रहइ। घुरियाइत मनमे रतन लालकेँ कखनो खुशियो होइ आ कखनो मन ठमैको जाइ। ठमकबो केना ने करिते, सम्भव-असम्भव दुनू रहइ। बेवहारिक

रूपमे असम्भव रहइ, किए तँ नौमाक विद्यार्थी रतन लाल अपन क्लासक अधोसँ बेसी विद्यार्थीसँ नीचाँ अपन सीमाकेँ बुझैत। अठमाक वार्षिक परीक्षामे पैंतीसमा स्थान भेल रहइ। पचास विद्यार्थीमे एक्कैसटा सवजेक्टली पास भेल छल, एक विषयमे उन्नैसटा फेल रहइ, दसटा दू विषयमे फेल केने छल। दू विषय तक फेल केलहा विद्यार्थी पास भेल छल। माने दू विषयमे फेल तकक विद्यार्थीकेँ पास मानल गेल जइसँ नौमासँ दसमामे गेल। अठमा, नौमा, दसमा क्लासक परीक्षा स्कूले शिक्षकक देख-रेखमे होइत, तँए केकरो फेल नहि कएल जाइत। एगारहमाक परीक्षा सरकारी देख-रेखमे हएत, माने बोर्ड परीक्षा।

ओना रतन लाल पहिनहिसँ बुझैत, माने परीक्षा दइसँ पहिने, जे गणितमे फेल करबे करब। मुदा सोल्होअना फेल होइक निआशा मनमे नइ रहइ। तेकर कारण रहै जे तीनू क्लास–माने अठमा, नौमा आ दसमामे विद्यार्थीकेँ आगू बढ़ैसँ नहि रोकल जाइ छइ। तैसंग ईहो रहै जे जहू विषयमे विद्यार्थी फेल रहल, तेकरो पासे मानल जाइत अछि। तँए विद्यार्थीक बीच प्रतियोगिता नइ रहै, सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। एकसँ लऽ कऽ पाँच तकक विद्यार्थी जे छल ओइमे कट्टम-कट होइते छल। पोजीशनक फेरा-फेरी होइते छल। माने ई जे अठमामे जेना पोजीशन बनल ओ नौमामे उनैट-पुनैट गेल। जे प्रथम छल ओ तेसरपर चलि गेल आ जे दोसर छल ओ प्रथमपर चलि आएल। जे तेसरपर छल ओ पाँचमपर चलि गेल आ पाँचम तेसरपर चलि आएल। सवजेक्टली पास केनिहारोमे बढ़ोत्तरी भेल। अठमामे पनरहटा सवजेक्टली पास केने छल, जे नौमामे आबि एक्कैसटा भऽ गेल। तैसंग ईहो भेल जे तीन विषयमे जे फेल–अठमासँ नौमा जाइमे–केने छल ओहो आगू बढ़ि दू विषयपर आबि गेल। मोटा-मोटी अठमासँ नीक रिजल्ट नौमामे भेल।

एक लग्गी सूर्ज ऊपर उठि चुकल छला। जखनसँ रतन लालक

नीन टुटल तखनेसँ भोरका सपना मनमे उड़ी-बीड़ी लगा देने छेलइ। दादीक उत्तरसँ जे संतोष हेबा चाही से रतन लालकेँ नहि भेल छल। अनकासँ पुछबो नीक नहि बुझैत, घरक बात छी। मन गवाही दइये दइ जे कियो सपनामे राजो-रानी बनब देखैए आ कियो भगतो-भिखारी, मुदा होइ की छइ। अखन स्कूलमे अधपक्क आम जकाँ ने छी जे ने पकले खाइ-जोकर छी आ ने काँचे। ने सवजेक्टली पासे केने छी आ ने सवजेक्टली फेले केने छी, तँए छाँटी-छुँटी विद्यार्थीक कतारमे तँ छीहे। मुदा सपना तँ से नइ अछि। सपना अछि जे छाँट लगल चाउर सन छाँटल विद्यार्थीक रिजल्ट जकाँ अपनो रिजल्ट हएत।

दरबज्जाक आगूमे कनैल फूलक गाछतर विधुआएल मने रतन लाल बाबाक प्रतीक्षामे बैस रस्ता दिस देखैत जे कखन बाबा औता, जे पुछबैन। ओना, शुभकान्त बाबा पतरा-पोथी नइ गुनै छैथ मुदा साँझू-पहरमे रामायणिक पाठ तँ करबे करै छैथ।

दस लग्गा आगूए बाबाकेँ अबैत देखि रतन लालक विधुआएल मन विहुँसल। विहुँसैक कारण भेलै जे नीक-सँ-नीको आ अधला-सँ-अधलो सपनाक बात बुझबे करब...। बाबाकेँ लगमे अबिते रतन लाल बाजल-

“बाबा, अहींक बाटा-बाटीमे घन्टा भरिसँ बैसल छी।”

रतन लालक चेहरापर नजैर दऽ, चट-दे फेरैत नजरिये शुभकान्त बाबा बजला-

“किए हमरा दुआरे बैसल छह। तोरा ते बुझले छह जे लग्गी भरि सुर्ज जखन माथपर चढ़ै छैथ तखन अपन दुनियाँ देखि -सुनि घरपर अबै छी।”

रतन लाल-

“भोरमे सपना देखलौं, तखैनसँ नीनो टुटले अछि आ मनमे जेना उड़ी-बीड़ी सेहो लागल अछि।”

रतन लालक बात सुनि शुभकान्त बाबा प्रश्नक सम्बन्धमे हँ हूँ किछु ने बजला। पाशा पलैट बजला-

"अही-ले एते वियाकुल छह!"

रतन लाल चुपे रहल। मुस्की दैत बाबा फेर बजला-

"अच्छा, पहिने चाह पीयाबह। ताबे हाथ-पएर धोइ कऽ पानि-पान सेहो केने अबै छी।"

अपन व्याकुलताक मेटाइक बात सुनि रतन लालक मन सेहो व्यग्र भेल। व्यग्र ई जे बाबा थाकल आएल छैथ तँए पहिने हुनके चाह पीआएब नीक हएत...।

चाहक ओरियानमे रतन लाल आँगन गेल आ हाथ-पएर धोइले शुभकान्त बाबा कलपर गेला।

काजक पानि दुनूक देहपर सवार भऽ सवारी कसने। रतन लालक मन टँगा गेल जे जँ एको रत्ती चाह दब हएत तँ ओते रत्ती बाबोक मन दब हेतैन। जेते मन दब हेतैन तेते विचारो दब हेतैन। जेते विचार दब हेतैन तेते प्रश्नक उत्तरो दब हएत। तँए जेते नीक चाह बनत तेते नीक फलो भेटत...।

दोसर दिस शुभकान्तो बाबाक मन घुमए लगलैन जे जँ बुढ़-पुरान रहैत तँ फुसियाइयो दैतिऐ मुदा बाल-बोधकेँ फुसियाएब विचारक हत्या करब हएत! सभसँ पहिने जे बच्चा 'अ' सीखलक वएह 'अ' ने ओकर जिनगीक आखर बनि अन्तो-अन्त मनमे गड़ले रहै छइ।

जहाँ शुभकान्त बाबा दरबज्जापर पहुँचला कि रतनलालो चाह नेने पहुँच गेल। चाह देखिते बाबा पुछलखिन-

"की सपना देखलह? सपना छिऐ तोहूमे रौतुका मोसीमक, तँए झूठ-फूस नइ बजिहह!"

बाल-बोध रतन लाल, तँए झूठ-फूससँ भेँट-घाँट नहि, जुआन-जहानकेँ ने एहेन अभ्यास भऽ जाइ छै जे अपनो ने बुझि पबैए जे झूठ बजै छी की सत... । रतन लाल बाजल- "बाबा जड़िए-सँ कहै छी।"

'जड़ि' सुनिते बाबाकेँ राधाक नख-सीखक वर्णन मोन पड़ि गेलैन। मुस्कियाइत बजला- "रातिमे देखलह आकि भोरहरबामे?"

रतन लाल बाजल- "ओछाइनपर सँ उठलौं तँ तीन बाजि कऽ तीन मिनट भेल छल।"

'तीन बाजि कऽ तीन मिनट' राति भेल आकि दिन, से शुभकान्त बाबाक मनमे फरिछेबे ने करैन, रातिक अन्तिम-पहर तीन बाजब भेल आकि दिनक पहिल-पहर भेल? राति मानल जाए की दिन? ओना, तीन बाजि कऽ तीनियेँ मिनट भेल छल। सवा तीन, साढ़े तीन तक तँ तीनेक नाँगैर भेल! ..अपनाकेँ ओझराइत देखि बाबा पुछलखिन- "की सभ देखलह सपनामे?"

रतन लाल- "देखलौं जे वार्षिक परीक्षामे हमर रिजल्ट सभसँ नीक भेल।"

बाह-बाही दैत बाबा बजला- "भोरका सपना छी, तँए नीक फल हेबे करतह। बुढ़-पुरानक सपना रहैत तँ काल्पनिको कहल जा सकै छल। तँए आइए-सँ जी-जाँति पढ़ैमे लगि जाह। सभ साकार हेतह।"

रतन लाल- "जी-जाँति की भेल बाबा?"

शुभकान्त बाबा अपन दुनू आँखि रतन लालक दुनू आँखिमे गाड़ैत बजला- "मनकेँ गाड़ि कऽ।"



शब्द संख्या : 1013, तिथि : 1 दिसम्बर 2016

बालमण्डली

दिनक बेर टगिते नवटोलीक पाँचो बच्चा, तीन लड़की आ दू लड़का, जे पाँच-सँ-सात बर्खक अछि, ओही मुइलहा बान्हपर आबि खेलैत अछि जे कहियो गामक शीर्ष छल। ओना, बेर टगब बारहो मासक अपन-अपन घड़ीक समयक हिसाबसँ अछि, मुदा बाल-बोध तँ वएह ने बुझत जे आब ऑगनसँ निकलै-जोकर समय भऽ गेल, माने समयमे मीठपन आबि रहल अछि।

पाँचो बच्चा, ओहिना आँगनसँ निकैल अपनामे गप-सप्प करैत खेलैले विदा होएत, माने टोलसँ हटि, खुलल आसमानक निच्चाँमे अपन खेलैक जगह बनौने अछि। जहिना पजेबा बनौनिहार पजेबा पाथि पसारि-पसारि सुखैले रखैत तहिना जिनगीक अपन अरमान पूरा करैक दुनियाँ ओहो बालमण्डल बुझैत। पाँचो बच्चाक मनक दल बालमण्डल भेल।

ओना मण्डलियो मण्डले छी। भूमण्डलो छी प्रमण्डलो छी, अनुमण्डलो छी, वायुमण्डलो छी आ बालमण्डलो तँ छीहे। मुदा से नहि, भूमण्डलक सबा लग्गी नमतियो आ सबा लग्गी चौड़ाइयो पुरना सड़कक एक अंश भेल। ओना ऐठाम दुनू बात उठि सकैए जे जखन सबा ल ग्गी नमतियो आ सबा लग्गी चौड़ाइयो अछि तखन दुनू दुनू भेल आकि एकटा नमती भेल आ दोसर चौड़ी? मुदा ऐठाम से बात नइ अछि, पुरना सड़कक जे नमती आ चौड़ी अछि ओकरे नमती आ चौड़ीक मानि अछि।

पौने दू धुरसँ कनी कम्मे जगह माने डेढ़ धुरसँ बेसी आ पौने दू धुरसँ तीन कनमा कम। जैपर कठही गाड़ी चलल सड़क जकाँ ठेहुन भरि गरदा-बौल नहि, मरने सड़क बनि गेल, तँए आवा-जाही कम भेने गरदो-बौल कम। ओना पहिने माने पूर्वमे ईहो सड़क सपना देखै छल जे देशेक सड़क हमहूँ छी, हमरो दिन कहियो-ने-कहियो फिरबे करत। जहिया दिन फिरत तहिया हमहूँ चमकबे करब। हमरो ऊपर एक दिन ईंटा चढ़त, हमहूँ खरंजासँ आभूषित हएब, सीमटी-बौल आ गिट्टी पेब पक्की सड़कक रूपमे सेवाक अवसर हमरो भेटत। भाय किछु छी तँ सड़क छी किने, सड़कक दूभियो एहेन अँखिगर-कन्हगर होइए जे अपना ऊपर चलैत बटोहीकेँ परखबो तँ करिते अछि जे कोन बटोही सासुर जा रहल अछि आ कोन बटोही परदेश जा रहल अछि। तहिना कोन बटोहिनी सासुरसँ नैहर हलसैत-फुलसैत जा रहली अछि आ कोन रूसि कऽ पड़ाएल जा रहली अछि।

नवटोलीक ओ सड़क ओही दिनसँ मरनासन भेल जइ दिन गामक बीचो-बीच बड़का सड़क–एन.एच.–बनि गेल। ओना गाम-घरक बनाबटोमे अन्तर एबे कएल अछि। मोटा-मोटी यएह जे गामक ओभरवाइलिंग भऽ गेल। ऊँचगर -चौड़गर सड़क बनने पड़ोसियो अनगौंआँ भऽ गेल।

अपन जगह पाँचो बच्चाकेँ ठेकनाएल रहबे करै, पाँचो अपन-अपन जगह पकैड़ अँगना-घर बनबए लगल। हाथेक बाढ़ैनसँ गरदा बहारि-बहारि अँगनाक सीमा बनौलक। पाँचो अपना काजमे एतेक व्यस्त भऽ गेल जे केकरो-सँ-केकरो गप-सप्प करैक पलखैत नहि। सभ मगन, सभ व्यस्त। जहिना मातृभूमि-प्रेमी मातृतुल्य बुझि मातृभूमिसँ प्रेम करैत तँ दोसर नारीक रूप देखैत, तहिना मने-मन ईहो पाँचो विचार करैत जे पाँचो घरवासी गामेक भेलौं तँए रहैक घर , भानस करैक घर, पढ़ै-लिखैक घर सभ किछु ने गामेमे बनबए पड़त। ई तँ नइ ने जे जेमहर पड़ोसियाक

विद्यार्थी बैस कऽ पढ़ैए तेम्हरे अपना भानसक घरक खिड़की बना देबइ जे भरि दिन चुल्हिक धुआँसँ ओकर मन कड़आएल रहतै। ..तँए देखि-सुनि कऽ ने सभटा करए पड़त। मुदा ई भेल नव गामक वासीक गप, ऐठाम तँ गृहवासू घरवासी छी। एक दिनक नहि, सभ दिनक अछि, पुश्त-दर-पुश्तक अछि।

पाँचो बच्चा पहिने अपन-अपन सीमा पड़ोसियाक बीच बनौलक। ठेकनौले ऑगन, ठेकनौले सीमा, तँए केकरो बीच आड़ि-मेड़क कहा-कही किए हएत। काजक देह चोरौल जे बेसी फोकटिया रहल ओ ने छड़ैप कऽ बेसी हँसोंथए चाहैए। मुदा ऐठाम तँ कम्मे रहने बेसी लाभक अछि। कनी घरे-दुआर ने छोट हएत, मुदा काजोक अराम तँ ओत्ते बेसी हेबे करत।

ओना पाँचो बच्चाकेँ पँच-पँचे कनमाक आँगन भेल, मुदा सबहक एकरंग रहने किए कियो बुझत जे कम अछि। कम कि बेसी तँ ओइठाम देखि पड़ैत जैठाम दू रंग रहैत , मुदा जैठाम एकरंग रहत तैठाम किए कियो अपनाकेँ बेसी बुझत आ कियो अपनाकेँ कम बुझत। धारमे हेलल सुगर जहिना कतबाहिसँ हिया बीचमे जाइते पाछू उनैट कऽ तकैए जे जे हिया चलल छेलौं, से ने तँ टेँढ़ भेल, तहिना पाँचो बच्चा सड़कपर बनौल अपन-अपन ऑगनमे ठाढ़ भऽ हिया -हिया देखए लगल जे केतौ अँगनाक छहरदेवाली वा टाटे-फड़क ने तँ टेँढ़ भेल अछि। एक-आधठाम जे घरौदा टेँढ़ो अछि, ओहूले दोसरक जरूरतो नहियेँ अछि। किएक तँ दुनियाँमे के एहेन अछि जे अपन अँगना टेँढ़ बनौत। जखने आँगन टेँढ़ हएत तखने सोझ चलनौं टेँढ़े हएत। तैसंग जखने आँगन टेँढ़ हेतै तखने अँगनाक घरो टेँढ़ हेतै आ जखने घर टेँढ़ हेतै तखने घरवासी सेहो टेँढ़ हेबे करत। जखने पड़ोसिया घरवासी टेँढ़ हएत तखने ओ बास झगड़ा-दनक अड्डा बनबे करत। मुदा से नहि, पाँचो बच्चाक मण्डलीक समझ अछि जे नवटोली कोनो आइयेक गाम नइ छी, अदौक गाम छी। सभ दिन जहिना, पीढ़ी-दर-पीढ़ी एकठाम बैस शान्तिसँ रहैत एला अछि तहिना ने बालो-मण्डली

सभ दिनसँ अबैत रहल अछि।

अँगनाक सीमानक कोणे-काणी सभ अपन-अपन देखि घर बनबए लगल। सभकेँ निरमित काजक धड़फड़ी रहबे करइ, तँए जहिना झगड़ा-दनसँ परहेज रखने अछि जे ऐसँ जिनगीक काज बाधित होइए, तहिना फालतू गप-सप करैक समयकेँ सेहो बुझैत। बुझबो केना ने करैत, दिन उगले ने घर-अँगना बना ओइमे बास करैत हँसैत जिनगी सेहो बितबैक छइ। अखन तँ बाले-बोध अछि तँए किए बिआह-दुरागमन आकि नोकरी-चाकरीक बात सोचत।

पाँचोकेँ अपन-अपन ऑगन-घर, चुल्हि-चिनवार बना, खाइत-पीबैत, रामलला करैत जिनगी जीबैक छइ। चिक्कन गरदा-माटिक घर-ऑगन, ऑगुरेसँ लिखए लगल। जेकरा जहिना होइ से तहिना अपन - अपन आँगुर चलबए लगल। केकरो दिस कियो ने तकैत। तकबो किए करत, सभकेँ ने अपन-अपन परिवारक निमरजना करैक छइ। एक सूरे सभ अपन-अपन आँगुरसँ लिखबो करै आ हल्ला होइ दुआरे मने-मन काल्हुका सबकक ओरियान सेहो करए लगल।

दिन अँचल। पाँचो एके-बेर एक दोसर दिस तकलक। अपन-अपन पाठ सभकेँ कण्ठस्थ तँए सबहक मनक रोहैन रोहनियाँ आम जकाँ सिनुराएल रहबे करइ। ओना पाँचोमे कनी थतमती सेहो आबि गेलइ। थतमती ई एलै जे पाँचोक बीच एक सबक रहने, सबहक मनेमे रहैए, मुदा सभ दिनक सबक बेरा-बेरी, सभ दिन सभसँ शुरू होइत। तँए कौल्हुका मिलानी करैत औझुका केकर पार हएत। मुदा तोहूमे बेसी देरी नहियेँ भेल, किएक तँ चक्कीक चालि सभकेँ बुझले रहै जे के केकरा पछाइत आ के केकरासँ पहिने होएत।

अपना-अपना अँगनामे पाँचो ठाढ़ भऽ गेल। एक स्वरे पाँचो बाजल- “अपना अँगनामे की सभ देखै छीही?”

प्रश्नक उत्तर दैत सभ बाजल- "सभ किछ देखै छी, किछ ने देखै छी।"

ओना, पाँचोक बीच एकरूपताक बाढ़ि सेहो रहइ। एकरूपता-बाढ़ि ई जे कियो चारि सालमे स्कूलक मुँह देखलक आ कियो पाँच सालमे, मुदा अ, आ सीखलक संगे। तँए बाढ़िक हिसाबसँ एक दोसरक पुछबैयो भेल आ सुनबैयो, तसफीया तँ पाँचो मील कऽ करत। एक दोसरकेँ पुछलक-

"अपना घरमे की सभ देखै छीही?"

दोसर उत्तर देलक- "अन-पानि, धन-धानसँ भरल देखै छी।"

खुदरा-खुदरी तँ निर्णय नइ करत। पुछै आ सुनैक अधिकार ने सभकेँ छै मुदा निर्णय तँ ओकाति देखि कऽ करए पड़ै छइ। जे पूर्वजक सृजनमे सभ किछु धरोहर अछि, तइ सृजनकर्ताकेँ हवाइ जहाज आ एटम-बम बनबैक लूरि किए ने भेलैन..! देखा-देखी दुनियाँ चलैए, राड़ी-डबहाड़ी फूल तँ अकास मार्गसँ चलिते अछि भलेँ गुलाब अड़हुल धरतीए धेने किए ने रहि जाए...।

फेर दोसर तेसरकेँ पुछलक- "अपन घरमे की-की देखै छेँ?"

तेसर जवाब देलक- "सरस्वतीक फोटो भरल देखै छी मुदा लछमीक छुतियो ने..!"

फेर तेसर-चारिमकेँ पुछलक-

"तोँ की अपना घर देखै छेँ?"

चारिम जवाब देलक- "लछमीक ढेरी देखै छी, सरस्वतीक छुतियो ने..!"

फेर चारिम पाँचमकेँ पुछलक- "अपना घर की देखै छेँ?"

पाँचम जवाब देलक- "मुहेँ-मुहेँ, काने-कान सुनै छी जे लक्ष्मी-

सरस्वतीक बीच सदिकाल खट-पट होइए, तँए दुनूसँ हटले रही।"

पाँचम पुछलक पहिलकेँ- "तूँ की देखलेँ?"

"सभ फूसि!"

दोसर मुरदा जकाँ खोंचारैत पुछलक - "से केना?"

प्रश्न सुनि पहिल आगू-पाछू ताकए लगल जे बजैकाल तँ बजा गेल जे 'सभ फूसि', मुदा जेते सत अछि तइसँ की कम फूसि अछि? केते सत-फूसिक नाँगैर पकैड़ टहलब, तइसँ नीक ने जे खेले उसारि दिऐ। बाजल-

"औझुका उसरपन आ कौल्हुका समर्पण ई जे अपना घर की खगता छौ?"

पहिलक समर्पणक संग चारू बाजल- "अपना घर की खगता छौ?"

पहिल बाजल- "घर-अँगना उसारै जाइ-जो।"

हाँइ-हाँइ कऽ पाँचो अपन घर-अँगना ओहिना बना देलक जेना एलापर देखने छल। पाँचो टोल दिस विदा भेल। ओना छी पाँचो एके टोलक, मुदा पाँचोक घर फुट-फुट रहने आगू-पाछू भइये गेल अछि।

आँगनक मुँह लग ठाढ़ होइत पहिल बाजल- "खुरपी लेमे की बेंट, हमरा तोरा काल्हिये भेँट।"

पहिलक जवाब ईहो चारू ओहिना देलक- "खुरपी लेमेँ की बेंट, हमरा तोरा काल्हिये भेँट।"



शब्द संख्या : 1288, तिथि : 6 दिसम्बर 2016

धोरवा केतए भेल

तिला-सकराँतिक दिन, बेरुका समय। दहाएल गाम जेहने नवानक नवाबी आ तेहने तिला-सकराँतिक तिल-तिल आगू घुसकैत चलब, कैँ झाड़ि देइते छइ। तेहने तिला-सकराँतिक बेरुका समय। आत्मानन्द असगरे अपना कोठरीमे बैसल अपन जिनगीकेँ निहारिये रहल छल कि मुहसँ फुटलै-

"धोरवा केतए भेल?"

छह मास पूर्व आत्मानन्द दसम क्लाससँ एगारहममे आएल छल। आन-आन विषयक संग अर्थशास्त्रक विद्यार्थी सेहो आत्मानन्द। एगारहम क्लासमे प्रवेश करिते अपन विषयमे घुसिया लगल। होइते अहिना छै जे जे जइ विषयक अध्ययन करैत ओ ओही विषयक ने रसो चुसैत अछि, सएह आत्मानन्दकेँ सेहो भेल। ओना पैछला सालक बाढ़ि, आठ बीघाबला किसानक बेटा–आत्मानन्द–क मनमे सेहो बाढ़ि अनलक। अपन ऐगला जिनगीक सम्बन्धमे विचार करए लगल जे आगूक जिनगी केहेन बनाएब। तेकर कारण भेल जे एकाएक आत्मानन्दक मनमे उपकल जे परिवारमे बिआह करै जोगकर बहिन अछि, एकटा घरो लटकले अछि जे करवनो रवसि सकैए। जेकर रवगता बहिनक बिआहसँ पहिनहि हएत। तैसंग अपनो सोल्हैनी भार पितेकेँ देने छिऐन। दिन-राति पढ़ितो नहियेँ छी। जँ अहीमे सँ किछु समय निकालि अपन भार उठबैमे लगा लेब तँ एते बचत पिताकेँ हेबे करतैन। ..अपनो भार परिवारमे उठा लेब, तैयो तँ

कम नइ भेल। अपना दिस आत्मानन्दकेँ देखिते नन्दनवनमे फूल-फुलाएल। फुलाएल ई जे जँ वुद्धदेव बिनु दोसरक मदैत नेने भगवान बनि गेला, एकलब्य धनुर्धर बनि गेला तखन अपने...। मनमे तूफान जकाँ आत्मानन्दकेँ उठि गेल। उठि गेल ई जे जइ परिवारमे बेटीक बिआह आ रहैक घर खसल रहत, ओइ परिवार-ले स्कूल-कौलेजक पढ़ाइ केते महत् रखत, एहेन स्थितिमे पिताकेँ ईहो दोख नइ देल जा सकै छैन जे ओ केतौ अपन कर्तव्यमे चुकला। ओ तँ अपन शक्ति भरि शक्ति लगा खेती करबे केलैन आ बाढ़िमे दहा गेल। परिवारक आमद दहा गेल, मुदा खरचा तँ बढ़बे करत तहूमे दाही-दुरकाल भेने आरो वस्तुक अभाव हएत जइसँ महगी सेहो बढ़बे करत।

ओना, आत्मानन्दकेँ आन विषयक अपेक्षा अर्थशास्त्रसँ बेसी दिलचस्पी रहै मुदा ओहू दिलचस्पीमे देशक कृषि बेवस्थासँ बेसी रहइ।

आत्मानन्द जखन अपन पैत्रिक सम्पैत–आठ बीघा जमीन–देखलक तखन ओकरा अर्थशास्त्री दृष्टिसँ आँकए लगल। आँकए ई लगल जे गामक जे पुरान ढर्ड़ाक खेतीक अछि ओइमे जाबे पाछूसँ धक्का आ आगूसँ सिकैड़ पकैड़ नहि खींचब ताबे परिवार आ कि गाम खच्चासँ निकैल नहि सकैए। एक दिस उपज ले रसायनिक खादक परहेज, दोसर दिस मवेशी नहि।

अपनाकेँ सम्हार करैत आत्मानन्द स्वअर्जित सम्पैतक उपारजन करब नीक बुझि पत्र-पत्रिका, रेडियो आ किसान गोष्ठी इत्यादिक बीच अपन सम्बन्ध बढ़बए लगल। अन्तो-अन्त ई निर्णय केलक जे सालमे अपन-देही जेते खर्च अछि, ओते सालमे उपारजन करैक अछि। सम्पतैक रूपमे खेतक संग अपन दूटा हाथ -दूटा पएर अछिए।

ओना सालो भरिक खेती अनेको रंगक अछि मुदा ऐठाम दुइए रंगक चर्च करब। साल भरिक अन्नक फसल अछि धान-गहुम आ खेरही।

जइमे एकबेर रोपैन वा बाउग होइए, दोसर बेर कमठौन वा पटौनी आ तेसर बेर कटनी-दौनी, ऐ चक्रमे श्रमशक्ति माने काजक दिन कमि जाइए तहूमे विद्यार्थी जँ घन्टा-दू-घन्टा काटि अपन समय लगौत तइले तँ प्रतिदिन काज चाही। तइले दोसर रंगक खेती जे अछि- बाड़ी, फुलवारी, फलवारी, पनवारी- सएह उपयुक्त अछि। संगे श्रमक संग उपारजनो बेसी अछि।

आत्मानन्दक मन उमकल। उमैकते नजैर आगू बढ़ल। आगू बढ़िते देखलक जे हमरोसँ कम उमेरक लोक होटलोमे नोकरी करैए आ गामो-घरमे गाए-महींसक चरवाहि करैए। किए करैए? जँए ओकर पेट जरै छै तँए ने करैए। आदमी रहितो हम ओकरासँ सुभ्यस्त छी। सुभ्यस्त ई जे ओकरा खेत-पथार नइ छै, हमरा अछि।

ओना उपारजनक दू रास्ता अछि, एक अछि अपन सम्पैतकेँ तेज गतिये संचालित करब आ दोसर अछि अपनासँ पाछूक विद्यार्थीकेँ ट्यूशन पढ़ाएब। मुदा उपारजन लेल अपन स्वतंत्र काज आ अनकर मातहती काज–माने दोसर हाथक काजमे सेहो अकास-पतालक दूरी बनले अछि। माने ई जे अपन काज अपना सुविधानुसार, समयकेँ देखैत कऽ सकै छी मुदा अनकर हाथक से नइ होइए। जखन हमरा समय भेटत आ करए चाहब तखन जँ काज करौनिहार काज नइ दिअए, आ जखन ओ काज देत तखन जँ अपना समय नइ बँचए..! आत्मानन्दक मन थकथकाएल। बेसी काल थकथकाएल रहल नहि।

थकमकी हटिते आत्मानन्द विचार केलक- जाबे अपनापर खर्च आ अपना हाथक आमदकेँ एक सीमापर आनि नहि आगू बढ़ब, ताबे जिनगी बेठेकान बनल रहत। बेठेकान जिनगी तँ सदिकाल भयावह बनले रहैए, तँए जाबे ओकरा ठेकानपर आनि ठेकना नहि चलब ताबे जिनगी डोल-पात करिते रहत।

एगारहम क्लासक विद्यार्थी आत्मानन्द, किताबो-काँपी आ फीसो तँ हाइये स्कूलक ने भेल। तँए हजार रुपैआ महिनाक हिसाबसँ बारह हजारक सालक जिनगी बना आगू विचार करए लगल। आगू जहाँ तकलक कि भक-दे अपन किसानी परिवार आँखिक सोझमे पड़लै। अपन खेत-पथार अछिए। बारहे हजारक तँ सालक उपैत करब भेल। तरकारी खेतीक चक्र–कृषि महाविद्यालय–पूसाक पत्रिकामे निकलल छेलै जे आत्मानन्द पढ़ि चुकल छल।

ओना तरकारी खेती लेल खेत सेहो सभ रंग अछि। मौसमक अनुकूल बरसाती खेती नीचरस खेतमे नहि भऽ सकैए, तहिना गरमीक खेती ऊँचरस खेतमे महग अछि। तैसंग ईहो तँ समस्या ऐछे जे सभकेँ सभ रंग खेतो नहि छइ।

आँखि उठा हिया कऽ आत्मानन्द आगू तकलक तँ बुझि पड़लै अधिक नीचरस खेत–जइमे एकबेर खेती भऽ सकैए–ओहन खेत बेसी अछि आ जइमे दू बेर -तीन बेर खेती हएत ओ कम अछि। मुदा नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तरकारी खेती करैक विचार मनमे अबिते आत्मानन्द पितासँ विचार लेब आवश्यक बुझलक। पिताक आगू अपन प्रस्ताव रखैत बाजल-

“बाबू, परिवार टुटि रहल अछि तँए जँ नइ बँचाएब तँ टुटि कऽ तेते निच्चाँ चलि जाएत जे समयक गतिसँ पाछू पड़ि जाएब।”

बेटाक विचार सुनि मोहनानन्दक मन मोहित भऽ गेलैन। डुबैतकेँ तिनकाक सहारा। ऐठाम तँ ओहन पुत्र बाजि रहल अछि, जे अपनेटा नइ खनदानक खाम्ह टेकैक भार उठबए चाहैए। अखन चौदह बर्खक ढेरबा अछि मुदा साल-दू-सालक पछाइत वएह ने जवान हएत...।

मोहनानन्द बजला- “बौआ, परिवारक जँ सभ अपन-अपन भार

उठा लिअए तँ परिवारमे समस्ये की रहि जाएत। किसान परिवार छी, रौदी-दाही हेबे करत। रौदिये-दाही किए, रौदी-दाही तँ फसलेटा नोकसान करत, मुदा भूमकम आकि धारक कटाउ तँ खेतेकेँ चौपट कऽ देत, केतौ बाउलसँ भरि बलुआह बना देत आ केतौ माटि काटि पानिमे मिला देत।"

पिताक विचार सुनि आत्मानन्द निश्चय केलक जे सभ दिन दू घन्टा समय खेतीमे लगाएब।

दुर्गापूजाक पछाइत, तीन कट्ठा चौमास आत्मानन्दक जोत-कोर करै-जोकर भऽ गेल। ओना जोड़ा बरदबला परिवार आत्मानन्दक, मुदा बाढ़िक चपेटमे दुनू बरद बिका गेलइ। कोदारिसँ खेत तामि कऽ आत्मानन्द पनरह सए कोबी-गाछ रोपने छल। खेती नीक उमझल रहइ। अन्तिम समय जखन यूरिया खाद दइक रहै तखन समयक ठेकान नइ रहलै। रौतुका ओस नीक जकाँ सुखल नइ छेलइ। नमी खाद पकैड़ लेलक, जे रौद पौने जड़ि गेल, जइसँ कोबीक गाछ तेना प्रभावित भेल जे फलक आसे समाप्त भऽ गेलइ।

तिला सकराँतिक दिन, आत्मानन्दक मनमे उठलै- जँ खेती सुतरल रहैत तँ आइ आमदनीक दिन रहैत, मुदा..! अपन गल्ती दिस नजैर दौड़ौलक। मुहसँ निककलै-

"धोखा केतए भेल?"



शब्द संख्या : 1053, तिथि : 09 दिसम्बर 2016

माघक चाह

जहिना समाजो आ परिवारोक पहिया एक्के गतिये नइ चलैए तहिना बलदेव कक्काक परिवारोक छैन। मुदा आन परिवारसँ भिन्नता बलदेव कक्काक परिवारमे ई छैन जे सात गोरेक परिवारमे सबहक अपन-अपन क्रिया-प्रक्रिया चाहे जे हौउ मुदा बलदेव कक्काक प्रति जे क्रिया-प्रक्रिया सबहक छैन ओ अलग छैन्हे।

अलग ई भेल जे परिवारक जेते गोरे छैथ, माने बलदेव काकासँ जुड़ल जिनकर जे सम्बन्धित जिनगी छैन, ओ कक्काक अनुकूल छैन। हलाँकि बलदेव काका अपन जिनगीक चौदह-पनरहअना काज-भार अपने हाथमे रखने छैथ तइसँ परिवारक दोसर सदस्यक बीचक काजो तेतबे कम अछि जे ओइ काजकेँ परिवारजन प्रमुख काज नहियेँ बुझैत, मुदा जएह बुझैत तइमे ओते सतरकी तँ रखबे करैत जे बलदेव काका हूसल काज देखि बिगड़ैथ नहि। आ जँ परिवारजन एते मेहरमानी परिवारक अभिभावककेँ परिवारमे करैन तँ परिवारमे क्रोधक जगह केतए रहत।

अपन नियमानुकूल जिनगी बलदेव काका ओहिना नइ बनौने छैथ, जिनगीकेँ पकैड़ जमीनमे रोपिते जे गाछ जनमलैन ओइमे शिशुपन-सँ-शीशपन धरिक सेवा ओइ रूपेँ केलैन जे समयानुकूल छेलैन, जइसँ समय कहियो आगूमे रोड़ा नइ अँटकौलकैन। रोड़ा तँ ओतए बेसी अँटकैए जेतए जेते बेसी प्रतिकूल गति-विधि रहल। मुदा ऐठाम एकटा

भ्रम उठि सकैए, समयानुकूल सभ परिवार वा सभ समाजक गति विधि जहिना सभ रंग अछि माने लालो अछि, उजरो अछि, हरियरो आ कारियो अछि तहिना मनुक्खोक जिनगीमे तँ अछिए। ओही बीचमे ने लोक अपन हाथ-पएरक हिसाबसँ अपन जगह खतिया लइए जे हमरा बुते केते कएल हेतइ, आ परिवार वा समाजकेँ केते खगता छइ।

मध-मासक समय, सात बजे भिनसुरका समय। मध-मास भेल दू मौसमक बीचक जे चढ़ा-उतरीक समय होइए। दिन-रातिक रूपमे मस्तियो अबए लगैत आ मादकता सेहो बढ़बे करैत अछि। अपन नियमानुकूल जिनगी बना चललासँ एते तँ बलदेव काकाकेँ प्राप्त भइये गेल छैन, जे ने परिवारकेँ भार बुझै छैथ आ ने परिवार भार बुझैत छैन।

अपन जिनगीकेँ समयानुरूप केना चलौल जाए, माने बेवहारिक धरातलपर ठाढ़ होइत बढ़ैत भविस दिस केना बढ़ौल जाए ओ तँ निर्भर अछि विचारक कबजियाएल धारमे।

खाएर जे.., सात बजे भिनसुरका समय बलदेव कक्काक छैन जे ओ अपन भोजनोपासनाक उपायमे लगि जाइ छैथ तँए ओ समय किसानीक छिऐन। चाह पीब पान खा हँसुआ-खुरपी नेने बलदेव काका कतिका–माने मध-मासक–खेतीक आँड़िपर पहुँचला। पहुँचते हियासि कऽ देखलैन तँ खुरपीक काज आगूमे धब-दे खसलैन, अपन उपकैत जिनगीमे बलदेव काका हेलए लगला। तखने चारि सालक पोताकेँ नेने पुतोहु खेतमे पहुँच गेली।

हिचुकैत-कनैत बुधबाकेँ देखि काका मोन पाड़ए लगला जे एकरा कनैमे हमरो दोख तँ ने केतौ अछि। भेल ई जखन बलदेव काका चाह पीबै छैथ तखन पोतोकेँ, आइ दू सालसँ एक-घोंट, आध-घोंट चटबैत आबि रहल छैथ। आइ बुधबा चारि सालक भऽ गेल, मुदा आदतो तँ आदत छी, जेहेन आदत पकैड़ लेत ओ जिनगी भरि नेंगरियबैत रहत।

भलेँ अहूँ जँ अपन जिद्दपना पकैड़ ली तँ आदत बदलबो करै छइ।

जखन बलदेव काका चाह पीबै छला तखन बुधबा केम्हरो खेलैले चलि गेल छल, जे चाहक समैये बिसैर गेल। कक्को ऐ दुआरे गिलासमे चाह नइ रखलैन जे एक तँ ओहिना गिलासक तरी चाह भेल, माने गिलासक निचला, तैपर जँ दुइयो मिनट रहि जाएत तँ ओ चाह नहि , या तँ पानि भऽ जाएत वा चाहक झड़ भऽ जाएत।

तेतबे किए, जेते लग-पासक चुट्टी-माछी रहत ओहो सभ अपन जीवनदान करैले सेहो आबिए जाएत। तँए गिलासमे चाह राखबकेँ उचित नहि बुझि बलदेव काका चाह पीब गिलास धो रखि देलखिन। आ हँसुआ-खुरपी नेने खेत पहुँचला। तैबीच बुधना खेला कऽ आएल तँ ने बाबाकेँ देखलक आ ने गिलासमे चाह, ओही चाह-ले कानए लगल...।

बुधबाकेँ कनैत देखि बुधबाक माए–बलदेव कक्काक पुतोहु, जे भानस करै छेली–मने-मन बलदेव काकाकेँ दोखी बुझि बुधबाकेँ नेने खेत पहुँच गेली। ओना, चालि-ढालिसँ सरोवरी बीस पीपड़ी छैथे, मुदा जहिना सभ परिवारमे सभ रंगक लोक रहैए तहिना बलदेवो कक्काक परिवारमे छैन्हे।

बलदेव काका लग कनैत बेटाकेँ रखि सरोवरी आँगन आबि भात चढ़ल बरतनकेँ दाबिसँ दू बेर चला दू चोट कानमे लगा कानक ऊपरमे रखि, आँच घुसका चुल्हि लग बैसली। बैसते मनमे उपकलैन बेटाक कानब।

..सरोवरी एक तरफा निर्णय कऽ लेली जे सोलह-सँ-बत्तीसअना दोखी बाबू छैथ। जँ एहेन आदत नइ लगौने रहितथिन तँ अखन बुधबा कनैत किए..!

कनैत बुधबाकेँ देखि बलदेव काका खुरपी रखि हाथमे लगल ओस आ ओसाएल माटिकेँ दुनू हाथे मीड़ साफ केलैन। चिकनाएल दुनू हाथे

बुधबाकेँ पकैड़ बलदेव काका वौंसैत बजला -

"ओइ राति, ओइ दिनक राति की भेल से बुझल छौ?"

एक तँ बलदेव कक्काक बात बुधबाकेँ गीत जकाँ कानमे नीक लगल, तैपर एकटा प्रश्नो छल। चाहक सुरतापर सँ बुधबाक मन बहैट गेल, जइसँ सोल्हैनी कानब तँ नइ बन्न भेल मुदा कनी कम तँ जरूर भेबे कएल।

कम होइत पोताक कानब देखि बलदेव काका दोहरा कऽ बजला-

"बड़ीटा बड़ीटा राति ओइ दिन रहइ।"

ओना, बलदेव काका पोताकेँ पोल्हबैक भूमिकामे रहैथ तँए झूठ-सतक सीमा सरपट रहैन। मन गवाही दैन जे कनैत बच्चाकेँ चुप करै तक पोल्हबैक स्थिति भेल, तँए अखन चुप करब अछि। तोरिया गाए-महींस केँ दुहैकाल जहिना मलकार हरियर -हरियर घास खुआ दुहऽ चाहैए, तहिना बलदेवो काका परियास करए लगला।

ओना, बेसीकाल पोता लगमे रहै छैन, तँए बच्चाक तरी-घटी सेहो सभटा बुझबे करै छैथ।

चुप होइत बुधबा बाजल-

"ओइ दिनक बड़का रातिमे की भेल?"

गमछाक खूटमे-सँ पानो आ पानक समानो–माने कथ, सुपारी, जर्दा–निकालि बलदेव काका पान लगबैक ओरियान करैत बजला-

"पहिने पान खा ले तखन कहबौ। गप की केतौ पड़ा जाएत।"

बुधबो मानि गेल जे एक नम्बर काज भेल पान खाएब, पछाइत दोसर हएत।

ओना, मने-मन बलदेव काका ईहो अँटकार लगबैत रहैथ जे कनैत-खिजैत बच्चाकेँ जाबे किछु लहटगर वौस आगू नइ औत ताबे

कानबसँ समगम नइ हएत। तँए, ओहन वौसक खोज सेहो करए लगला आ पान लगाएबकेँ सेहो ढिलियबए लगला जे कनी समय आरो खपि जाएत।

बलदेव काका पहिने बुधबाकेँ पान देलखिन पछाइत अपने खेलैन। पान खा पानक समचाकेँ गमछाक खूटमे बान्हि आँड़िपर रखिते रहैथ कि बुधबा पुछि देलकैन-

"ओइ राति, ओइ दिनक राति की भेल?"

प्रश्नकेँ भरियबैत बलदेव काका बजला-

"कइ राति, कइ दिनक राति?"

बाबाक बात सुनि बुधबा भकचका गेल। भकचकाइक कारण भेलै जे दिनक ठेकान बुझले ने रहइ।

निच्चाँ-ऊपर बुधबाकेँ देखि बलदेव काका नाकपर हाथ लैत बजला-

"हँ, हँ, मोन पड़ल..!"

'हँ-हँ मोन पड़ल' बाबाक मुहसँ खसिते बुधबा बाजल-

"हँ, हँ, ओहए..!"

बुधबाकेँ खुशी देखि बलदेव काका मने-मन विचारए लगला जे जे प्रश्न अछि ओकर उत्तर बुधबा बुझत केना, अखन ओकर बुधिक ओकाइते की छइ। चारि बर्खक बच्चाक बुधि पानि-माटिक बीचक जे रूप अछि, सएह अछि। जल-जल, पल-पल, चल-चल, थल-थल। मुदा गुण तँ दुनू विद्यमान अछिए। माने जिवनी -शक्ति जहिना माटिकेँ छै तहिना पानियोँकेँ छै, तखन तँ भेल जे सक्कतपन नइ आएल अछि।

सक्कतपन लग अबिते बलदेव कक्काक मन अपन घटित घटनापर पहुँच गेलैन। घटित् घटना ई जे गरमी मास रहौ कि जाड़क, कक्काक

अपन रूटिंग छैन जे हिसाबसँ चलै छैथ , जहिना घर-बाहरक काज तहिना मन-बुधिक। माघक ओ राति जे सालक सभसँ नमहर राति छल। सभसँ नमहर ओ भेल जे क्षण-पलक हिसाबसँ एकेटा होइए। शीतलहरी मास दिन पहिनेसँ लाधल। झीसी-बरखा जकाँ पानि बनि पाला टप-टप खसैत। गाछपर सँ खसैत बून आवाजो करैत। राति नमहर भेने दिनो आ दिनक सीमो आगू दिस घुसकिये गेल छल, जइसँ काजक घड़ी बढ़ि गेल छेलैन। दू बजेसँ छह बजे भोरक समय भेल। घन्टा भरिपर चाहो -पान आ पाइनो पीबते छैथ जइसँ देहक शक्तिक संग मनक शक्ति सेहो क्रियाशील रहिते छैन। दू बजे चाह पीब , बॉकी चाह थर्मशमे रखि , जे गरमी मासमे अपन रूप अधिक काल तक बरकरार रखिते अछि। मुदा तीन बजे भोरक थर्मशक चाहक रूप जे जेठ मासक रहैए ओ ठंढसँ जकड़ल माघमे थोड़े रहत। तीन बजे भोरक चाह, मन गवाही देलकैन जे ऐ चाहकेँ तखने चाहक रूपमे पीब सकै छी, जखन एकरो चाह पुराएब। माने भेल जहिना ठंढपनक आक्रमण अछि तहिना ओकरा गर्मपनक सहारा देल जाए तँ ओ जरूर अपन रूप धेने रहत। ..एका-एक बलदेव काकाकेँ किछु मनमे जहिना आएल होनि तहिना छड़पैत बजला-

"की कहै छेलियौ?"

अखन तक बुधबा समगम भऽ चुकल छल। मुस्की दैत बाजल-

"अहूँ बाबा बड़ बिसराह छी।"

खुशीक मोड़पर बुधबाकेँ अबैत देखि बाबा बजला- "जखने मुँहक अदहा दाँत टुटि गेल तखने कि कोनो बात-विचार मनमे अँटकैए, लगले बिसैर जाइ छी।"

बाबाकेँ पाछू हटैत देखि बुधबा बाजल-

"खुरपी दिअ, हमहूँ कमाएब।"

अपन हाथक काज बाधित होइत देखि बलदेव काका बुधबाकेँ

कोरामे लऽ खेतक चारू आड़ि घुमौलैन। चारू आड़ि घुमौला पछाइत हँसुआ उठा आड़िपर जे नमरल घास छल तेकरा काटए लगला। आगूमे ठाढ़ बुधबा खुरपी बिसैर गेल हाथक हँसुआ छीन आड़ि काटए लगल। माने हँसुआ रगड़ए लगल।

अनुकूल समय पेब बदलेव काका अपन खुरपीक काजमे जुटि गेला। मोन पड़लैन माघक चाह।



शब्द संख्या : 1330, तिथि : 12 दिसम्बर 2016

भँसियाएल बाल-बोध

आजुक बाल-बोध माने जे निर्विकार गुणक अछि, तेकर आगूक बाट की होइ? ओना, मात्र बाल-बोधेक नहि, परिवारक अभिभावक आ समाजक संग देशक प्रश्न सेहो छी। एक-दोसरमे सभ सटलो छी आ हटलो छी, तँए दुनू दृष्टिसँ देखैक खगता तँ भइये गेल अछि।

मिथिला दर्शन, जे कहियो विश्व-दर्शनक चोटीक शिखरपर शीर्षासन छल, जइसँ लाख विषमताक बाबजूदो मिथिलावासी शान्त-चित्त आ शान्त-सोभावकेँ धारण केने आबि रहल छैथ, ओइ धरतीपर एहेन रूप किए बनि गेल अछि जे भैयारीक बीच चलैन बनि गेल- 'भाए-भैयारी महींसिक सिंग, जखने जनमल तखने भिन्न।' हँ, बात जँ भाए-बहिनक बीच रहैत तँ एक सीमा तक उचितो भेल। उचित ई भेल जे लैंगिक भेदक संग जीवन निर्वाहक स्थान सेहो बदैलते अछि। मुदा जैठाम भाए-भैयारीक बीच जँ एहेन विचार चलत तैठाम तँ किछु विचारणीय प्रश्न आगूमे एबे करत। विचारणीय ई जे जखन परिवारेमे विखण्डित विचार चलत तखन समाज आ राष्ट्र तँ दूर भेल।

जँ भाइ-भाइक बीच एहेन विचारक धार बहत तँ निसचित रूपेँ ओ सामुदायिक जिनगीकेँ प्रभावित करबे करत। जखन सहोदर भाएमे विचारक दूरी बनत, तखन परिवारजन माने दादा-दादी, माता-पितासँ आगू बढ़ि भौजाइ-भावो होइत भातीज-भतीजी दिस बढ़बे करत।

प्रश्न अछि आइ धरि जे दू या तीन या चारि या ओहूसँ बेसी

भैयारीक बीचक संयुक्त परिवार चलैत आबि रहल अछि, जइमे बेटा-बेटीक जन्म होइत अछि। दहेजक हिसाब वा पढ़ै-लिखैक हिसाब जे बेटा-सेने रहैत अछि ओ बेटी-सेने थोड़े अछि। ऐमे समाजोक दोख कम नइ कहल जा सकैए। माने ई जे आजुक परिवेशमे तीस लाख रुपैआ खर्च करि कऽ बेटीकेँ डाक्टरीक शिक्षा दियौ आ पढ़ाइक पछाइत जखन ओ बिआह-दान करै-जोकर हएत तखन तीस लाख बिआहमे खर्च करू। जँ से नइ करब तँ समुचित जोड़ा लगा समुचित जिनगी नइ बना सकै छी? भलेँ बेटा बेर सभ सूदि-मूड़ि ऊपर किए ने भऽ जाए...।

हँ! एक परिस्थितिमे लाभक भऽ सकैए जे जँ परिवारमे बेटा-बेटीक संख्या बरबैर हुअए, मुदा से तँ निसचित नइ अछि। कोनो परिवारमे बेटाक बाढ़ि बेसी अछि, तँ कोनो परिवारमे बेटीक बाढ़ि नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। वौद्धिक विकास शिक्षा आ शिक्षण संस्थासँ प्राप्त होइए, तँए मूल विषय छी।

चारि बजेक समय। पता लागल जे लाल भाय दुखित पड़ि गेला अछि, तँए भेँट करए हुनका ऐठाम गेलौं। रौद तँ मरियाएले रहै मुदा तैयो लाल भाय दलानक आगूमे मोथीक विछानपर पतरकिये चद्दैर ओढ़ि पड़ल रहैथ। लगमे जाइते पुछलयैन- “भाय, मन बेसी गड़बड़ तँ ने अछि?”

खनखनाइत लाल भाय बजला-

“ने जनम रोगी छी आ ने जनम रोग अछि, मौसमी झटका छी। कातिक-आसीन तँ ओहिना रोगाह मास छीहे।”

लाल भाइक सूर-मे-सूर मिलबैत बजलौं-

“हँ, से तँ छीहे। कियो अपन चालि छोड़लक हेन जे कातिके अपन छोड़त।”

हमर बात सुनि लाल भाय की बुझलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन जेना खनहन भेलैन तहिना बुझि पड़ल। देहक रोगकेँ पछाड़ैत लाल भाय

उठि कऽ बैसैत बजला- “नहि कोनो मारुख रोग नइ अछि, तखन तँ कनी सरदी-खाँसी भेने देह गरमाइए गेल अछि।”

हमरो हरल-ने-फुरल, लाल भायकेँ पुछि देलिऐन-

“काज करै दिस मन बढ़ैए की नहि?”

मुस्की दैत लाल भाय बजला-

“सएह ने अछि। तँए ने चद्दैर ओढ़ि मुइल-मुँह सन भेल छी। जँ से रहैत तँ की ऐ सरदी-खाँसीकेँ गुदानितिऐ। ओहुना तँ देहमे कफो ऐछे आ सुखलो खाँसी होइते अछि।”

निर्णय करैत बजलौं-

“तखन तँ भेल राजरोग?”

‘राजरोग’ सुनि लाल भाय उन्टा देलैन-

“से की?”

हमहूँ सरपट चालि धरैत बजलौं -

“राजरोग भेल जइमे खाइ-पीबैमे कोनो परहेज नहि, मुदा काजक बदला चद्दैर ओढ़ि रौद तापब।”

लाल भाइक मनमे कोन बातक कुवाथ भेलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा अपनाकेँ सम्हारैत बजला-

“अँए हौ गौरी, दुनू भैयारी जे एकठाम बैस सुख -दुखक विचार करै छी ओ काज नइ भेल?”

लाल भाइक बातसँ बुझि पड़ल जे जे सोचि जिगेसा करए आएल छेलौं से बात नइ अछि। मौस मी रोग छिऐन, मासूमे चालिसँ नीक भऽ जेतैन। तही बीच लाल भौजी दुनू बेटाकेँ अगुएने हरिहर क्षेत्रसँ आपस पहुँचली? सवारीक सुविधा आ एन.एच. बनने एते तँ सुविधा भइये गेल अछि जे जरो-जनानी आ धियो-पुताकेँ जँ देखै-सुनैक हेतइ तँ घुमि औत।

आँगनमे लाल भौजी झोरा-झँटी खोलए लगली आ छोटका बेटा–जे सात सालक अछि आ प्राइवेट स्कूलमे फाइबमे पढ़ैए–बैगमे सँ प्लास्टिकक स्टील सेट बन्दूक साइजक खेलौना नेने दरबज्जापर पहुँचल। दरबज्जापर अबिते हमरो नजैर ओकरापर पड़ल आ लालो भाइक पड़लैन। तैबीच ओ बच्चा हाँइ-हाँइ तीन-चारि बेर गोली भरि-भरि आवाज करैत लाल भायकेँ कहलकैन-

"पापा, आब निशान लगबै छी!"

अपने तँ ई सोचि अपनाकेँ पाक-साफ केलौं जे आन परिवारमे आगू भऽ कऽ किछु बाजब उचित नहि, तहूमे जखन लालो भाय छैथे आ माइयेक संग कीनबो केने हएत, संगे अनबो केलक आ सोझेमे निकालि चलाइयो रहल अछि। ओना राय-विचारक प्रश्न तँ छीहे जे बच्चाक हाथमे पाँखिबला कलम सन्देश नहि, बन्दूक सन्देश अछि, तैठाम...। तँए ऊपर-निच्चाँ देखैत विचारैत रही। बच्चापर सँ नजैर हटा लाल भायपर देलिऐन तँ बुझि पड़ल बोखार तेज भेल जा रहल छैन, किएक तँ देह-हाथ थरथराए लगल रहैन। मुदा बाजैथ किछु नहि। दुविधामे प ड़ि गेलौं। दुविधा ई जे कोन बेमारीक आक्रमण बेसी भेल जा रहल छैन से तँ अपने ने जनैत हेता, ओ तँ मुँह खोलला पछाइते ने बुझब।

तैबीच लाल भाय चद्दैर सेरिया मुँह झाँपि सिरमापर ओंघरा गेला। ओंघरेलापर मनमे रंग-बिरंगक शंका उठए लगल। सरदियो-खाँसीसँ ने दम्मा-टी-बी होइए। बेमारी की केकरोसँ पुछि कऽ अबै छै, ओ तँ तरे-तर जहिना चाउरक कोठीमे मूस पसि जाइ छै, तहिना रोगो-वियाधि पैसैए। ..फेर भेल जे भऽ सकैए जे तरेतर मुँहक बोलतिये ने अक्रान्त भऽ गेल होनि, जइसँ बकार नइ फुटैत होनि, तँए अगुरवारो पुछब अधला थोड़े हएत। बजलौं-

"भाय, बोखार तेज चढ़ि गेल?"

लाल भाय जेना अपन भविस देखि रहल छला तहिना दुनू आँखिसँ सौनक बून झहरए लगल छेलैन, मन कलैप रहल छेलैन जे समाजमे जे हवा चलि रहल अछि, ओ समाजक बाल-बोधकेँ केमहर लऽ जाएत! दहो-बहो नोर चुबबैत लाल भाय बजला-

"बौआ, भरि दिनक जेतेक समय ई बच्चा स्कूलमे दऽ रहल अछि, तइ अनुपातमे तँ हमरा संगे नइ छै, सएह ने बुझि पेब रहल छी जे एना भेने केना हएत।"

तही बीच लाल भौजी हरिहर क्षेत्रक सनेस नेने पहुँच गेली। चद्दैर ओढ़ल देखि लाल भायकेँ कहलकैन-

"रस्ताक झमारल छी हम आ मुँह-कान झाँपि सुतल छेलौं अहाँ?"

मुँहपर सँ चद्दैर हटबैत लाल भाय बिना किछु बजने देह-हाथकेँ सोझ करए लगला। उठि कऽ बैस गेला। लाल भाइक मनमे जेना अनोन-बिसनोन होइत रहैन तहिना बुझि पड़ल। संगे ईहो बुझि पड़ल जे जखन भौजीकेँ कोनो जवाब नहि भेटलैन, तखन सोझे भोज खाइले तँ नइ एलौं जे हरिहर क्षेत्रक परसादी खा चलि जाएब...।

फेर मनमे उठल- हरिहर क्षेत्र तँ ओ जगह छी जैठाम गराहक संग गजकेँ लड़ए पड़ै छइ। सबहक अपन जिनगी अछि तँए अपना-ले तँ अपने ने करब। जेते लोक आकि जीव-जन्तु अछि सभकेँ अपन-अपन दिन-दुनियाँ छै, अपन-अपन हाथ-पएर छै तखन तँ सभकेँ ने अपन-अपन जीबैक जोगार करए पड़त...।

बजलौं-

"भौजी, मेलाक हरियरी नीक रहलै किने?"

ले बलैया! मुँह बिजकबैत भौजी बजली-

"मेलाक रोहैने खतम बुझि पड़ल। पनरह बर्ख पहिने जे गेल रही ओ मेला आ ऐ बेरक मेलामे अकास-पतालक अन्तर बुझि पड़ल।"

जिज्ञासा करैत पुछलयैन- “से की?”

भौजी बजली-

“पैछला जे गंगाक लहैर उठल से छाती भरि पानि मेलाक जगहमे लगि गेलइ। खाधि-खुधिमे अखनो पानि छेलैहे। तेहेन दल-दल माटि छेलै जे पएर चपइ।”

बजलौं-

“माल-जाल, हाथी-घोड़ाक बजार केहेन छल?”

भौजी-

“बुझि पड़ल जे लगे-पासक वेपारी सभ छैथ जे भोरे आनि कऽ मेला लगबै छैथ आ साँझू पहर चलि जाइ छैथ।”

पुछलयैन-

“हाथी-घोड़ाक की स्थिति छेलइ?”

बजली-

“कहबे तँ केलौं जे लग -पासक वेपारीटा-क मेला छल। पचासोसँ निच्चेँ गाए, महींस आ घोड़ा मिला कऽ छेलइ। हाथीक छुतियो ने रहइ। ”

बजलौं-

“से एना किए भेल?”

एक्की-दुगी भौजी नइ छैथ, लाल भाइक पत्नी छथिन। पढ़ल-लिखल स्नातक छैथ। बजली-

“आब लोक चरिचकिया गाड़ीपर ओङैठ कऽ चलत आकि हाथीपर देह डोलबैत चलत!”

बजलौं- “आन-आन बजार केहेन छेलइ?”

झपैट कऽ भौजी बजली- “ओ सभ जे अबितै से ओतेक आन्हर

अछि, जे अनेरे थाल-खीचमे आबि महामारीक शिकार होइतए।”

बजलौं-

“तखन तँ ओ सभ होशियारी केलक?”

भौजी बजली-

“ओ सभ कोनो कि नइ बुझलक जे इलाकाकेँ बाढ़ि बेसी तवाह केने छै, लेबाले-देबाले अछि, तखन अनेरे किए देह जतबै आ मच्छर कटबैले जाएब।”

लाल भाय बाजैथ किछु ने, मुदा मनमे तरेतर जेना कुही होइत रहैन तहिना बुझि पड़ल। मुदा के कुहि रहल छैन आ के कुहा रहल अछि, भरिसक तैपर सेहो नजैर गड़ि रहल छेलैन।



शब्द संख्या : 1306, तिथि : 15 दिसम्बर 2016

माघक घूर

अखन अदहो अगहन नइ बीतल, दिसम्बरक तँ छुतियो ने भेल अछि, नवम्बर अन्तिम सीमापर जरूर पहुँच गेल अछि। मुदा शीतलहरीक कहर शुरू भऽ गेल। ओना बेरुका समय छल, माने दिनक बेरुका, मुदा सुर्ज नइ उगने भिनसरे जकाँ बुझि पड़इ।

चद्दैर ओढ़ि गणेशी काका दरबज्जापर बैसल अपन माघक घूरक हिसाब-बारी जोड़ि रहल छैथ। जोड़ि रहल छैथ जे ओना कातिकेसँ घूर करै छी, कातिके किए जखन माल-जाल पोसने छी तखन तँ बारहो मास करिते छी। जड़ैया घूर ने जाड़क मास होइए, जइसँ जाड़केँ भगौल जाइए, मुदा मच्छरो भगबैले तँ घूरक खगता मालक थैरोमे होइते अछि।

खाएर जे अछि मुदा घूरो तँ घूर छी, मच्छर भगबैबला, जाड़ भगबैबला आ कनकनाइत ठाढ़केँ भगबैबला इत्यादि, घूरोमे अन्तर तँ होइते अछि।

जाड़े देह सिहरैत रहए, तँए तमाकुल खाइक मन भेल। ओना, अपन चुनौटीक तमाकुल सठि गेल छल से जलखैये बेरसँ बुझल छल, मुदा रौदक आशामे दोकान नइ गेल छेलौं।

गणेशी कक्काक घर लगेमे छैन, बिनु मंगनौं वा कहनौं, जखने ओइठाम जाइ छी तखने पहिने तमाकुलेक आग्रह होइए। तँए बिनु मंगनौं तमाकुल भेटैक आशा अछिए।

गणेशी काका ऐठाम विदा भेलौं। म नमे खुशी रहबे करए जे

दोसरसँ बिनु मंगनौं कोनो उपयोगी वस्तु भेट जाए , तँ ओ उपकारे भेल। मुदा ऐठाम तँ उपकार नहि उचित छी। हमरो समय जाएत।

दरबज्जापर बैसल गणेशी काका आँखि मुनने चद्दैरसँ नाक तक झँपने किछु सोचि रहल छला। आँखि बन्न आ नाक झाँपल देखि मनमे शंका उठल जे गणेशी काका भरिसक नीनाएल छैथ। बैसलो-बैसल तँ लोक एक झपकी लाइये लइए। मनमे भेल जे जखन नीनक आनन्दमे काका डुमल छैथ, तखन आनन्द भंग करब नीक नहि। ओना, अपनो मन तमाकुल लेल छिछियाइते रहए जे कखन मुँहमे औत। नबे-दस बजेसँ तमाकुल नइ खेने छेलौं। कहुना तँ अखन तीन बजैत हएत। मु दा से भेल नहि, पैरक आवाजसँ आकि बाहरी धमक बुझि गणेशी काका आँखि खोललैन। जगले छला। अपन माघक घूरक हिसाब जोड़ि रहल छला। ओना, गाममे बहुत गोरे एहेन छैथ जे श्रेष्ठजनक बीच सिर नइ लिबौन करै छैथ, मुदा अपना से नहि अछि। मेडिकलक विद्यार्थी जकाँ जँ दिनमे सैयो बेर आगू पड़ता तँ सैयो बेर सिर लिबैबते छी।

..नजैर पड़िते गणेशी काका बजला- “की हाल बौआ?”

हमरो सुतरल। सुतरल ई जे एकटा हाल बेकती वा परिवारक होइए, दोसर प्राकृतिक होइए जे निच्चाँ-ऊपर एकबट्ट केने रहैए, तेहने समय अछि, तैबीच फुटौल केना जाएत? बजलौं-

“काका, जे गति अपन सएह ने अनको रहत।”

हमर बात सुनिते एकमुहरी गणेशी काका मानि बजला-

“हँ, ई तँ ठीके कहलह मुदा...।”

काकाकेँ खाली ऊपरके पीढ़ी नइ बुझै छिऐन, समयक समझदार सेहो बुझै छिऐन। तेकर कारणो अछि जे कोनो विचार-विनिमय काका हूसऽ नइ दइ छैथ। जखन किछु बुझए चाहै छी आ काका लग बजै छी तँ ओ आगू-पाछूक चौमेड़ बान्हि बीचक स्थिति बुझबैत विचार जनु दइ

छैथ। तँए मनमे शंका भेल जे अपनासँ ऊपरक कोनो विचार पेटमे छैन तँए अदहे कहि चुप भऽ गेला। पुछलयैन-

"से की काका?"

प्रशान्त चित्तसँ काका बजला-

"गप-सप्प केतौ पड़ाएल जाइए, तहूमे तेहेन समय भऽ गेल अछि जे लोक तमाकुल-चाह-पान करैत रहह आ गप-सप्पकेँ लाड़ैत-चाड़ैत रहह। मुदा गपो कि अदना-गोदना छी, एकरो सम्हार लेल पहिने अपनो सम्हरए पड़ै छइ।"

गणेशी कक्काक बात सुनि मन विससँ विसाइन भऽ गेल। विसाइन ई भेल जे जे बात बुझैले बजलौं से तर पड़ि गेल आ दोसर विस आबि मनकेँ घेर लेलक। मुदा जहिना सुनटा गिनती होइए, तहिना ने उनटो होइए। जइसँ छुछुनैरक बीख उतारल जाइए। पहिने पैछले बात बुझि लेब पछाइत ऐगला चर्च करब। मन थीर भेल। बजलौं -

"हँ, से तँ ठीके।"

हमरा गपक सह जेना काकाकेँ भेटलैन तहिना बजला-

"पहिने तमाकुल खाह, पछाइत गप-सप्प करब।"

जे तमाकुल मुँहमे गेने फुरफुरा कऽ उठैए, ओ तमाकुल मुहसँ बाहरो हाथोमे एने तँ करामात करिते अछि। मन अपनो तरपल, मुदा देहक खगता हौउ आकि मनक अनके जकाँ अपनो विचार उठल। बजलौं-

"काका, चुनौटी दिअ बढ़ियासँ बनबै छी।"

सएह भेल। हाथपर औंठाक मर्दन पबिते जेना मन खुरखुरए लगल। बजलौं-

"ऐ बेरक समय तँ देखै-जोकर भऽ गेल।"

अपन मन ने तमाकुलक पाछू छिछियाइत रहए, मुदा कक्काक मन तँ से नइ रहैन, बाजए लगला-

“बौआ, देखैसँ पहिने बुझऽ-सुझऽ पड़तह। समैयोक अपन इतिहास अछि। एक इतिहास अछि दिन, महिना, सालक आ दोसर अछि अनहोनीक।”

बिच्चेमे बजलौं- “अनहोनी की भेल?”

हमर बात सुनि गणेशी कक्काक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे प्रश्न-पर-प्रश्न उठल जाइए, समय अछि तमाकुले खाइ भरिक, किए तँ काज काजकेँ जहिना रोकैए तहिना प्रश्नो ने प्रश्नकेँ रोकैए। विचारकेँ समटैत काका बजला- “जे कहियो काल होइए, वएह भेल अनहोनी।”

अपनो बुझि पड़ल जे काका संक्षेपमे अपन विचार सम्पन्न करए चाहै छैथ। मुदा बिच्चेमे बजा गेल-

“काका, बड़ जुलुम भेल!”

‘जुलुम’ सुनिते काका आँखि ठाढ़ करैत बजला-

“से की?”

बजलौं-

“फकीरबा भैया जे मुइला, तइ जरबैले जे बेवस्था हुअ लगल तइमे अनगौंआँ सभ आबि कऽ नाश कऽ देलकैन!”

काका बजला- “की नाश केलकैन?”

“एकेटा आमक गाछ फकीरबा भैयाक परिवारमे छेलैन जेकरा काटि कऽ नाश कए देलकैन।”

काका बजला- “एना किए भेल?”

बजलौं- “काका, एकरा दुरविचारे काटब नइ कहबै, बाहरक कुटुम समाचार सुनि धड़फड़ाएल एलैन आ घरवारीकेँ पुछलकैन जे लकड़ी

केतए अछि। घरवारी गाछ देखा देलकैन। गाछकेँ देखिते घरवारीसँ कुड़हैर लऽ जा कऽ काटि देलक। तैबीच जरबैले समाजक लोक ऐ दुआरे नइ पहुँचल छला जे जानकारीमे छेलैन जे जिज्ञासु कुटुम सभकेँ अबैमे अखन देरी अछि। तैबीच एहेन गलती भऽ गेल।”

गणेशी काका-

“मुरदा जरौल केना गेल?”

तैबीच दू झाड़ैन, माने धान दौनक खोह जकाँ, तमाकुलमे दऽ देने छेलिऐ, तेसर पछुआएल छल मुदा लगिचाएले छल। हाँइ-हाँइ कऽ चून झाड़ि थोपड़ी देलौं। थोपड़ी देखि गणेशियो काका तमाकुलक आशामे मुँह बन्न केने रहला आ अपन मन तँ पहिनहिसँ से चटपटाएल छल।

मुँहमे तमाकुल लइते बजलौं-

“काका, कोनो कि अपनेटा गाममे लोक मरै छैथ आ जरौल जाइ छैथ, ई तँ गाम-गामक लीला छी।”

थूक फेकैत गणेशी काका बजला-

“हँ, से तँ छीहे।”

गणेशी कक्काक विचारक सह पबिते बजलौं -

“जँ जइ गाममे जिनका छैन ओ कियो सरड़, चानन, घीसँ जरबै छैथ, आ जिनका नै छैन ओ ओहिना खढ़क ऊक मुँहमे लगा माटिमे गाड़ि दइ छैथ। वा धार-धूरमे फेंक दइ छैथ।”

मुड़ी डोलबैत गणेशी काका बजला-

“हँ, से तँ होइते अछि, जेकरा जे विभव रहल तइ हिसाबे काज करैए।”

मुँहमे तमाकुल फुला गेल छल, तँए बजैले मन लुसफुसाइते छल। बजलौं- “काका, कियो काँच-सुखल लकड़ीसँ जरबै छैथ तँ कियो

सोल्हैनी काँचे वा सुखलेसँ। मुदा अपना ऐठाम गाछी-बिरछी उपटने वा नइ रहने, मुरदा नइ जरौल जाइए सेहो तँ नहियेँ अछि। गोरहो-गोइठासँ तँ जरौल जाइते अछि।"

पैछला बातकेँ पकैड़ गणेशी काका बजला- "तखन भेल की?"

बजलौं- "भेल की, समय तँ देखिते छिऐ जे कइ हिसाबक भऽ गेल अछि। तीन बजे मुरदा घाटपर पहुँचल। रौदक केतौ दरस नहि, तैपर सँ झीसी जकाँ पाला खसैत। लकड़ीसँ मुरदा जरबैमे तीन-चारि घन्टा लगिये जाइए। किएक तँ लकड़ी ने काटल अछि, मुदा ओकरा बिना चीरने-फारने थोड़े जरौल जाएत। चीरैत-फारैत अछिया सजबैत घन्टासँ बेसीए लगि जाएत। पछाइत ने संस्कार पड़ैत। संस्कार पड़ला पछाइत सवा पहर जरबैमे लगिते अछि।"

मुड़ी डोलबैत गणेशी काका बजला-

"हँ, से तँ सभ दिनसँ होइत आएल अछि। मुदा भेल की?"

बजलौं-

"बरियातियो सभ होशियारी केलैन। घरवारीकेँ कहलखिन जे एक गोरेक संग सभ नइ ने मरि जाएब। तीन-चारि घन्टा ठंढमे बितौला पछाइत पोखैरमे नहाएब, ई तँ जानि कऽ जान जोखिममे देब हएत किने। डेढ़ साए गोरहाक ओरियान भेल। लगले अछिया खुनि गोरहाक संग लहास सजा, संस्कार पड़ल। घन्टे भरिमे सभ काज समापन भऽ गेल।"

गणेशी काका मने-मन अँटकार लगौलैन जे जे लकड़ी कटि गेल ओ तँ फेंकैये जाएत तइसँ नीक ने ओकरा आनि अपन माघक घूरक ओरियान कऽ लेब।

दोसर दिन भोरे गणेशी काका जारैन टोहियबैत घाटपर पहुँचला। लहास छाउर भेल अछियामे, बगलमे लकड़ी पड़ल...। हियासि कऽ देखि

घरवारीकेँ आबि पुछलखिन- “लकड़ी अनेरे फेंकब नीक नहि, तँए जँ ओकरा आनि कऽ भोज-काजमे लगा लेब ओ नीक हएत किने? आ नहि जँ फेंकब तँ हमहीं ओकरा लऽ जा कऽ घूरक ओरियान कऽ लेब ?”

किछु छी तँ सम्पैत छी किने, केकरा ने लोभ होइए। घरवारी कहलकैन-

“अपने उठा कऽ लकड़ी लऽ आनब। तखन जँ अहाँ मुँह छोड़लौं तँ एक मासक घूरमे जेतेक खर्च हएत तेते लऽ लेब।”

घरवारीक बात सुनि गणेशी कक्काक मन खुशी भऽ गेलैन। ओना अपनो गाछ-बिरीछ छैन, मुदा जे जीवित छैन, ओ तँ भविसोक लेल छैन्हे। मुदा जे कटि गेल ओ तँ पुन: ठाढ़ भऽ जीवित नइ हएत... ।

आँगन आबि कुड़हैर, टेंगारी, नेने लकड़ी लग पहुँचला। टेंगारी-कुड़हैर हाथमे देखि छह बर्खक पोता सेहो पाछू-पाछू दौड़ल गेलैन।

लकड़ी लग पहुँच टेंगारी-कुड़हैर राखि गणेशी काका पोताकेँ पहिने अछिया देखेलखिन।

अछिया देखि पोता पुछलकैन-

“ई की छिऐ?”

बजला-

“फकीर भैया जे मरला से अहीमे जरि कऽ छाउर भेल छैथ। एहने रीत संसारक अछि।”

पोता पुछलकैन-

“सभकेँ अहिना होइ छै?”

गणेशी काका बजला- “कहैले तँ सभकेँ अहिना होइ छै मुदा... ।”

लगाड़ी पोता छैन्हे। बाबाक संग लगपन छइहे। तहूमे लगमे बेसी काल रहने गणेशी कक्काक नाड़ी सेहो पकड़नहि रहै छैन। नाड़ी पकड़ब

भेल जिद्द रोपि अपन पक्षमे आनब। ओना, बाल-बोधक जिद्दकेँ गणेशी काका अवोध जिद्द बुझै छैथ, जेकरा खिच्चो कहले जा सकैए। ओना, ओइमे खच्चाक संभावना सेहो रहै छै, तँए नाड़ी पकड़बकेँ गणेशी काका सोल्हैनी अधला नहियेँ बुझै छैथ। किए तँ 'कहब' एक भेल, दोसर भेल 'सुनब' आ तेसर ने भेल 'करब', तँए तीनूमे अन्तरो अछिए। 'सुनब'सँ भारी 'कहब' भेल आ तहूसँ केते नमहर भारी करब होइते अछि। तँए पाशाकेँ आगू बढ़बैत गणेशी काका कुड़हैर उठा लकड़ी फाड़ए लगला। अपन बात बिसैर पोतो टेंगरी उठा डारिपर पटकए लगल।

तही बीच गणेशी कक्काक पुतोहुकेँ कियो कहि देलकैन जे बेटा मरचरमे अछि।

सुनिते बीढ़नी जकाँ भनभनाइत पुतोहु लगमे पहुँच बेटाकेँ कोरामे उठा ससुरपर अकची-दोकची सेहो भनभनाइते आँगन दिस बढ़ली।

गणेशी कक्काक मनमे भेलैन जे झूठ-फूसमे तेहेन रगड़ी छैथ जे बच्चाकेँ अखन जान लेती।

..पाछू-पाछू सभ बात सुनैत कानमे ठेकी लगौने गणेशी काका पोता लग पहुँच मुँह खोलला- "बच्चाकेँ किए जान लइपर तूलल छी। आँखिमे गेजर भेल अछि जे एते ठंढामे बच्चाकेँ नहाएब।"

ओना, पुतोहुक तामस अखनो धरि नहि कमल छेलैन, ओहिना छेलैन। मुदा तामस रोकैक उपायो तँ अछिए। ईहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए जे टस-मस होइबला नइ अछि। ओ तँ निर्भर करैत अछि जगहपर। खाएर जे से..। तैबीच उल्टा उत्तर दैत माने उनटबैत पुतोहु कहलकैन-

"ई जान लइ छेलखिन से बड़बढ़ियाँ आ हम बड़ अधला?"

गणेशी काका मने-मन पुतोहुकेँ बराबरीक बात सुनि क्षुब्ध भऽ गेला। मनमे उठलैन- लोकाचार की छी। कोन समाजमे केहेन लोकाचार

निरमित होइए आ विलीन होइए, से थोड़े बुझै छैथ। कहनौंपर मानबे केते करती। मुदा जँ जवाबसँ नहि रोकब तँ बच्चाक जान लइये कऽ छोड़ती। बजला-

“बच्चाक सौंसे देहमे केतौ जान लेब देखा दिअ ते। मुदा अहाँ जे माथपर पानि ढारबै से अपन आँखि नइ देखैए। बड़ मन जरल अछि ते एक बून गंगाजल माथपर दए दियौ।”

गपो-सप्पक क्रम आ कलक चबुतरोक ठंढपन पुतोहुक मनकेँ जेना ठंढ बनबए लगलैन। बजली-

“गंगाजल घरमे नइ अछि।”

‘अभाव’ सुनिते गणेशी काकाकेँ भाव जगलैन। बजला-

“गंगाजलोक कमी अछि। कलक पानि की छिऐ। गंगो महरानीक पानि पीब लोक अपन धरम-करमसँ जीबैए आ कलोक पानि पीब तँ जीविते अछि। हाथसँ लकड़ी छुलक तँ ओतबे दूर ने छुआए ब भेलै, तँए दुनू हाथ धोइ दियौ। हम जाइ छी - लकड़ी चीरैले। अपन बेटाकेँ पकैड़ कऽ घूर लग राखब। बड़ी-कालसँ ठंढमे वौआएल अछि।”

गणेशी कक्काक विचार सुनि पुतोहु पुताउ बनि गेलैन, तँए बजली किछु ने मुदा मन गवाही देलकैन जे बेटाधन छी, जँ अपने बेटी बनि नहि चलब तँ बेटा थोड़े बेटा बनि पौत?



शब्द संख्या : 1812, तिथि : 18 दिसम्बर 2016

पाही पट्टी

ऐ सालक समय सुभ्यस्त होइतो गाममे सुभ्यस्तता नइ आएल। माने ई जे समय-समयपर बरखा भेने परोपट्टाक गाम सभमे धानक खेती नीक भेल। जहिना समयपर आबाद भेल तहिना ओकर बाढ़ियो भेल आ आब तँ सहजे फुटि कऽ धान लबि गेल, माने चौरभर भइये गेल अछि। कातिक मास, खेत-पथारक एहेन रूप बनि गेल अछि जे बुझि पड़ैत साक्षात् लक्ष्मी आबि गेल छैथ। मुदा से परोपट्टाक आन गाम सभमे। अही बीचमे मरलाही गाम सेहो अछि। मरलाही गाम नमहर अछि। असगरे गाम पंचायत सेहो छी। सभ जातिक लोकक बास सेहो अछिए।

मरलाही गामक खेतीक चुहचुही ऐ दुआरे नहि जे गाममे खेत - पथार ऐछे नहि वा जे ऐछो से ऊस्सरे-खासर अछि।

उस्सर-खासर ऐ दुआरे अछि जे गामक अस्सी सँ बेसी प्रतिशत वा ई कहियौ जे गामक बारह-सँ-चौदहअना जोतसीम जमीन ओहन लोकक छैन जे परिवारक हिसाबसँ कम्मे छैथ, आ जे छैथो ओ पढ़ि-लिखि कऽ नोकरी करए बाहर चलि गेला।

तँए अपन खेत रहितो खेती नइ करै छैथ। ने अपने खेती करै छैथ आ ने कियो बटाइ करै छैन। तेकर कारणो अछि। कारण ई अछि जे जिनकर सबहक खेत छिऐन ओ नीक-नीक नोकरियो करै छैथ आ नीक कमाइयो करै छैथ, तँए खेतक उपजाक खगतो नहियेँ बुझि पड़ै छैन।

परम्परासँ खेतीक उपजाक बँटवारा अदहा-अदही रहल। माने ई जे

जिनकर खेत छिऐन, अदहा उपजा हुनकर हेतैन आ जे खेती करत तिनकर आधा हेतैन। आने गाम जकाँ मरलाहियो गामक पढ़ल-लिखल लोकक विचार अछिए। विचारक पोषक तत्त्व सेहो मजगूत ऐछे, तँए परम्पराकेँ तोड़ब पाप बुझै छैथ। बुझबाको चाही, बुझबाक ऐ दुआरे चाही जे पढ़ल-लिखल छैथ वएह सभ ने समाजक नियन्ता छैथ, हुनके सबहक बले ने गामो ठाढ़ अछि आ समाजो। मुदा गामक जे खेत विहीन लोक छैथ माने जिनका बास रहितो चास नहि छैन, तँए ओ सभ निहत्था छैथ। ओना निहत्था नै छैथ किएक तँ हाथ तँ छैन्हे, मुदा जे खेतक उपजाक आशासँ जीवन-यापन होइत, से नइ छैन। माने खेत नइ छैन। मुदा तँए मलिमुँह छैथ सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

ओहू सभ परिवारमे अपन लगन-मिहनतसँ नीक-नीक पढ़लो-लिखल छैथ आ नीक-नीक कुरसीपर बैस नीक-नीक कमाइयो करिते छैथ। जइसँ देखा-देखी परिवार चलिते छैन। मुदा ओहन परिवार कम अछि। बेसी परिवार ओहन अछि जे बोइने-बुत्ता करै छैथ आ गोटि-पँगरा नाँगैर पोसि गुजर करै छैथ आ किछु गोरे छोट-मोट उद्योग-धंधा सेहो करै छैथ। जइसँ सबहक आत्मशक्ति मजगूत छैन्हे। तेतबे नहि, सरकारक बनौल कानूनक अनुकूल सेहो छैथे। माने ई जे सौ किलो उपजमे तीस किलो खेतबला आ सत्तैर किलो उपजौनिहारकेँ हौउ। खेतबला आ बिनु खेतबलाक बीच अही मना-मनीसँ खेत परती बनल अछि, माने जोत-कोर बन्न अछि। तँए समय नीक रहितो मरलाही गामक दशा नीक नहियेँ अछि।

ओना ऐ सभसँ अलग जोतखियाइन काकीक छैन। जोतखियाइन काकीक माने जोतखी कक्काक पत्नी। जोतखी काका भूगर्भ-वेता छला, चालिसे बर्खक अवस्थामे मरि गेला। दूटा बेटो छैन आ पूर्वजक देल पाँच बीघा खेतो छैन्हे, जइसँ जीवन-यापन नीक चलै छेन। पत्नी पढ़ल-लिखल

नइ छथिन मुदा परिवारक घर-अँगनाक बेवहार माएसँ आ बाहरक बेवहार पतिक देख-रेखमे सिखलैन, जइसँ पक्का पत्नी तँ बनियेँ गेल छथिन, तँए 'जोतखियाइन' कहब अनुचित नहियेँ अछि। दुनू बेटो पढ़ि - लिखि तँ लेलखिन मुदा संस्कृत-विद्यालयक शिक्षा रहने, गाममे अँटावेश नइ भेलैन तँए दिल्ली जा कऽ दुनू मन्दि र पकैड़ लेला। नीक आमदनी हाथ लगलैन, जइसँ दिल्लीए-मे एकेठाम दुनू भाँइ अपन-अपन तीन मंजिला मकान सेहो बनाइये नेने छैथ।

जोतखीए काका जकाँ जोतखियाइन काकी सेहो रगड़ी छैथे। बेटा-पुतोहुक लाख कहलाक बादो, एक्केटा जिद्द धेने रहली जे जइ पतिक संग इज्जतक प्रेम भेल ओ जँ पहिने दुनियाँ छोड़ि देलैन , तिनका संग हम केना बिसवासघात करब, तँए हमहूँ अपन सारा प्रेमी पतिक बगलेमे बनबाएब। जिद्द रोपि जोतखियाइन काकी अपन गाम-घर छोड़ए नहि चाहलैन। ओना, बेटा सभ कोनो वस्तुक अभाव गामोमे नहियेँ हुअ दइ छैन, जइसँ विचार आरो बेसी पवित्र भऽ गेल छैन। अपन जमीनो-जत्था आ अपनो सेवा-ले एक गोरेक, जेकर नाम दुखबा छिऐ, रखने छैथ। दुखबोक पाँच गोरेक परिवार जोतखियाइने काकीक परिवारक सीख-लीख धेने चलि रहल अछि।

जोतखियाइन काकीक छोटका बेटा अपन बेटाक मुड़न वैष्णो-देवीक स्थानमे कबुला केने छला। पहिल असीरवाद दादिये ने देथिन माने खोंछिमे केश रखथिन , तँए माएकेँ कश्मीरसँ दिल्लीक अपन तीन मंजिला कोठा देखा फुसला कऽ रखि लेलैन।

जखन जोतखियाइन काकीकेँ छह मास दिल्लीमे भऽ गेलैन, मन सेहो लागए लगलैन, तखन एक गोरे दिया दुखबाकेँ समाद देलखिन जे जहिना अपन घर-दुआर छह तहिना हमरो बुझिहक। ओकरो देख -भाल करैत रहिहह।

दुखबा ओइ पाँचो बीघाक मालिक बनि मरलाहिये गाममे अछि। जे अछि तँ असगरे मुदा अछि तँ मरलाहिये गाममे।

दिल्ली युनिवर्सिटीमे मरलाही गामक एकटा विद्यार्थी, जे बी.ए.मे पढ़ैए, नाओं छिऐ राधामोहन। पिता स्टी ल फैक्ट्रीमे नोकरी करै छइ। दुर्गा पूजासँ छठि पाबैन धरि रहैक विचारसँ राधामोहन गाम आएल। दुर्गा पूजामे तँ खूब मस्ती मारलक, मस्ती ई जे मरलाही गामक चारू-भागक गाममे दुर्गा पूजामे जहिना नाच -गानक कम्पेटिशन अछि तहिना पूजो आ सजावटोक बीच ऐछे, जइसँ मस्तीक जगह बनियेँ गेल अछि।

दसमीक परात अर्थशास्त्रक विद्यार्थी राधामोहन, भिनसुरका चाह पीब जखन आगू तकलक तँ बुझि पड़लै जे गामक जे मूल पूजी अछि वएह ने गामक आधार भेल, तँए अपना नजरिये जाबे गामकेँ नहि देखि लेब ताबे गामकेँ नीक जकाँ जानियोँ तँ नहियेँ सकै छी। मास दिन-ले जखन गाम आएल छी तखन बहुत किछु तँ देखिये सकै छी। यएह सोचि राधामोहन अपने तरहक परिवारक किसुन लाल आ मोहन लालक संग गाम टहलब नीक बुझलक। दुनू गोरे राधामोहनकेँ भैया सेहो कहिते अछि आ टोलबैयाक सम्बन्ध सेहो छइहे। किसुन लाल हाइ स्कूलक विद्यार्थी आ मोहन लाल कौलेजक। ओना स्कूल-कौलेज रहितो विषयवार पढ़ाइ भेने विचारो प्रभावित भइये जाइ छइ। किसुन लाल साईंसक विद्यार्थी आ मोहन लाल कौमर्सक। जखन कि राधामोहन अर्थशास्त्र ऑनर्सक विद्यार्थी छी।

दुनू गोरेक संग राधामोहन गामक बाध दिस विदा भेल। गामक वस्तु-जात देखि राधामोहनक मनमे जिज्ञासा उठै जे ई केहेन सम्पैत अछि..? गामक रित हितमे केते अछि..? दिल्लीक प्रवास भेने अपनाकेँ बहरबैया बुझि राधामोहन प्रश्न उठबैत। मुदा मनोनुकूल उत्तर ने किसुन लालसँ भेटै आ ने मोहन लालसँ। तेकर मूल कारण रहै जहिना राधामोहन

अनाड़ी तहिना किसुन लालो आ तहिना मोहन लालो। मुदा ऊपरी बात ईहो होइ जे तीनू तीन डारिक विद्यार्थी छी तँए नजैरमे अन्तर भेने प्रश्न उलझिये जाइ। रस्तापर उत्तर एबे ने करइ। तँए मजाके-मजाकमे राधामोहन सौंसे गाम टहैल जखन घुमतीकाल घर लग आएल तखन बाजल-

"शुभ लाल काका जीबै छैथ आकि मरि गेला।"

पनरह बर्ख पूर्व कौलेजक अर्थशास्त्र विभागक पदसँ शुभ लाल काका सेवा निवृत्ति भेल छला। ओना विचारवान रहितो समयक परिवेशमे परिवार छिड़ियाइए गेलैन मुदा संजोग नीक रहलैन जे एकटा बेटी विधवा छैन, जे अपन एक मात्र सन्तानक संग लगमे रहै छैन जइसँ जिनगी जीबैमे कोनो असोकर्ज नहियेँ होइ छैन। पेंशनो नीक भेटै छैन आ नातियो कौलेजमे पढ़िते छैन। जइसँ घर-सँ-बाहर धरिक जरूरत पूरा होइते छैन।

मोहन लाल बाजल-

"ओना शुभ लाल काका बहुत बुढ़ भऽ गेल छैथ, मुदा छैथ जीविते। दरबज्जापर सँ केतौ ने जाइ छैथ।"

शुभ लाल काकाकेँ जीवित सुनि राधामोहनक मन चनकल। चनकल ई जे पचहत्तैर बर्खक जीवन्त आ तइसँ पहिलुका सुनल-बुझल तँ शुभ लाल काका भेबे केलाह। तहूमे अर्थशास्त्री छैथ, जरूर हुनकासँ गामक अर्थ बेवस्थाक जानकारी भेटत। तँए जाबे गाममे छी ताबे हुनके लग किए ने किछु समय बिताबी जे गाम एलाक फल पाएब।

साँझू पहर भेँट करैक विचार करैत राधामोहन बाजल-

"जहिना सौंसे गाम तीनू गोरे मिलि देखलौं तहिना तँ शुभ लाल काका सेहो ने गाम देखैत एला अछि। तँए तीनू गोरे सौंझुका प्रोग्राम शुभ लाल काका ऐठामक राखह।"

राधामोहनक संग घुमैमे किसुन लाल आ मोहन लालकेँ की भेटलै से तँ ओ दुनू जानए , मुदा दुनूक मन एते हर्खित जरूर भऽ गेल रहै जे संग छोड़ैक इच्छा नइ होइ। राधामोहनक बात सुनि दुनू गोरे संगे बाजल -

"बड़बढ़ियाँ।"

सूर्यास्त होइते तीनू गोरे–राधामोहन, किसुन लाल आ मोहन लाल– शुभ लाल काका ऐठाम पहुँचल। शुभ लाल कक्काक वृद्ध शरीर तँए दू मंजिलाक रहैक कोठरी छोड़ि पहिल मंजिलक निचले कोठरीमे रहै छैथ आ पलंग-चौकी छोड़ि निच्चेमे ओछाइन-बिछाइन सेहो रखने छैथ। ओना, तखन ओ दरबज्जाक ओसारपर बिछान बिछा बैसल रहैथ आ पत्नी सेहो लगेमे बैसल रहथिन।

..पहुँचते राधामोहन पएर छुबि प्रणाम करैत बाजल-

"प्रणाम चाचाजी।"

बिनु चिन्हनौं शुभ लाल काका 'नीके रहह' तँ कहि देलखिन मुदा मरियाएल आँखि ऊपर उठा चिन्हैक कोशिश करए लगला। ओना शुभ लाल कक्काक पत्नियोँ राधामोहनकेँ नइ चिन्ह पौलखिन। तैबीच शुभ लाल काका बजला-

"बौआ, आँखि मलीन भऽ गेल अछि, ओना कानो तहिना भऽ गेल अछि मुदा आँखिसँ बेसी नीक अछि। नीक जकाँ नइ चिन्ह पौलियह?"

राधामोहन बाजल-

"काका, हम जुगेसरक बेटा छी।"

शुभ लाल काका-

"जे दिल्लीमे नोकरी करैए?"

"हँ! स्टील फैक्ट्रीक चिमनीमे काज करै छैथ।"

राधामोहनक बात सुनि शुभ लाल काका पुछलखिन-

"कए भाए-बहिन छह?"

राधामोहन-

"तीन भाए-बहिन छी। भाए छोट अछि, बहिनक बिआह-दुरागमन भऽ गेल अछि, सासुर बसैए, शिक्षिका छी।"

शुभ लाल कक्काक नजैर नारी शिक्षापर गेलैन। मने-मन गाम-शहरक तुलना करए लगला जे गामक जेते लड़की स्कूलमे पढ़ैए तइसँ बेसी प्रवासी परिवारक पढ़ैए। मुदा लगले मन गामक जेरक-जेर लड़कीकेँ साइकिलपर पढ़ैले जाइत देखल रहैन तँए मन उनैट गेलैन। उनैट ई गेलैन जे आब गामोक लड़की सभ स्कूल जा रहल अछि। मुदा लगले भेलैन जे जे टेकनीकल ज्ञान शहरक लड़कीकेँ भेटने सुविधा अछि ओ तँ गाममे नहियेँ अछि। तँए गिनतीमे भलेँ शहरे जकाँ गामो पुरि जाए, मुदा उच्चस्तरीय शिक्षा तँ शहरेक लड़कीकेँ अछि...।

शुभ लाल काका बजला-

"तूँ की करै छह?"

राधामोहन-

"जे.एन.यू.मे पढ़ै छी। अर्थशास्त्र आनर्स रखने छी।"

एक तँ अर्थशास्त्र विषय (माने शुभ लाल कक्काक) दोसर दिल्ली युनिवर्सिटीक विद्यार्थी गाममे पेब शुभ लाल कक्काक मन ओहिना कलैश गेलैन जहिना कोनो गाछमे नव कलशक आगमनसँ होइत।

..नातिकेँ सोर पाड़ि शुभ लाल काका कहलखिन-

"बौआ, पहिने पानि सभकेँ पिआबहुन। आ चाह बनबैले माएकेँ कहि एतै आबि कऽ तहूँ बैसह।"

नातिकेँ कहि शुभ लाल काका राधामोहनकेँ कहलखिन-

"बौआ, रामशरण शर्मा, पनिक्कर आ पुष्पेश पंत भाय जीबै छैथ

आकि मरि गेला?”

राधामोहन-

“चाचा, ओ सभ मरैबला छैथ जे मरता। ओ तँ अमर छैथ अमर रहता।”

शुभ लाल कक्काक मन जुड़ा गेलैन। बजला-

“बौआ, केना कि अखन पढ़ाइ चलि रहल छह?”

राधामोहन-

“चाचा, दुर्गा पूजासँ छठि धरि -ले गाम आएल छी। अपने पाकल आम भेलिऐ, तँए चाहै छी जे जाबे गाममे छी ताबे अपनेसँ किछु गामक अर्थनीति बुझी।”

‘अर्थनीति’ सुनि शुभ लाल काका चौंकला। चौंकला ई जे अर्थशास्त्र विषय पढ़बैक दरमाहा लेलिऐ आ पेंशनो लइ छिऐ, मुदा अर्थनीति गामक की अछि, से थोड़े पढ़लौं। जिनगी भरि यएह ने पढ़बैत ऐलिऐ जे जखन जनसंख्याक वृद्धि होइए माने लोकक बाढ़ि होइ छै तखन हेजा-प्लेग सन बेमारी भगवान दइ छथिन आ जनसंख्या नियंत्रण करै छैथ...।

ओना, तरेतर शुभ लाल कक्काक मन कनी घबरा जरूर गेलैन मुदा अपनाकेँ संयमित करैत बजला-

“पहिने सभ कियो चाह पीब मनमे सरदी-गरमी एक रंग बना लएह पछाइत हृदयसँ गप-सप्प हेतइ। कमसँ कम एते तँ भेबे कएल जे मास दिन तूँ औरुदा बढ़ा देलह।”

चाह पीब राधामोहन बाजल-

“चाचा, गामक तँ बारह-चौदहअना जमीन खसले अछि जे उत्पादित वस्तु छी, तखन गाम केना उठि कऽ ठाढ़ भऽ दौड़त?”

राधामोहनक प्रश्न सुनि शुभ लाल काका गुम भऽ गेला। तरेतर तामसो उठैत रहैन जे सभ किरदानी गामेक लोक करैए। भेँट करैले जखन लगमे औत तँ दुनू आँखि झाड़ि -झाड़ि कानि-कानि कहत जे गाम उजैर रहल अछि। गाम उजरत तँ समाज, संस्कृति, साहित्य सभ उजैर जाएत मुदा गामक सम्पैतक उन्नैत केना हएत, तैकाल आँखिक पानियेँ सुखि जाइ छइ..! बजला-

“बौआ, हम तँ पानक आदी छिअ, पान खेबह। जाबे हम पान लगबै छी ताबे तोहूँ गामक चौहद्दी बान्हब छोड़ि एक-एक समस्याकेँ बारीकीसँ देखह। अपना सभ एक समाजक छी, तँए हरेक समस्याकेँ पकैड़ ओइपर नीक-बेजाए विचार करह जे नीक रस्ता की हएत, ओ अपनबैक अछि जइसँ समाजक कल्याण आकि गामक उत्थान हएत।”

दिल्लीक पारखी विद्यार्थी राधामोहन, शुभ लाल कक्काक विचारकेँ परेख बाजल-

“गामक बारह-चौदहअना जमीन परता भेल जा रहल अछि, तखन गामक उत्थान केना हएत?”

पानक पीक फेकते शुभ लाल कक्काक मन फुला गेल छेलैन। राधामोहनक प्रश्नक गर उनटबैत बजला-

“बौआ, ‘थाकल पाँव पलंग भेल भारी आब की लादब हौ वेपारी।’ मुदा तँए कि समाज नइ छी सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।”

मुड़ी डोलबैत राधामोहन बाजल-

“ई तँ अछिए।”

राधामोहनक उत्तर पेब शुभ लाल काकाकेँ जेना आगूक गर भेटलैन तहिना बजला-

“बौआ, गामक जिज्ञासा जगलह, ई तँ बहुत पैघ गुण भेल।

जहिना सभ वस्तुक अपन-अपन नीक गुण होइ छै, तहिना मनुक्खक गुण समाज सेवा सेहो छी। तोंही कहह जे केना परती खेत उपजाऊ बनत ?"

ओना, सोझ-साझ भाषामे शुभ लाल काका बाजल छला मुदा राधामोहन वौआ गेल। वौआ ई गेल जे परती खेतक माने ओ विशेष रूपमे लेलक। जइसँ मनमे ठहकए लगलै जे खाली जोत-कोरक दुआरे खेत परती अछि, तेतबे बात नहि। समाजक सभ कथुक यएह दशा अछि। मुँह बन्न केने मने-मन राधामोहनकेँ वौआइत देखि मोहन लाल बिच्चेमे बाजल-

"चाचा, अपना गामक जेते पुरुख छैथ ओ तँ परदेशमे चाकरीसँ भीख तक माँगि जीवन बीता रहल छैथ, तखन गामक खेत परती रहत की नहि?"

ओना मोहन लालक प्रश्न सुनि शुभ लाल काका मुस्की मारए लगला मुदा जखन अपनापर नजैर उनटलैन तँ अपनो सहए देखला। माने जएह सीख-लीख बहरबैयाक सएह ने अपनो अछि...। तैबीच राधामोहन मुँह खोललक-

"मशीनक जुगमे जँ खेत परती रहल, तखन केतौ-ने-केतौ बँटबारामे गड़बड़ी छइ।"

राधामोहनक सुढ़ियाएल विचार सुनि अपन विचारकेँ सुढ़ियबैत शुभ लाल काका बजला-

"बौआ, पहिलुका समाज आ अखुनका समाजमे बहुत दूरी बनि गेल अछि।"

बिच्चेमे राधामोहन मुड़ी डोलबैत बाजल-

"हँ, से तँ बनियेँ गेल अछि!"

अपन विचारमे सह पबिते शुभ लाल काका बजला- "पैछला

समाजक नमहर इतिहास अछि, ओतेमे अखन जाएब नीक नहि, अखन एतबे बुझह जे पहिने पाही पट्टीक जमीनदार अनगौंआँ होइ छला आ केतौ-केतौ गौंओं, मुदा आब तँ... ।"

'मुदा आब तँ' कहि शुभ लाल काका जेना किछु मोन पाड़ए लगला, तइ बिच्चेमे राधामोहन बाजल-

"हँ, से तँ बुझले अछि ।"

'बुझले अछि' सुनि शुभ लाल कक्काक मन मानि गेलैन जे जखन पैछला इतिहासक धारा राधामोहनकेँ बुझल छै, तखन तँ आइक जे परिस्थिति बनि गेल अछि, ओइ बुझैमे असान जरूर हेतइ... । बजला-

"बौआ, जहिना मनुक्ख अनन्त अछि। मुदा अखन ओतेमे नइ जा कऽ मात्र दूटा समस्याक सम्बन्धमे कहै छिअ।"

मुस्की दैत राधामोहन बाजल-

"अखन मास दिन गाममे रहबो अछि, तँए कोनो औगताइयो नहियेँ अछि। ओना जिनगीक एकोटा बात बुझब कम नइ भेल, तखन जँ अपने दूटा-क चर्च करब ई तँ आरो बेसी भेल।"

शुभ लाल काका बजला-

"आइक परिवेशमे गाममे जे जमीनबला छैथ, जमीन्दार छैथ, ओ सभ पढ़ि-लिख कऽ नीक-नीक नोकरी करए बाहर चलि गेला। गाममे खेत तँ रहि गेल मुदा खेती करैबला नइ रहला, तँए जमीनक ई दशा भऽ गेल अछि।"

राधामोहन बाजल-

"ओ सभ ने बाहर बसि गेला मुदा गामोमे तँ लोक अछिए। किए ने हुनका सभकेँ बँटाइ करैले जमीन ओ सभ दए दइ छथिन?"

मुस्की दैत शुभ लाल काका बजला- "बौआ, अखनो ओहन विचार

लोकक मनसँ मेटाएल कहाँ अछि। अखनो परम्पराकेँ आधार बना बाबा-दादाक विचारकेँ बँटवारा समाजपर थोपए चाहै छैथ, जे हुनका स्वीकार नइ छैन। अही बीचमे गामक खेत परता बनि गेल अछि।"

शुभ लाल कक्काक बात सुनि राधामोहनक मन जेना भरि गेल तहिना बाजल-

"चाचा, आइ एतबे रहऽ दियौ। काल्हि फेर आएब।"



शब्द संख्या : 2370, तिथि : 25 दिसम्बर 2016

बीरांगना

पूस मासक अन्हरिया परवक दोसर दिन माने दुतिया -अन्हार। दिनक दू बजे रघुनाथ काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बैस आजुक घटनाक पूर्ण विवरण मने-मन समटैक विचार कऽ रहल छैथ। रंग-बिरंगक चर्च परिवारो आ गामोमे उड़िये रहल अछि, तैबीच सहीकेँ पकड़ब ओतेक असान नहियेँ अछि, मुदा असम्भवो अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओ तँ रस्ताक रस्सा पकैड़ बिटियौनहि हएत, तइले दोसराक संग संलग्न बेकतीसँ बुझब जरूरी अछिए।

अपन कानूनीक ऐगला बाट रघुनाथ काका सम्हारि चुकल छला, जइसँ भविसक तँ उपाय भऽ गेल छेलैन मुदा परिवारोक बीच तँ तोष-भरोस दैत असथिर तँ करबाके छेलैन। जइले परिवारजनसँ रायो-विचार करब आ अपन घटित घटनो सुनब तँ छेलैन्हे।

घटना एहेन विकराल भेल छल जे परिवारोजन आ टोलो-पड़ोसक लोक विचलित भइये गेल छला।

रघुनाथ कक्काक पत्नीक संग पोती–रीना कुमारी–ठमकैत ठहकैत पहुँचलैन। ठमकैत ऐ दुआरे जे परिवारक सभ बेथाएल , तँए केकर बेथा के सुनि निमरजन करत। मुदा परिवारक श्रेष्ठजन भेने ऐगला मुँहरीक विचार तँ रघुनाथे काका ने करता, तँए। ओना पोतीक काज देखि रघुनाथ कक्काक मन बेहद खुशी छेलैन, मुदा किछु अछि तँ बाल-बोध अछि, ओकरा जँ मनोनुकूल विचार नइ देल जाएत, सेहो नीक नहियेँ। आँखि

उठा रघुनाथ काका रीनापर देलैन। माघ मासक अन्हरियाक तिरोदसीक भोरक चान जकाँ जे लाखो-लाख पाला-कुहेसक बीच अपन लालिमा बरकरार रखैए, तहिना रीना कुमारीक ललौन चेहरा दमकैत.., मुदा जहिना पोतीक चेहरा दमकैत रहैन तहिना पत्नीक मन हतास् भेल उड़ल बुझि पड़लैन। लगमे अबिते पत्नीकेँ कहलखिन-

"बैसू, जेना जे भेल सभ बात कहू।"

आगूक सोझमे सुदामा आ तिरछिया कऽ रीना आगूमे बैसलैन, सुदामा बजली- "पोतीक तँ जान बँचि गेल, नइ तँ नाक-कान सभ कटि जइतए।"

ओना, रघुनाथ काकाकेँ भनक लगि गेल रहैन जे जखन आततायिक हुजुम चारू भागसँ घर-अँगना घेरए लगलैन तखन रीना कुमारी अपन जान बँचबए–जे पकैड़ ने लिअए–दोसर अँगना पहुँच गेल। जेतए नीक संरक्षण भेटलै, आ आततायिक हाथसँ जान बँचि गेलइ।

रघुनाथ काका बजला- "भगवान केकरो अधला केलखिन हेँ जे रीनाक अधला करितथिन।"

'भगवान'क नाओं सुनिते पत्नीक मनक बोझ जेना कमलैन तहिना मन हल्लुक भेलैन, हल्लुक होइते बजली-

"किछु छी तँ मनुक्खक बच्चा छी किने, बुधि-अकील तँ छइहे ने। अपन जान अपना बुधिये बँचा लेलक..!"

ओना, रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन जे पत्नीक ऐगला बात नहि सुनि पहिने पोतीक बात सुनब बेसी नीक हएत, मुदा लगले फेर भेलैन जे ने पोतिये आकि पत्नीए केतौ जेती आ ने अपने केतौ जाइक तैयारीमे छी जे धड़फड़ी रहत। परिवारमे जे घटना भेल ओ तँ पोखैरक हिलकोरक पानि जकाँ धीरे-धीरे असथिर हएत। ओना, पोखैरक हिलकोरक पानिकेँ पानियेँ रोकि-रोकि असथिर करैए, मुदा मनक हिलकोर तँ विचारेसँ ने

असथिर हएत, तँए पत्नीक विचार रोकब नीक नहि। तहूमे परिवारक घटना छी मनक संग छातियो दहलिते हेतैन जे मनक विलाप निकलला पछातिये असथिर हएब सम्भव भऽ सकैए। परिवारक घटनाक विचार करए जखन बैसल छी, तखन एहनो तँ सम्भव भइये सकैए जे पोतीक नजैर घटनाक सभ बिन्दु पर नहि अँटैक जघन्य दृश्यमे सटि गेल होइ, जइसँ छोट-छीन ओहन बिन्दु छुटि जाए, जे बिन्दु पत्नीक विचारसँ प्रगट भऽ जाए। तँए पत्नीक विचार सेहो अपन महत् रखिते अछि।

पत्नीक विचारसँ रीनाकेँ शान्ति आ शान्त्वना भेटबे करत। जेते शान्त्वना मनमे बसत तेते बेथा कमतै। जेते मनक बेथा कमतै तेते बुधि सर्ड़ास हेतइ। जखने बुधि सर्ड़ास हेतइ तखने विचारक विकार सेहो हटबे करतै। जइसँ मलिनता कमतै आ ललितमा बढ़तै...।

सह दैत रघुनाथ काका बजला-

“अहाँ सन दादीक पोती ने रीना छी, तोहूमे कौलेजमे पढ़ैए, आब कहिया बुधि-अकील हेतइ।”

अपन पोतीक बँचैत इज्जत आ अपन दायित्वक विचार सुदामा काकीक मनकेँ सकतबए लगलैन। मरुभूमिक मुइल धारमे जहिना एकाएक बाढ़ि आबि गेने मड़ाइन-सड़ाइन गन्ध नहि, कलियाएल-फुलियाएल सुगन्ध उठैए तहिना सुदामो काकीक आ रीनो कुमारीक मनमे उठए लगल।

सुदामा बजली-

“जहिना कुल-खनदानक इज्जत अखन धरि लहलहाइत आबि रहल अछि तेहने लहलही पोती रखि लेलक।”

दादीक बात सुनि रीनाक मन ओहिना जुड़ा गेल जहिना जुड़शीतलक नीर दादा-दादीक हाथे सिरपर चढ़ने जुड़ाइत अछि। अपन कएल कृत्तिपर रीना कुमारीक मन नाचए लगल। जइसँ मुहेंक रूखिटा

नहि, चेहराक रूखि सेहो दमकए लगलै। नजैर उठा दादीपर दैत, आगू बढ़ा बाबापर सेहो रीना देलक। प्रसन्न चित्त बाबाकेँ देखि रीनाक मन सेहो प्रसन्नसँ प्रशान्त दिस बढ़ए लगल...।

तैबीच रघुनाथ काका पत्नी दिस देखि बजला-

“जे सीख-लीख अहाँक अछि, सएह ने पोतियोक हएत।”

पतिक विचार सुनि सुदामा काकीक मन फुदफुदेलैन। फुदफुदाइते बजली-

“साठि बर्खक जिनगीमे जहिना अनको बहु-बेटीकेँ अपन बहु-बेटी बुझि झाँपैन दैत रहलौं अछि तहिना ने भगवानो हमरा देलैन। ”

पत्नीक खुशी मन देखि रघुनाथ काका टुसकियबैत बजला-

“भगवान केकरो बेपाट भेलखिन अछि जे हमरा हेता।”

रघुनाथ कक्काक बातमे सुदामा काकीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ, मुदा चेहराक रूखि मलिन हुअ लगलैन। पत्नीक चेहराक रूखिसँ रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन जे जहिना कियो पहाड़क टुगनीपर सँ कोनो कारणे ओंघराइत समुद्रमे डुमि जाइए तहिना भरिसक आइ अपनो परिवारमे होएत। मनक मोनिमे जहिना रघुनाथ काका उग-डुम करैत रहैथ तहिना सुदामा काकी सेहो हुअ लगली। उग-डुम करैत बजली-

“आइ जँ आततायिक हाथ रीना पड़ि गेल रहैत तँ अखन केतए रहितए..?”

बजैत-बजैत सुदामा काकीक छाती चहकए लगलैन। दुनू आँखिसँ दहो-बहो नोर बहए लगलैन। नोरो तँ नोर छी, एक जल स्वरूप असथिर नीर छी तँ दोसर जल प्लावित धार छी! सुदामा काकीक नोर जल-प्लावित धार जकाँ आगू बढ़लैन। दुनू गालपर बहैत नोरक धा रकेँ जहिना रघुनाथ काका अपन धोतीक खूटसँ पोछलखिन तहिना रीना सेहो

पोछलक, मुदा मन जिनगीक विशाल मोनिमे डुमए लगलै। डुमिते मन हुमरलै- जँ इज्जतखोर लूटेराक हाथ पड़ि गेल रहितौं तँ अखन केतए रहितौं..! हमर की गति होइत..! हे भगवान! अहीं हमर रक्षा केलौं जे ओहन बुधि ओइकाल जगेलौं जइसँ अपन रछिया अपने कऽ लेलौं..!

गप-सप्प आगू बढ़बै दुआरे रघुनाथ काका पत्नीकेँ कहलखिन -

“एक गिलास पानि नेने आउ। कण्ठ सुखि रहल अछि।”

जहिना रघुनाथ कक्काक मुहसँ ‘एक गिलास पानि’ खसलैन तहिना सुदामा काकी उठि कऽ पानि आनए आँगन गेली। तैबीच रीनाक भव्य रूप देखि रघुनाथ कक्काक मन पाछू घुमलैन। पाछू घुमिते मनमे उठलैन, समयक गतिकेँ कियो रोकि सकैए। जे परिवेश बनल जा रहल अछि ओइ परिवेशमे लड़का-लड़कीक प्रेम-सम्बन्धकेँ कियो रोकि थोड़े सकैए? तइले समाजकेँ विचार करए पड़तै। जँ से नहि करत तँ समाजमे सदिकाल अशान्ति उठिते रहत, जइसँ अशान्ते-अशान्त होइत रहत।

आदमी लाठी-ठेंगाक संग पहुँच घरकेँ घेरि समांग सभकेँ मारलक। जहिना पोता घरसँ चुपचाप चलि गेल, तहिना तँ लड़कीबलाक लड़कियो निकैल गेल, ऐमे परिवारक की दोख छइ। कोन नजरिये लोक ऐ समस्याकेँ देखए चाहैए..? पोतीकेँ पुछलैन- “बुच्ची, अखन अपने दुनू गोरे छी, कियो ने तेसर अछि आ ने तेसर परिवारेक अछि तँए झूठ-फूस नहि, की भेलह?”

कनैत मनक हँसैत विचार रीना कुमारीक मनमे जगि गेल। बाजए लगल-

“बाबा, हम कलपर छेलौं। उत्तरबरिया रस्ता सँ लोक सभकेँ अबैत देखलिऐ। कलपरसँ दच्छिनमुहेँ जहिना विदा भेलौं कि बीचला रस्‌ तासँ सेहो ओहिना लोक सभकेँ अबैत देखलिऐ, मनमे भेल जे हमरा पकैड़ लेत! दौड़ गेलौं। दौड़ कऽ दोसर अँगना पहुँच गेलौं। जखने दोसर अँगना

गेलौं कि मनमे उठल जे जँ कहीं अँगने –जइ अँगनामे पहुँचल रही–कें चारू महरसँ घेरि लिअए तैयो तँ आततायिक हाथ पड़िये जाएब। जखने इज्जतखोर-आततायिक हाथ पड़ब तखने हमरो इज्जत लूटेबे करत।"

पोतीक बात सुनि रघुनाथ कक्काक मन विचलित हुअ लगलैन। ओना, सभ कथुक बाबजूद रीनाकेँ कुशक कलेप नहि लागल छल, तँए मनमे कोनो अथिरता नहियेँ रहैन। मुदा घटनाक जे रूप-रंग भेल ओ तँ मनकेँ हिलाइये देने छेलैन। जहिना पोखैरक असथिर पानिमे किछु पड़ने पानि डोलाइमान भऽ जाइत तहिना हवो-विहाड़िक झोंकमे सेहो हेबे करैत अछि। सएह रघुनाथ काकाकेँ सेहो भेल रहैन।

तैबीच सुदामा काकी सेहो गिलासमे पानि नेने पहुँच गेली। पत्नीपर नजैर पड़िते रघुनाथ काका बजला-

"रीना तँ कुल-खनदानक नाक बँचा लेलक।"

रघुनाथ कक्काक बात सुनि सुदामा काकी विहुँसली। रघुनाथ काका पानि पीबिते रहैथ कि बिच्चेमे सुदामा काकी बजली-

"जइ अँगनाक पुरुखो आ महिलो अपन परिवारक इज्जत बुझि अपन दायित्वकेँ भार बुझि निमाहत, वएह परिवार ने पुरुखाह परिवार बनत। आ जखने परिवार पुरुखाह बनत तखने ने जन-गणमे पुरुखपन औत आ पुरखाक इज्जत बनल रहत।"

पत्नीक बात सुनि रघुनाथ काका बजला-

"अखन अहाँ मुँह चुप रखू। रीनासँ आरो बात बुझए दिअ। तेकर पछाइत की भेल, रीना?"

रीना बाजल-

"एक तँ अँगनाक टाट-फरक टुटल, वेपर्द अँगना, तहूमे लूटिहाराक नजैर सेहो पड़ि चुकल छल। लगले हम ओइ अँगनासँ दौड़ कऽ तेसर

अँगना चलि गेलौं। जइ अँगनामे नीक रक्षा कवच भेटल। ”

रघुनाथ काका- “की नीक रक्षा कवच?”

रीना-

“एक तँ अँगनामे आठ-दस गोरे रहइ, तैपर ईंटाक-घर सेहो। जाइते सभ हाँइ-हाँइ कऽ पकैड़ कोठरीमे लऽ जा बाहरक सभ केबाड़ बन्न कऽ देलक।”

रघुनाथ काका- “इज्जतखोरक जे आक्रमण भेल, से नइ देखलहक?”

रीना- “सभ किछु देखलिऐ।”

रघुनाथ काका- “बन्न कोठरीसँ केना देखलह?”

रीना-

“बहराक ने दुनू फाटक बन्न भऽ गेल। मुदा भी तरक जे सीढ़ी रहइ, जे ऊपर छतपर जाइ छै, ओ खुलले रहइ। ओहीपर सँ चढ़ि छतक जे छोटकी कोठरी छै, तइमे पहुँच खिड़की देने देखए लगलिऐ।”

रघुनाथ काका- “की सभ देखलहक?”

रीना- “देखलिऐ जे पहिने छोटका बौआकेँ (जे बारह-तेरह बर्खक अछि) पान-सात आदमी ओकरा पकैड़ घिसियेबो करै छै आ लाते-मुक्के मारबो करै छइ। छाती फाटि गेल। जखन भाइए मरि जाएत तखन हमर दशा की हएत।”

धोतीक खूटसँ आँखि पोछैत रघुनाथ काका बजला- “आरो की सभ देखलहक?”

दुनू हाथसँ दुनू आँखि पोछैत रीना बाजल -

“मझिला बौआकेँ जखन आठ-दस गोरे केश पकैड़ कऽ घिसियबैत रहै तखन लक्ष्मीवाइ मोन पड़ल, मुदा कइये की सकै छेलौं। छतपर ईंटो

ने रहै जे जुमा-जुमा फेंकतौं आ लूटिहाराक कपार फोड़ितौं। ”

विह्वल होइत रघुनाथ काका बजला-

“और की सभ देखलहक?”

रीना-

“पापाकेँ पनरह-बीस गोरे चारूभर सँ घेर मारैत रहइ। मिथिलेश काकाकेँ सेहो पनरह-बीस गोरे पकैड़ कऽ घिसियबैत खून करैले लऽ जाइत रहइ।”

जहिना रघुनाथ कक्काक मन तहिना सुदामा काकीक मन छहोँ-छीत भऽ छिड़िया गेलैन। छिड़ियाइत मनकेँ समेट रघुनाथ काका बजला-

“जखने परिवारमे वीरत्वक आगमन हएत, जे कठिन लगनसँ होएत, तखने बीरांगनाक उद्भव हेबे करत। जखने बीरांगनाक उद्भव हएत, तखने ओ अपन इज्जत-आवरू बुझि अपन जिनगीक रक्षा करबे करत।”



शब्द संख्या : 1551, तिथि : 30 दिसम्बर 2016

चहकल विचार

कािल्हये वरस्पैत काका हाइ स्कूलसँ सेवा निवृत्त भेला अछि। जिनगी भरिक नोकरीक भारसँ निवृत्त होइसँ पहिने मनमे खूब खुशी छेलैन जे बेटो-पुतोहु ठौर लगि कऽ जगरनाथेपुरीमे रहैए आ बेटियो सभ ठौरेपर अछि। जइ समयमे नोकरी शुरू केने रही तइ समयमे जेते मास दिन खटलापर दरमाहा भेटै छल तइसँ चारि गुणा बेसी (नव वेतनमान बनने) आब पेंशने भेटत। जहिना अखन धरिक जिनगीमे केकरो रोब-दाब नइ सहलौं तहिना भगवान आगूओ जिनगीक पार लगेबे करता।

हाइ स्कूलक शिक्षणमे जिनगीक पैंतीसम बर्ख बीता वरस्पैत काका सेवा निवृत्त भेल छला। नीतिशास्त्रक विद्यार्थीसँ जे जिनगी शुरू केलैन ओ साठि बर्खक जिनगीक सीमानपर पहुँचा देलकैन। अखन धरि जइ घर-अँगनामे रहै छला ओ अस्थायी रूपेँ, मुदा आब स्थायी रूपेँ रहता, तँए दुनू परानीक ऐगला जिनगीक पहिल काज यएह स्थायित्व आनब छेलैन।

तीन बजे भोरे नीन टुटिते वरस्पैत कक्काक मनमे एलैन जे अखन धरि दुनू परानीक बीच बिनु ठौर -ठेकानक जिनगी छल। कहियो गाए-महींस गनैक ड्यूटी करै छेलौं, तँ कहियो भोँटक बूथपर सवा किलो मिठाइ महावीरजी कैँ कबुल, जाइ छेलौं। तहिना पत्नियोँक छेलैन। ओना बापक घरमे जीबैक सभ लूरि सीख नेने छेली। तेकर कारण छल जे पिता सदिकाल चरिया-चरिया कहैत रहै छेलैन जे अपन जिनगीक काज हर मनुक्खकेँ चीनहक चाही। हाथ-पएर सभकेँ छइहे, जखने ओकरा ओइ

काजकेँ पकड़ैक लूरि भऽ जेतै तखने ढलानपर ढलकैत गाड़ी जकाँ जिनगी असानीसँ चलए लगत।

ओना वरस्पैत कक्काक संग भेला पछाइत सुगिया काकी किसान परिवारक कन्याँसँ नोकरिहारा परिवारक कनियाँ बनि गेल छेली। तँए क्रियामे जहिना सभकेँ होइ छै तहिना सुगियो काकीकेँ भेले रहैन।

तीन बजे भोरे वरस्पैत काकाकेँ नीन टुटिते पत्नीकेँ जगबैक विचारसँ बजला-

"पैछला चालि-ढालि छोड़ू, एते दिन दोसरक हाथमे छेलौं तँए दोसर जिनगी छल, आइसँ स्वतंत्र भेलौं। तँए जिनगी क चालि-ढालि सेहो ने तोड़ए-जोड़ए पडत। तहूमे जखन हम केतौ आ अहाँ केतौ चिड़ै जकाँ छेलौं तखुनका आ आब एक्के घर -दुआरिमे दिन-राति मनुक्ख जकाँ रहब, से तँ अपने ने विचार करैत चलब।"

ओना सुगिया काकीक नीन सेहो टुटले छेलैन, मुदा चुपचाप अपन बुढ़ाड़ीक जिनगीक हिसाब लगबै छेली जे आब केतबो सींग कटा नेरू बनब से पार लागत। तहूमे दुनू परानी एक उमेरिये छी तँए रोगो -बियाधि तँ ओहने ने धड़त।

मने-मन सुगिया काकी वौआइते छेली कि वरस्पैत कक्काक आवाज सुनली।

ओना वरस्पैत काका ओछाइन छोड़ि उठि गेल छला, तहूमे गाममे बिजली आबि गेने देहक पानिमे सेहो कनी-मनी करेन्ट आबिए गेल छेलैन। ओछाइनपर सुतले-सुतल सुगिया काका बजली-

"दिन-रातिक वसन्त वेलमे किए औनाइ छी?"

अपन मनक बाट पकैड़ वरस्पैत काका शेष जिनगीक दिशामे दिशा ताकए चाहै छला तँए पत्नीक बातकेँ नीक जकाँ अँगेज नइ सकला।

अपने बेथे बेथाएल बेकती जकाँ वरस्पैत काका सामाजिक जिनगीमे पएर रोपए चाहै छला। तँए विचारसँ लऽ कऽ समाजक सम्बन्धक क्रिया धरि संलग्न करबाक छैन। नोकरिहारा जिनगी रहने एते तँ भइये गेल छेलैन जे गाममे नइ रहने छुतको केश आ सराधो-बिआहक भोज छुटि गेले छेलैन जइसँ सामाजिक सम्बन्धमे सेहो कमी आबिये गेल छेलैन।

वरस्पैत काका बजला-

"औनाइ कहाँ छी, पौनाइ तकै छी। दुनू गोरेक बीचक जिनगीक बात अछि किने, तँए दुनू गोरे जँ विचारि नइ चलब तँ सदिकाल दुनू परानियोंमे खटपट होइते रहत।"

जिनगीक अलिसाएल (माने अठबजिया सुति उठनिहारि) देह, मुदा पतिक विचार तँ सेहो दोसर पाशापर छेलैन्हे। अँघस-मँघस करैत सुगिया काकी उठली। उठि तँ गेली मुदा मनमे होनि जे कनीकाल आरो ओछाइन धेनहि रहितौं...।

अपन ऐगला जिनगीक ओहन रूप वरस्पैत काका बनबए चाहै छला जेना समाजमे समाज बनि समाज रहैए। मुदा समाजो तँ समाज छी। सनातनी धारामे बहैत नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधलाकेँ अपन धारमे गलित-पचित करैत अनवरत बहैत आबि रहल अछि आ आगूओ बहैत रहत। भलेँ गदियाएल बेसी हुअए कि मटियाएल। मुदा वरस्पैत काका तँ नीतिशास्त्रक विद्यार्थी, विद्यार्थी जीवनसँ शिक्षक धरि रहला तँए मन बेसी ओम्हरे लटकल रहैन। ओना ई बात वरस्पैत काकाकेँ बुझल छैन जे नीति, रीति, गीत, मीत आ हित समय आ स्थानक अनुकूल चलैए। जँ से नइ चलैत तँ गीत गीते छी जे नीके लगैए मुदा समय-स्थानक भेद भेने किए कोइलीक स्वर कौआक भऽ जाइ छइ?

ओछाइनपर पड़ल सुगिया काकीक मन अग-दिगमे पड़ल छेलैन। जँ उठै छी तँ अपन सुखक नीन जाएत आ जँ नइ उठै छी तँ पतिक

पतिपना जाएत। तहूमे काल्हिये सेवा निवृत्ति भेला अछि, लगले कहता जे जाबे कमाइ छेलौं माने नोकरी करै छेलौं आ हाथमे हरियरका कड़कड़ौआ नोट दइ छेलिऐन ताबे कमासूत पति छेलिऐन आ सेवा-निवृत्त होइते बोल-कहल भऽ गेली!

सामंजस करैत सुगिया काकी बजली-

“अखन ऐ अधरतियामे केतए जाएब! आउ, अही ओछाइनपर बैस जिनगीक सूत्रधार जकाँ अपनो दुनू गोरे सुतियाउ।”

ओना पत्नीक जे आग्रह छेलैन से वरस्पैत काका नइ बुझि पेला। तेकर कारण भेलैन जे पत्नीक पहिल शब्द जे ‘अधरतिया’ छेलैन, तेहीक वेद-भेद करैमे ओझरा गेल छला। जइसँ ओछाइन तक अबैत-अबैत धियाने हटि गेलैन।

वरस्पैत काकाकेँ मनमे उठल छेलैन ‘अधरतिया’ की भेल? यएह ने भेल जे जँ छह बजे सुर्यास्त होइए आ दोसर दिन छह बजे सुर्योदय हएत, तेकर बीचला सीमान बाहर बजे राति भेल। बाहर बजे रातिक पछाइत ने राति छोट होइत जाएत जइसँ अधरतिया बनत। अखन तँ रातिये राति ने राति चलत। मुदा भोरक उदय आ रातिक अस्त सेहो तँ एकटा सीमाने भेल किने। तैबीच जखन राति खटिया कऽ आधापर औत तखनो ने अधरतिया औत..?

मनक ओझराएल विचारकेँ सोझरबैत वरस्पैत काका बजला-

“बड़बढ़ियाँ कहलौं। अहूँ उठि कऽ बैसू आ हमहूँ बैसै छी।”

नइ चाहितो सुगिया काकी उठि कऽ बैसैत बजली-

“अहाँ सिरमा दिस बैसब आकि गोरथारी दिस?”

पौरुकी जकाँ जे तीन बजे भोरे घुटैक-घुटैक अपन मेदिनकेँ जगबैए आकि मेदिने घुटैक-घुटैक मेदकेँ जगबैए से तँ पौरुकीए जानए,

मुदा वरस्पैत कक्काक मन अपन ऐगला जिनगीक सूत्रपात करैमे ओझराएल रहैन।

बजला-

“दुनू परानीक बीच जेहने सिर तेहने गोर, तइले अनेरे किए बातकेँ बतंगर बनबै छी।”

बजैक क्रममे वरस्पैत काका बाजि तँ गेला, मुदा लगले मन पाछू घुमि छछाड़ी काटए लगलैन जे जेहने दुनियाँक रीति -प्रीत अछि तेहने तँ बेरीतो आ बेप्रीतो अछिए। किए कियो केकरो दस थापर मारि मनकेँ शान्ति दइए? जखन कि सभ बुझै छी जे विचारक मिलानसँ शान्ति अबैए, तहिना ने प्रेमी-प्रेमिकाक बीच प्रेम सेहो शान्ति दइए...।

अपन विचारमे वरस्पैत काका डुमल रहैथ तँए मुहोँ बन्न रहैन आ ओछानिक कातमे ठाढ़ो रहैथ।

पतिकेँ चुपचाप ठाढ़ देखि सुगिया काकीक मनमे शंका भेलैन जे भरिसक मने-मन मन्हुआ ने तँ रहल छैथ। पति-पत्नीक बीच जँ पति मन्हुआ कऽ महुरा जाथि सेहो पत्नीक लेल उचित नहियेँ भेल। तखन तँ ई भेल जे पतिक अनुकूल पत्नी नइ छैथ वा पतिकेँ अनुकूल बनबैक कला पत्नीकेँ नइ छैन। अपनाकेँ पाछू दिस घुसकबैत सुगिया काकी बजली-

“एकटा बात बुझलिऐ?”

जिज्ञासा करैत वरस्पैत काका बजला-

“की?”

मुस्की दैत सुगिया काकी बजली-

“स्वतंत्र जिनगीक पहिल राति दुनू परानीक छी ?”

‘स्वतंत्र जिनगी’ सुनिते वरस्पैत कक्काक मनमे गंगा-लहरिक ओ मौज जे जमुना धार होइत बहैए, भेटलैन। मुस्कान भरैत वरस्पैत काका

बजला- “सहए ने कहए चाहै छी!”

कहि वरस्पैत काका पत्नी लगसँ सहटैत अपन ओछाइन दिस बढ़ला। ओछाइन लग अबिते औनाइत मनमे उठलैन जे जँ कियो जिनगीक सुत्रधारमे संगी होएत तँ जरूर जिनगीक दिशा निरंतर संग होएत। मुदा घरक जखन पत्नियोँ सएह छैथ तँ पड़ोसी आकि बहरबैया अखन भेटबे किए करता। ओहू वेचारा पड़ोसीक मनमे हेबे करतैन किने जे काल्हिये वरस्पैत गुरुजियाइसँ सेवा निवृत्त भेला अछि, धएल-उसारल लऽ कऽ एबे कएल हेता, जँ पेशावो करैकाल ओमहर ताकब तँ दुनू परानीकेँ मनमे हेबे करतैन जे रतिचर छी। जँ दुनू परानीक बीचक गप -सप्प रहैत तँ गोनू झाक चोरो पकड़ब होइत। मुदा सेहो नहियेँ अछि।

ओछाइनिक कातमे ठाढ़ भेल वरस्पैत काका कुशेश्वर स्थान जकाँ हेरा गेला। माने ई जे जैठाम एक नइ अनेक धारक मिलान होइए। धारक पेट भलेँ हटलो-हटल किए ने होइ मुदा बाढ़िमे उफान एलापर सभ सभमे मिलिये जाइए। तँए कुशेश्वर स्थानक भवलोक तँ अगम अछिए।

..ओना, चण्डेश्वर स्थानमे सेहो सुपेन धार अछि, मुदा एक तँ जुति-भाँतिमे ओछ आ दोसर समूह नहि, असगरुआ अछि। तँए अपन ताले-मात्रा केते देखा सकैए। बड़ करत तँ धरतीसँ सटल ट्यूवेलकेँ डुमौत , मुदा पानियोँ पीबकेँ नहियेँ रोकि सकैए। धरतीसँ भरि छाती ऊपर उठा चबुतरा बना लोक पानिक जोगार कइये लेत आ चापाकलक पानि पीबे करत। मुदा कुशेश्वर स्थानमे धारक पानि बेराएब ओते असान अछि जे कोसी-सँ-कमला धरि आ करेहसँ तिलजुगा धरिक धारक पानिक संग मिलि हेलबो करैए आ समुद्री बाट पकैड़ चलबो करैए...।

कछमछ करैत वरस्पैत काकाकेँ किछु फुरबे ने करैन जे की केने की हएत। अखन धरि किताबक ने कीड़ा बनि चटलौं मुदा समाजोक बीच तँ कीड़ा अछिए। ओकरा केना पकैड़ पएब..?

अपन बीतल समय माने दुनू परानीक साठि बर्ख तँ वरस्पैत काकाकेँ आधा-छिधा मनो पड़ैन मुदा आगूक जे मृत्यु धरिक शेष जिनगी अछि, से बुझिए-मे ने अबैन। बुझबो धिया-पुताक धूरा-माटिक खेलो नहियेँ छी। ओना किताबी बोध भेने आगू-पाछू दुनूक नक्शा मोन पड़ैन मुदा नक्शाक नक्शा केना बनत, जाबे नक्शा नै बनत ताबे नक्काशी केना आबि पौत? ऐठाम आबि वरस्पैत कक्काक मन घुरिया जाइन। तँए ने पुनः ओछाइनपर पड़ला आ ने आन दोसरसँ गपे-सप्प कऽ सकला।

किरिणक लालिमा अकासमे पसरल। वरस्पैत काका बुझि गेला जे आब पौह फाटि रहल अछि, दिनक आगमन लगिचा गेल...।

वरस्पैत काका पत्नी लग जा बजला- "आब की कोनो नोकरीक जिनगी रहल जे आठ बजे तक ओछाइने धेने रहब। जाबे हम मुँह-कानमे पानि लइ छी ताबे अहूँ चाह बनाउ।"

ओना, सुगिया काकीकेँ सेहो चाह पीबैक इच्छा जगैत रहैन मुदा कोढ़िया लेल जहिना गंगा दूर अछि तहिना सुगियो काकीकेँ रहैन। तैयो वेचारी पतिक बातकेँ आदेश बुझि चाह बनबए उठली।

चाह बनल। दुनू परानी चाह पीविते रहैथ कि पड़ोसीक एकटा दस-बारह बर्खक कन्याँ रस्ते-रस्ते दौड़लो जाइत आ बजबो करैत-

"सुमित्रा बहिन सीमा कातमे बैसल छथिन।"

ने ओ लड़की वरस्पैत काकाकेँ आकि सुगिया काकीकेँ किछु कहलकैन आ ने इहए दुनू गोरे किछु पुछलखिन।

लड़कीक मनमे भेल जे भऽ सकैए जे जखन गामेमे बीआ-वान भेल अछि तखन माए-बापक कानमे केतौ नहि गेल होनि, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

सुमित्रा वरस्पैत कक्काक बेटी। मुदा बेटीक रूपमे अखन तक

वरस्पैत काका सीमा कातमे बैसल सुमित्रापर विचार नइ केने छला। तँए मनमे भेलैन- गामे छी, केतेको लोकक नाओं सुमित्रा हएत।

दोसर, ईहो भेलैन जे बेटी-जातिक लेल ने नैहर-सासुर अबै-जाइक विधि-विधान अछि, तइसँ हटल सेहो अछिए, तँए अखन तक दुनू परानीक मनमे ई नइ उठल छेलैन जे हमरे बेटी सुमित्रा छी।

ओना अखन धरि सुगिया काकी उड़न्ती सुनने छेली, तँए उड़न्तीकेँ घरनी रूपक भाँजमे छली। मनमे एहेन विचारो केना जगितैन जे एकटा प्रशासनिक अफसरक परिवारमे–माने वरस्पैत कक्काक ओ बेटी प्रशासनिक अफसरक पत्नी छथिन–एना हएत। तँए एहेन विचार मनमे अबै ने दैन। एबो किए करितैन, जे जिला-जवारक भार उठा चलैबला अछि ओ परिवारमे लुल्हो-नाँगर केना भऽ सकैए। तही बीच अलोधनी काकी जे सुगिया काकीसँ उमेरदार छथिन, आबि कऽ सुगिया काकी लग बजली-

“कनियाँ, छोटकी बेटी आबि कहलक जे ‘वरस्पैत कक्काक सुमित्रा बेटी सासुरसँ अधरतियेमे निकैल माए-बाप ऐठाम आबि गेली.!”

तैबीच टोलक दस-बारहटा अबोध-सँ-सबोध धरिक लड़की आँगन पहुँच गेली। आँगनक सीमामे सभकेँ प्रवेश करिते सुगिया काकीक नजैर पड़लैन। तैबीच सुमित्रा रस्तेसँ ठोह पाड़ि कनैत आबि रहल छेली।

ओना गाम-घरमे कननिहारो कम नहियेँ अछि, कियो दुखे आ कियो सुखे मुदा कनैत तँ सभ अछिए। तँए कियो अनका कानबपर किए धियान देत। अहीं कहू जे ‘कन्याँदान’ सन समाजक कृति, दान-दहेज बेर माने बेटीक बिआह काल सभ डिरिआइ छी, मुदा छुच्छे डिरियेनौं तँ नहियेँ हएत। पढ़ल-लिखलसँ बिनु पढ़ल-लिखल धरिक लोक, किए ने बुझि पेब रहल छैथ जे परिवार-समाजक संस्कारसँ जुड़ल प्रमुख समस्या अछि, जैपर परिवार-समाजक नीब ठाढ़ अछि?

जहिना बाघक आँखिपर आँखि पड़ने बघजर लगि जाइए तहिना सुगिया काकीकेँ सुमित्रापर पड़िते भेलैन। बघजर लगिते सुगिया काकी अचेत भऽ खसि पड़ली। खसला पछाइतो मनमे बेर-बेर उठैत रहैन जे ई की भेल.! एना किए भेल..?

ओना, ई सुगियो काकी आ वरस्पैतो काकाकेँ बुझल छेलैन जे दस बर्ख पूर्व जमाए दोसर बिआह कऽ नेने छला, जे अन्तर्जातीय छल।

जहिना कानक गुज्जी निकालै-काल गोटे बेर रूइया कानेमे अँटैक जाइए आ कटकी निकैल जाइए, आ तखन वएह रूइया केते भारी कानकेँ लगै छै, से भुक्तभोगिये ने जनै छैथ मुदा रूइया सन हल्लुक वौस रहितो, एते भारी कानमे केना लगैए जे ठेकी जकाँ सुनबे बन्न कए दइए तहिना अँगनाक दृश्य भऽ गेल।, जे बच्चा-सँ-सियान आ चेतन-सँ-बुढ़ धरिसँ भरिया गेल छल। जेते मुँह तेते बोल...।

वरस्पैत काकाकेँ सुमित्रा बेटी लग पहुँचैक साहस नहि भेलैन जे किछु पुछितथिन। ओसारक खाम्ह लगा ओंगैठ कऽ बैस अपन जिनगीकेँ निहारए लगला। भूल केतए भेल आ चूक केतए भेल? जा भूल-चूक नइ भेल ता एहेन दृश्य उपस्थित किए भऽ रहल अछि।

ओना वरस्पैत कक्काक मन समस्याक हिसाबे भरियाएल नहियेँ रहैन, तेकर कारण ई जे मनो तँ मन छी, अधमनीसँ डेढ़ मनी धरि होइत अछि...। ओहन मन ने बेसी भरिया जाइए जे समस्याक भारीपनकेँ बेसी देखैत हुअए, मुदा जे ओइ भारीपन के देखबे ने करत, ओ ओकर भारीपन बुझिए केना पाबि सकैए। वरस्पैत कक्काक जिनगीमे ओहन परिस्थितिये ने बनल जे ओइ गहराइक तह तक पहुँच पेबतैथ।

खाम्हमे ओंगठल वरस्पैत कक्काक नजैर सुमित्रापर गेलैन। पैंतीस बर्ख पूर्व सुमित्राक जन्म दोसर सन्तानक रूपमे भेल। ओना गाम-गामक अपन-अपन समाज चलिये आबि रहल अछि। कोनो गामक समाजमे

कोनो जातिक वाहुल्य अछि तँ कोनोमे कोनो जातिक, जइ समाजक माने जइ जातिक वरस्पैत काका छैथ, ओ अल्पसंख्यक जातिक समाज अछि। एक-दू घर दसटा गाममे गनि-गूथि कऽ अछि। समाजक सम्बन्धक एकटा कारण ईहो ऐछे जे जेतेक दूरमे बेटा -बेटीक बिआह-दान होइए ओतेकक बीच सामाजिक सम्बन्धक एक रूप-रंग सेहो बनियेँ जाइए। तँए सनातनी धारामे अबैत समाज टुट-नफा होइतो बहिये रहल अछि।

जइ समाजक वरस्पैत काका छैथ, ओइ समाजमे दस बर्खक कन्याँ होइते बिआहक योग्य मानल जा रहल अछि। समुचित पद्धतिक अनुकूल लड़का-लड़कीक उमेरक हिसाबमे सेहो एकरूपता हएब जरूरी अछिए। जँ से नइ हएत तँ विधवाक बाढ़ि जोर पकड़बे करत। ओना विधवाक बाढ़ि जोर पकड़नहि अछि तेकर कारण आन-आन, अछि।

तेरह बर्खक सुमित्राक बिआह सत्तरह बर्खक दीनबन्धुक संग भेल छेलैन। ओना कौलेजमे पढ़ैत दीनबन्धुक मनमे तत्वनात् बिआह करैक विचार नइ रहैन, मुदा देखो-देखी आ समाजक चलैनक अनुकूल सेहो दीनबन्धु विरोध नइ कऽ सकल।

बिआहक तीन सालक पछाइत दुरागमन भेलैन, तइ बिच्चेमे दीनबन्धु नोकरी लेल प्रतियोगिताक परीक्षाक तैयारी सेहो पूरा कऽ लेलैन। परीक्षामे नीक रिजल्ट भेलैन, प्रशासनिक अफसरक बाट प्रशस्त भेलैन।

दुरागमनक पछाइत सुमित्रा सासुर एली। एक तँ किसान परिवार , दोसर पाछूसँ अबैत परम्पराक बीच सुमित्रा अपन जिनगी बितबए लगली।

ओना दीनबन्धुक प्रेमक अँकुर विलासनीक संग ट्रेनिंगे समयमे अँकुर गेल रहैन। मुदा ओ प्रेम, संगी-साथीक रूपक छेलैन। ट्रेनिंग केलाक पछाइत एक्के जिलामे दीनबन्धुओ आ विलासनियोँ पदस्थापित

भेलैथ। पदस्थापित भेला पछाइत दुनूक बीच संगीक रूप छल। दुनूक जातियो दू अछि। अरवन धरिक अबैत विचारमे जातिक दूरी मनमे बनले छेलैन।

ओना जइ जातिक दीनबन्धु छैथ, ओइ जातिमे एकसँ बेसियो बिआह करैक चलैन जकाँ बनियेँ गेल अछि। माने ई जे जेते गाममे दीनबन्धुक जाति छैन, प्राय: सभ गाममे एकाध गोरे एहेन छैथे जे दू-तीन-चारि-पाँच बिआह केनहि छैथ। ओना परम्परानुकूल एक-पुरुखकेँ एक नारीक संग बिआहक चलैन अदौसँ आबि रहल अछि, मुदा पुरुखक लेल एकसँ बेसी बिआह करब एक्की-दुक्की अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

तइसँ भिन्न विलासनी जातिक अछि। विरले एहेन अछि जे एकसँ बेसी बिआह केने छैथ। ओना, परिवार चलैक लेल केतौ-केतौ एकसँ बेसी बिआहक खगतो अछिए। जेना पहिल पत्नी माने बिआही कनियाँ जँ कोनो कारणे निसन्ताने मरि गेली, वा बाँझपन छैन वा कोनो एहेन रोगसँ ग्रसित छैथ, जइसँ जिनगीक भरोस उठि रहल अछि। एहने-एहने कारणे विलासनीक जातिमे विरले एकसँ बेसी बिआह होइत अछि।

नव परिवेशमे जातिक सम्बन्धमे किछु ढील-ढीली, छुटपन आबिये गेल अछि। गामो-समाज तँ गाम-समाज छी, प्रेमक सेहो अपन आँखि होइते अछि। ओना आँखियो तँ आँखि छी, जे केतौ छिछड़पन अछि तँ केतौ गढ़पन सेहो अछि। छिछड़पन भेल उमेरक उमंगमे बहब आ गढ़गर भेल गुण-विशेषक आकर्षण।

जहिना दीनबन्धु बी.ए. ऑनर्स अर्थशास्त्र विषयसँ केने छैथ तहिना विलासनी सेहो अर्थशास्त्रेसँ बी.ए. ऑनर्स छैथ। विषयो विषयक तँ अपन छाप पड़िते अछि। एक रंग हाइयो स्कूल वा कौलेजोमे रहितो विषयवार-प्रभाव नइ पड़ैए सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। ओना भाषाक

रूपमे साहित्य सेहो दुनू गोरे कौलेज तक पढ़ने , मुदा भारतीय साहित्यक अपेक्षा अंगरेजी साहित्य बेसी। ओना अंगरेजी साहित्य पढ़ैक पाछू दुनूक मनसा यएह रहैन जे प्रशासनिक परीक्षा पास करब। ओना अर्थशास्त्रक प्रभाव दुनूक मनकेँ बेसी पकड़ने रहैन। जइ दुआरे प्रतियोगिता परीक्षामे पूर्णरूपेँण अर्थशास्त्रो रखनहि रहैथ।

गनले-गूथल प्रशासनिक अफसर जिलामे अछिए। तहूमे जे लगक रहता हुनकेसँ ने भेँटो-घाँट आ गपो-सप्प हएत। ओना, सरकारी सेवामे काजोक सम्बन्ध बनियेँ जाइए। सएह सभ कारण दीनबन्धुओ आ विलासनियोँक बीच भेबे कएल।

आजुक परिवेशमे देशक बहुतो जगह एहेन ऐछे जइमे प्रशासनिक सेवाक रूपेँ बदलल जा रहल अछि आ वेपारीक रूप बढ़ल जा रहल अछि। साधारणो अफसरक लेल करोड़क खेल चलिये रहल अछि।

नव पीढ़ीक उदीयमान शक्ति जे अनेको विषयक अध्ययन कऽ रहल अछि, ओकर इतिहास देखि रहल अछि। तैठाम मनुक्खेक इतिहास छुटि जाए, सेहो तँ सम्भव नहियेँ अछि। विकास प्रक्रियामे आजुक परिवेशक इतिहास की कहि रहल अछि, ओ प्रशासनिके अफसर नइ बुझैथ तँ दोसर बुझिये के सकैए?

दीबन्धुओ आ विलासनियोँ एक-उमेरिया घोड़ा जकाँ सरपट चालिमे दौड़ए लगलैथ। ओना दीनबन्धुक बिआह आ दुरागमन दुनू भऽ गेल छेलैन, मुदा किसान परिवार आ नोकरिहारा परिवारक बीचक जे खाधि सभ अछि, ओइ खाधिमे एकटा ईहो तँ ऐछे जे जँ पच्चीस बर्खक बेटा-पुतोहु अपन घर बसौता आकि माता-पिताक घरवास करता? प्रश्न तँ अछिए। खाएर जे अछि, मुदा दीनबन्धु अखन तक परिवारक संग माने पत्नीक संग नइ रहला।

ओना विलासनियोँक उम्र चढ़ि कऽ डम्हा गेल छेलैन मुदा छेली

अविवाहित। प्रश्न एहेन उठि गेल जे कन्याँ-जोकर बरे ने भेटैए। सरकारियो शासन कमजोरे अछि जे गनि-गनि ओकरा जोड़ा लगबै ने अबै छइ।

अपन रंगीन भविस देखि दुनू बिआह कऽ लेलैन। ओना जातीय संस्कार दीनबन्धुक सोल्हैनी नइ मेटाएल छेलैन मुदा घोड़ा हौउ कि घोड़ी, लगाम तँ लगौले जाइए। तइ सीमामे दीनबन्धु छिछैल जाइ छला। जइसँ लगाम विलासनियेँक हाथमे रहलैन। तहूसँ जबरदस दीनबन्धुक मनकेँ ई दबने रहैन जे जइ वादाक संग विलासनीक संगी बनल छी तइ वादाक अनुकूल तँ सुमित्राकेँ बिनु पतिक सासुरे बसए पड़तैन..! खाएर.., भेबो सएह कएल।

मुदा समाजो तँ समाज छी। दीनबन्धुक पिता–सोनाइ–केँ समाज सलाह देलकैन जे अखन अपनो दुनू परानी हट्टा -कट्टा छीहे मुदा नारीक तँ ई उम्र नारीत्व प्राप्त करक छिऐन। तँए अपने पुतोहुकेँ बेटाक डेरा पहुँचा दियौन।

एक तँ जुआनीक लहैर, तैपर कुरसीक धाह दीनबन्धुकेँ रहबे करैन, पत्नीक संग पिताकेँ सेहो देखलैन।

ओना अखन तक दीनबन्धु विलासनी लग ई चोरौने रहला जे सुमित्राक संग विवाहित छी। तँए चोटाएल गहुमन साँप जकाँ आँत ममोड़ि चुप भऽ गेला।

एक नारीक जिनगीकेँ देखि विलासनी ससुरकेँ कहलैन- “जखन अपन लोक छैथ तखन किए ने रहती?”

ओना विलासनीक विचार सोझगर छेलैन, मुदा मनमे रहैन अपनाकेँ चुल्हि-चौकाक कारिखसँ बँचाएब।

सोनाइक नजैर दीनबन्धुपर पड़िते विलासनीपर चलि जाइन। नजैर जाइते मनमे खौंझ उठि जानि, अपन परिवारक ई गति। एक तँ

समरथाइयोमे कियो केकरो भार नइ लिअ चाहैए, तैठाम तँ हम पचास टपि गेल छी।

जिनगीक टुटैत धारमे सोनाइक टुटैत विचार भँसिया रहल छेलैन। अन्हार, दुनियाँक चारूकात अन्हार , की यएह छी मनुक्खक जिनगी..?

जिनगीक पछाड़मे पछड़ैत सोनाइ विलासनीकेँ कहलखिन-

“परिवारक रत्न पैदा करैवाली सुमित्रा छैथ, नोकरनियोँ बनि जँ रहती तैयो अपन परिवारक सुख हेबे करतैन।”

धीरे-धीरे लोकक भीड़ कमए लगल। जेना-जेना लोकक भीड़ कमल तेना-तेना सुगिया काकीक मन सेहो हल्लुक हुअ लगलैन। अन्तो-अन्त टोलबैयासँ ऑगन खाली भेल। खाली होइते सुमित्रा वरस्पैत काका लग पहुँच, पएर पकैड़ कानैत बजली-

“पिताजी, हमर नारीत्व नइ भेटत?”

वरस्पैत कक्काक दुनू आँखिसँ अन्हार रातिक वरिसैत वादल जकाँ नोरक टघार चलिते रहलैन। मुदा उपाइए की? अपन दोख मेटबैत वरस्पैत काका बजला-

“हमर कोन दोख।”

बाजैक क्रममे वरस्पैत काका बाजि गेला। मुदा लगले मन रोकैत कहलकैन-

“तखन दोख केकर?”

जिनगी भरि वरस्पैत काका नीतिशास्त्रक विद्यार्थी, शिक्षक रहला मुदा समाज जे घृणित अनीतिमे बहि रहल अछि, ओकराकेँ सम्हारत। मुदा मनुक्ख एक रहितो विचारो आ बेवहारोमे हटल-हटल अछिए। वरस्पैत काका विद्यालयमे शिक्षण वृत्तिसँ जुड़ल रहला तँए समाजक रीति-नीतिसँ हटल नइ रहला सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

जहिना हवामे करवनो-करवनो झोंक अबैए तहिना वरस्पैत कक्काक मनमे रहि-रहि कऽ झोंक उठैत रहैन, मुदा अपना लग अबैत-अबैत झोंकक झोंकी झूकि जाइन। फेर झोंकाएल मनक नजैर पड़लैन - समाजक दर्पण अपन साहित्यपर। यएह दर्पण साहित्य छी? अही साहित्यसँ सबहक हित हएत?

मुदा अपना लग अबैत-अबैत वरस्पैत कक्काक अपने मन दुतकारि दैन जे समाजक सन्तान रहनौं समाजसँ दूर रहलौं, जँ समाजक संग रहितौं तँ केतौ-ने-केतौ हमरो जगह तँ रहबे करैत। समाजक बुधिजीवी श्रेणीक रहितो हम केतए छी?

नीक जकाँ वरस्पैत कक्काक मन थीरो ने भेल छेलैन कि दोसर उमकी चढ़लैन। उमकी चढ़िते मुँह फुटलैन-

"समाजेक सन्तान ने हमहूँ छी आ हमरो ने समाज छी, तैठाम हमरा सन लोकक विचारक अँटावेशो तँ समाजे ने करत?"

वरस्पैत कक्काक आगूमे ठाढ़ पैंतीस बर्खक नि:संन्तान बेटी अपन जिनगी देखि रहल अछि। मने-मन वरस्पैत काकाकेँ कूहि होइ छेलैन, मुदा के कूहि रहल अछि आ के कुहा रहल अछि से वरस्पैत कक्काक मनमे एबे ने करैन।

अनमनस्यक भेल वरस्पैत काकाकेँ देखि सुमित्रा टोकलकैन-

"बाबूजी, पिता तँ अहीं छी किने! अपन बेथा केकरा कहब ?"

ओना वरस्पैत काका बजैमे पीछराह सभ दिन रहला, तँए बजैक क्रममे कहियो नहि चुकला। तहूमे बेथाएल-सोगाएल पैंतीस बर्खक ओहन बेटी जे नारीत्वसँ हारि रहल छैन, संग-संग जिनगीक पछाड़ सेहो छैन्हे। बेटी छी से विधाताक डायरीमे सेहो अंकित अछि, मनुक्खक जीवनक सार्थकता सेवासँ होइ छै, माए-बापक सेवासँ पैघ धर्म ओहन नारीक लेल नहि अछि जे पतिव्रतसँ वंचित हुअए।

वरस्पैत कक्काक भाव-विचार देखि-सुनि सुमित्राक मन जेना पुलकित भेल। पुलकित होइते पुलैक कऽ बजली-

“पिताजी..?”

‘पिताजी’ सुनि वरस्पैत कक्काक मन चौंकलैन। बजला-

“बेटी, चरेवेति-चरेवेति वेदवाक्य अछि। जे जिनगी चलायमान रहल वएह जिनगी जिनगी छी। जाबे जीब ताबे तोरा बिसरबह नहि।”

सुमित्रा जइ मने बाजल होथि, मुदा वरस्पैत कक्काक मनमे भेलैन जे बड़का धसनाक तरमे पड़ि गेलौं। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे कोनो सन्ताप मनुक्खकेँ जीते जिनगी होइ छै, तँए कोनो सन्तापसँ तखने बँचि सकै छी जखन ओइ सन्तापितकेँ ता-जिनगी पकड़ने रही जा जिनगी रहए। समयक हवा कखनो आगूओ दिस झोंकैत आ कखनो पाछूओ दिस, जइसँ ओकर गति-विधिमे उतार-चढ़ाव अबिते अछि। मुदा मनुक्ख तँ मनुक्ख छी। हवा-बिहाड़िकेँ अनुकूलो बना सकैए आ ओकरा मोड़ियो सकैए। मुदा प्रश्न तँ सामूहिक छी। सामूहिक समस्याक समाधान तँ समूहे ने कए सकैए। जँ ओकरा बेकतीगत रूपमे कएलो जाएत तँ ओ समूहक बीच हेराएले रहत। जँ से नहि रहैत तँ की हमरा सिर जे बरिसल अछि ओ दोसराक सिर नहि बरिसत, सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए...।

विह्वल होइत वरस्पैत काका सुमित्राकेँ पुछलखिन-

“बुच्ची, सत-सत कहह जे जिनगीक सुखसँ वंचित छह आकि जिनगीक सुख भेट रहल छह?”

पिताक प्रश्नसँ सुमित्रा तिलमिला गेली। तिलमिला ई गेली जे जिनगीक सुख की? जहिना गाछो-बिरीछ आ लत्तियो-फत्तीमे एके गाछमे हजारो मुड़ी रहैए, सभ मुड़ीकेँ अपन-अपन खगता छै, जइसँ ओ लहटगर बनि बढ़बो करैए आ फुलेबो-फड़बो करैए। तहिना ने मनुक्खोक जिनगी अछि। ओना कहैले मनुक्खकेँ एकेटा मुड़ी होइ छै मुदा से नहि।

जिनगीक बढ़ैत क्रममे हजारो-लाखो मुड़ीक सृजन होइ छै आ ओकर भरण-पोषनक पाछू लोक हाल-बेहाल रहैए...।

पिताकेँ की उत्तर सुमित्रा देती, से स्पष्टे ने भऽ रहल छैन।

तैबीच सुगिया काकी सेहो आँखिक नोर आँचरसँ पोछैत वरस्पैत काका लग पहुँचली।

माएपर नजैर पड़िते सुमित्राक नजैर निच्चाँ उतैर अपन मातृत्वपर गेलैन। मुदा समाजो तँ समाज छी। मर्यादा अमर्यादाक विचार करैबला।

लड़खड़ाइत-लटपटाइत सुमित्राक मुहसँ निकलल- "बाबूजी, नैहर-सासुरमे किछु अन्तर तँ अछिए?"

सुमित्राक बात सुनिते वरस्पैत काका सहमला। सहैमते मनमे उठलैन, बेकती-बेकती मिललासँ समाज बनबो करैए आ हटलासँ टुटबो करैए, जेहेन समाज निरमित हएत तेहने ने ओकर आचार-विचार आ बेवहारो बनत। मुदा से बनाएब ओतेक असान कहाँ अछि? जैठाम प्रतिदिन विकृति मनुक्खक निर्माण होइए तैठाम सुशिष्ट समाज केना बनि पौत? ओना बोली-चालीक क्रममे वास्तविक जिनगी किए ने सटल हुअए मुदा बेवहारिक रूपमे हजारो कोस हटल नइ अछि सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मन-वचन-कर्मक एक सूत्रवाक्य किए ने हुअए मुदा तीनूक दूरी अकासो-पतालसँ बेसी हटल अछिए।

अकास-पतालक बीच वौआइत वरस्पैत कक्काक मन अँटैक गेलैन। अँटैकते मन कलशलैन। कलैशते बेटी सुमित्रापर नजैर पड़लैन। नजैर पड़िते बुझि पड़लैन जे यमुना धार जकाँ जमुनियाँ नोर बेटीक नयनसँ निकैल पितासँ किछु याचना करए आएल अछि। मन पघिल गेलैन। पघिलते फुटलैन-

"जहिना हम मनुक्ख छी, तहिना ने सुमित्रो अछि। सबहक अपन-अपन जिनगी आ अपन-अपन जिनगीक लीलाक संग विचारो-विवेक

अछि, तैठाम बलउमकी बलबा सेहो नीक नहियेँ अछि, मुदा प्रश्नो तँ जिनगियेक छी। जँ मनुक्खकेँ जिनगीए नहि तखन ओ पशुवत छोड़ि ऐछे की?"

वरस्पैत कक्काक मन जे अखन तकक जिनगीमे घोड़-दौड़ रूपेँ चलै छेलैन ओ एकाएक ठमैक गेलैन। ठमैकते बुझि पड़लैन जे मुरदा जकाँ अस्सी मन पानि शरीरमे आ नबे मन जारैन शरीरपर लदि गेल अछि। मुदा उपाइये की अछि?

ठमकल मनसँ ठीठैक कऽ विचार निकललैन-

"मनुक्ख-मनुक्खक सहयोगी तँ भइये सकैए। मुदा जेतबे धरि अपन सीमा अछि तेतबे धरि ने नाचत। हमहीं सुमित्राक पिता छिऐ , जँ हमरे हाथ-पएर टुटि जाएत तँ सुमित्रे की हमर देहक दुख छीन सकैए ? ओ तँ अपने ने भोगए पड़त? अखन आँखि तकै छी तँए सन्ताप बुझि पड़ैए, आ जँ आँखि बन्न रहैत तखन देखबे की करितिऐ?"

मुदा लगले वरस्पैत कक्काक मनमे ईहो उठलैन जे जँ बेटीक दर्द बाप नइ बुझै आ बापक दर्द बेटी नइ बुझै तखन दुनूमे सामंजसे केना भऽ सकैए? रहल अपन कर्तव्य से तँ काजेसँ देखल जाएत। ओकर क्षेत्र तँ खाली विचारे धरि नइ अछि। ओ तँ बेवहारमे सेहो अछिए।

..भटकैत विचारक बोनमे वरस्पैत काका अँटकैत बजला-

"बेटी, जहिना अखन धरिक जिनगी घर-सँ-बाहर बीतल मुदा तैयो परिवारक सेवा करैत रहलौं , तहिना आगूओ ताधैर करैत रहब जाधैर तोरा सन जिनगी समाजमे बेटीकेँ भेटैत रहत।"

बजैक क्रममे वरस्पैत काका एकसूरे बाजि गेला मुदा बजला पछाइत जखन पाछू उनैट तकलखिन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना अपने बिनु सींग-नाँगैरक छी तहिना तँ समाजो अछि। केकरा कहबै के सुनत? लोको तँ लोके छी। बेटाक बिआहमे राजा बनि जाइए आ बेटीक

बिआहमे भीखमंगा जहिना बनि जाइए तहिना ने केतौ जातिक समाज तँ केतौ गामक समाज सेहो बनिते अछि।

बेथासँ बेथित पतिक मुँह देखि सुगिया काकी सामंजसमे बजली-

"जइ सोगे सोगाएल छी आकि जइ बेथे बेथाएल छी ओ ने कोनो सोग छी आ ने बेथा। जाबे आँखि तकै छी ताबे आँखिक सोझमे सुमित्रो रहत। जिनगीक कोनो ठेकान अछि जे पहिने के आँखि मूनब।"

पत्नीक विचार सुनि वरस्पैत कक्काक मन कनी खनियेलैन। खनियाइते मनमे सुमित्रा सन बेटीक पौराणिक कथा सभ नाचए लगलैन- पतिक सेवा, नारी-धर्मक वृतान्त छी तैठाम जँ सुमित्राक जान बकैस देलैन, ई तँ ओइसँ बहुत नीक भेल!

बेटीक बात सुनि वरस्पैत कक्काक मनमे जेना कनी हूबा जगलैन, जेतेक हूबा जगलैन तेतेक मनसूबा सेहो जगलैन। पत्नीकेँ कहलैन-

"बेटी, करवन घर छोड़ि निकलल हएत करवन नहि, तँए पहिने चाह पिआउ। पछाइत खाइ-पीबैक ओरियान करब।"

सुगिया काकी बजली- "सुमित्रा घरक बेटी छी आकि पाहुन जे अपने ओरियान करब? ओकर घर छिऐ, लिअ अपन घर। खाइ-पीबैले देत तँ देत, नइ देत तँ नइ देत!"

माइक विचार सुनि सुमित्रा बिहुँसए लगली। मुदा बजली किछु ने।

❑

शब्द संख्या : 4173, तिथि : 20 जनवरी 2017

विदाइ-दैछना

मास दिनक ग्रह टलला पछाइत सिंहेश्वर काका नमहर साँस छोड़लैन। मासो भरि दिसम्बर सिंहेश्वर कक्काक मनकेँ दिक् -शूल जकाँ चुभैत रहल छेलैन।

2017 इस्वीक पहिल शुक्र दिन। सात बजे साँझमे दैनंदिनक क्रियासँ निवृत्त भऽ सिंहेश्वर काका दरबज्जापर बैस चाह पीबैक विचार करै छला कि चरिपहिया गाड़ीसँ पाँचटा सिपाहीक संग पोतो आ पोत-पुतोहुओ आबि गोड़ लगलकैन। मास दिनक जे शूल मनमे रहैन ओ बगूरक मुड़ियाएल काँट जकाँ लज-लज हुअ लगलैन। मुदा लगले मनक सभ विचारकेँ मनुक्खक स्वतंत्र जिनगीक विचार तेना तोपि देलकैन जे सभ विचारक टाँग-सँ-मुड़ी तक झँपा गेल। झँपाइते बन्दूकधारी सिपाहीपर नजैर पड़लैन।

सिपाहीपर नजैर जाइते इतिहासक रज-रजबारपर छिछलैत जनकपुरक सीता-स्वयंवरपर जा कऽ अँटैक गेलैन। काजक बढ़बाढ़ि देखि पोताकेँ कहलखिन-

"जा आँगन जा।"

जहिना पोताकेँ कहलखिन तहिना दुनू परानी आँगन दिस बढ़ल। पाँचो सिपाहीकेँ बैसबैत सिंहेश्वर काका बजला -

"अहाँ सभ ठाढ़ किए छी, दरबज्जापर जखन पहुँच गेलौं, तखन सेवा करब तँ हमर कर्तव्य-धर्म बनैए किने। बाजू की सेवा कएल जाए?"

ओना आँगनमे सिंहेश्वर काका लेल चाह बनि गेल छेलैन। लोकक अबैक ढवाहि सेहो लगि चुकल छल, मुदा अपनो मनमे तँ होइते छेलैन जे तेहेन हुलि-मालि आँगनमे भऽ रहल अछि जे चाहो पीब मोसकिल। मुदा सुतरलैन। सुतरलैन ई जे एकटा सिपाही बजला-

"खुशीसँ जहिना एलौं तहिना ने खुशीसँ जेबो करब।"

सिंहेश्वर काका सिपाहीक बातक माने जे बुझने होथि , मुदा चाह पीबैक गर अपन जरूर देखलैन। बजला-

"अहाँ सभ पहिने किछु खाउ, पछाइत चाह पीब। हमर चाह बनि गेल अछि, ओकरा अनेरे पानि किए बनाएब।"

उम्र देखि कऽ आकि की, दोसर सिपाही बजला-

"बाबाकेँ चाह पीबए दियौन, अपना सभ पहिने मुँह मीठाएब, पछाइत नमकीन खा चाह पीब।"

ओना सिंहेश्वर कक्काक कान 'बाबा' सुनि ठाढ़ भऽ गेलैन। कान ठाढ़ होइते ओइ सिपाही दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे जहिना पोता अछि तइसँ कनियेँ बेसी उमेरक सिपाहियो हएत। अपन बात सुतारैत काका बजला-

"लोकनियाँमे के सभ छेलौं?"

तैबीच दू किलो मिठाइ आ आधा किलो नमकीन चौक परक दोकानसँ आबि गेल। पाँचो सिपाही पाँचो दिससँ घोदिया कऽ बैस खाए लगला। अफरजात सामान, माने आधा किलोक हिसाबसँ, तँए खेबोमे निचेनी एबे करत। सामान रहने भोजो-काजमे अहिना निचेनी अबै छै आ लोक सोहर-सँ-समदौन धरि सुनि भोजनक विसरजन करिते अछि।

चरिजनियाँ चौकीपर बिछान रहबे करइ। मिठाइयोक आ बिकानेरी भुजियोक झोरा खोलल गेल। चारि किस्मक मिठाइ। आधा

किलो रसगुल्ला, आधा किलो लड्डू, आधा किलो अमीरती आ आधा किलो पेड़ा। तहिना मसुरीक भुजियामे चीनियाँ बदाम सेहो देल। ओना, सभ किछु अलग-अलग देखि एकटा सिपाहीक मनमे भेलैन जे बराबर करि कऽ पाँचो वौस बाँटि ली। मुदा मनमे ईहो उठलैन जे हम ने दू गोरे दुब्बर-पातर छी मुदा तीन गोरे तँ नम्हरो-छरगर आ मोटाएलो बेसी छैथे, तैठाम एकरंग बाँटब नीक थोड़े हएत।

मने-मन जे एकटा सिपाही मिठाइक अंकार लगबैत रहथिन से दोसर बुझि गेला, तँए हुनकर आँखि तरेतर गुम्हरए लगलैन-

“बेबकूफ कहीं के, एतबो अकील नइ भेलह हेन जे जँ एके रंग घरक नीब लेब आ भीतघरो आ टटघरो बनाएब तँ बेसी जगह टटघरेमे होइ छइ।”

गुम्हरैत मनसँ फुफकार तँ उठलैन मुदा बजला किछु नहि। ओना, सिंहेश्वर काकाकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक शरीर बनबैक बात नइ बुझि रहल अछि तँए एहेन बुधि-विचार छइ। जँ से बुझैत जे जे शरीर मेहनतसँ बनैए ओ भोजनसँ बनल शरीरसँ विपरीत रूपेँ बनैए। माने ई जे मेहनतक अनुकूल भोजन भेलापर जे शरीर बनैए ओ बेसी सक्कत, बेसी सुन्दर आ बेसी कारगरो होइते अछि।

ओना सिंहेश्वर काका चौकीक बगलमे कुरसीपर बैसल छला , मुदा खेबा-काल सबहक मुहोँ आ वस्तुओ दिस देखैथ जे पाँचो सिपाही पाँच मुलुकक छैथ आकि एक मुलुकक..?

पाँचोक खेनाइक ढंग पाँच रंगक। एक गोरे पहिने अमीरती उठेलैन, तँ दोसर लड्डू। तहिना तेसर रसगुल्ला उठौलैन तँ चारिम पेड़ा। मुदा पाँचम पँचमनियाँ बनि पहिने भुजीए उठौलैन।

पँचमनियाँ भेल जे चारूकेँ मिठाइक पछाइत भुजिया भेटत आ हमरा भुजियाक पछाइत मिठाइ। भाय, ई तँ अपन-अपन मनक विचार

छी, जएह फूरए सएह करू...।

सिंहेश्वर काका एकटा सिपाहीकेँ बिटियाबए चाहलैन। बिटियबैक पाछू विचार रहैन जे ओ पहिने अमीरती उठा खाएब शुरू केने छला जे अप्पन मुलुकक बेवहार छी! मैथिल परम्परामे जखन मिठाइक भोज शुरू भेल तखन जिलेबीसँ शुरू भेल। जिलेबीक अगुआइन अमीरती भेली। ओइ सिपाहीकेँ अँखियबैत सिंहेश्वर काका फुटा कऽ पुछलखिन -

"बाउ, केतए घर छी?"

अपनाकेँ बर्दीमे देखि सिपाही भोजपुरीमे अपन गामक नाओं बजला।

ऐसँ आगू बढ़ि सिंहेश्वर काका दोसर सिपाहीकेँ –जे पहिने लड्डू उठौने छला–तिनका पुछलखिन-

"बाउ, कोन किलास तक पढ़ने छी?"

ओ अपन छपड़िया बोलीमे, आधा भोजपुरीकेँ काटि आधा अपन मिला बजला-

"बी.एस-सी. ।"

'बी.एस-सी' सुनि सिंहेश्वर काकाकेँ छगुन्ता लगलैन जे की हमर देशक ओहन स्थिति बनि गेल अछि, जे बी.एस-सी. विज्ञान क्षेत्र छोड़ि बन्दूकधारी बनैथ..!

छगुन्तामे पड़ल सिंहेश्वर कक्काक मुहसँ निकललैन -

"बाह! तखन तँ अपन मनोनुकूल काज करै छी!"

ओना, ओ सिपाही सिपाहीक रूआबमे रहबे करैथ। तैपर जेहने धरगर मोछ रखने तेहने छकट्टी दाढ़ियो रहबे करैन। मुदा ऊपरेसँ धरगर रहैथ, भीतरसँ नहि। भीतरसँ मोमबत छला। अपन मजबूरी देखबैत ओ सिपाही बजला- "बाबा, मन तँ छल जे बड़का शायर बनि विशाल मंचपर

अपन शायरी सुनैबतौं, मुदा परिवार-ले बिआहो ने करब छल।"

सिपाहीक बात सुनि सिंहेश्वर काका भकचका गेला जे शायरकेँ की अपन परिवार नइ होइ छै? तखन एना किए बजला..?

सिंहेश्वर कक्काक भकचकीसँ ओइ सिपाहीकेँ बुझि पड़लैन जे बाबा भरिसक बाबाधाम पहुँच गेला। मुस्की दैत सिपाही बजला-

"बाबा, हमरा इलाकामे नीक कनियाँ ओही बरकेँ टेबैए जे सिपाहीक नोकरी करैए।"

मुस्की दैत सिंहेश्वर काका बजला -

"ई तँ बढ़ियाँ अछि किने?"

आरो खोंइचा छोड़बैत सिपाही कहलकैन -

"बाबा, ई नइ कहलौं जे अपन सिपाहीगीरी आकि अनकर। "

ताबत आधासँ बेसी भोजन सिपाही सभ कऽ नेने छला। सिंहेश्वर काका बजला-

"बौआ, अहाँ सभ जुआन-जहान छी, भार अहीं सभपर ने गाम -घरसँ लऽ कऽ देश-दुनियाँक अछि। तँए नीक-अधलाकेँ बेरबैत सेवा करू।"

चारू सिपाहीक जे शीर्ष छला ओ जिज्ञासु रूपमे आँखि उठा सिंहेश्वर काका दिस देलैन। ओ बुझि गेला जे उलझनक जड़ि जड़िय बए चाहि रहला अछि।

तैबीच मुँह छोहैन करैत सिंहेश्वर काका बजला -

"पहिने निचेनसँ भोजन करू, चाह पीब, पान खाएब पछाइत दस मिनट सत्संग हेतइ।"

सिंहेश्वर कक्काक मिलैत भावकेँ देखैत शीर्ष सिपाही मुँह खोलि बजला- "मुहसँ ने भोजन करै छी, कान तँ खालीए अछि किने।"

पियासल पक्षी सदृश सिपाहीक रूप देखि सिंहेश्वर काका बजला -

“पचास बर्ख पूर्व, फुलपरासक लकसेना गाममे चारि जाति– धानुक, कियोट, कुरमी आ अमातक बीच खाएब-पीबसँ लऽ कऽ बिआह-दान सेहो हएत–सर्वसम्मतिसँ विचार भेल। काज रूपमे आगू बढ़ल, केतेको कुटुमैती एक-दोसरमे होइत आबियो रहल अछि। ओना अलग-अलग चलबक चलैन बेसी अछि। ओही बीचक प्रेम-प्रसंगक उलझन छी, जेकरा समाजक लोक आरो उलझा रहला अछि।”

मुड़ी डोला स्वीकारैत ओ शीर्ष सिपाही बजला-

“हमरा सबहक नोकरी कोनो नोकरी छी, जहिना बत्तीस दाँतक बीच जीह रहैए तहिना अछि।”

ओना सिपाहीक मनक किछु ओहन बात जे बिनु बजनौं सिंहेश्वर काका अन्दाजसँ बुझि गेला, मुदा सभठाम सभ बात बजैक उपयुक्त जगहो ने होइ छै, तँए अपन विचारकेँ दोसर दिस मोड़ैत सिंहेश्वर काका बजला-

“अपना ऐठामक जे बलबा अछि ओ प्रेमसँ जुड़ल अछि, जेकरा लोक बुझहै ने चाहि रहल अछि।”

सिंहेश्वर कक्काक फेकैत वाणक संग शीर्ष सिपाहीक नजैर सेहो ओहिना पछुअबैत बढ़लैन। तैबीच अपनाकेँ पछुआइत देखि दोसर नम्बरक जे सिपाही छला ओ बजला-

“बाबा, दुनियाँक किछु थाहे ने अछि।”

सिपाहीक बात सुनि सिंहेश्वर कक्काक मनमे भेलैन जे एहेन समझदार-सिपाही रहितो एना किए बाजि रहल अछि..?

मुदा जहिना चुल्हिमे खोंरनीसँ आगि खोरल जाइए तहिना सिपाहीक विचारकेँ बुझैले सिंहेश्वर काका खोंरनी चलौलैन -

“से की?”

सिपाही बजला- “जइ प्रेमसँ सभ विजय पाबए चाहै छैथ, तही प्रेमक लटपटीमे लोक अपनो जान आ परिवारो-समाजक जान लइते अछि।”

सिपाहीक विचार सुनि सिंहेश्वर काका ठमक ला। मुदा शीर्ष सिपाही जे छला ओ विचारक विषयसँ विषयान्तर होइत देखि तरे-तर ओइ सिपाहीपर नजैर गुरेड़लैन। तैसंग लागल तेसरो-चारिम सिपाही मुँह बन्न रखैक इशारा केलकैन।

बदलैत वातावरण देखि सिंहेश्वर काका बजला -

“जइ लड़कीक संग प्रेम भेल ओकर पृष्ठभूमि की अछि?”

सिंहेश्वर कक्काक बात सुनि हाँइ-हाँइ कऽ शीर्ष सिपाही भोजन अन्त करैत पानि पीब आगूक चाहक आशामे अपनाकेँ साकांच कऽ लेलैन।

तैबीच चाह सेहो आबि गेल, पाँचो सिपाही एक-दू घोंट चाह संगे पीब लेलैन। बनैत वातावरण देखि सिंहेश्वर काका बजला -

“जइ लड़कीक संग लड़का चोरा कऽ घरसँ निकलल, ओ ओहन साहस केना कऽ लेलक! ओना, समाजमे एहेन घटना पहिल छी सेहो बात नहियेँ अछि। साएसँ ऊपर एहेन घटनाक इतिहास गामक रहल अछि। अनेको रूपमे निपटानो भेल आ अगराहियो तँ लगबे कएल। जैठाम एक्के प्रश्नक जवाबक अनेक रूप अछि तैठाम सामाजिक नियम की भेल? मुदा समाजो तँ एहेन अछि जे रंग-बिरंगक चालि बेवहारमे सभ राइ-छित्ती भेल अछि। मुदा जे अछि सभ नीके अछि, रहबोक तँ अही समाजमे ने अछि।”

शीर्ष सिपाही बजला- “आगूक की अछि?”

सिंहेश्वर काका बजला- "दुनू परिवारक बीच घनिष्ठ सम्बन्ध सेहो अछिए। खाएब-पीब सभ किछु अछिए। बच्चेसँ लड़की जखन पढ़ैले कोंचिग जाइ छल तँ घरेटा नइ देखै छल घर -अँगनाक खेनाइ-पीनाइ सेहो देखै छल। तेतबे नहि, संगे हब-गब सभ करै छल, आ से कोनो आइए नहि, केता बर्खसँ। जखन लड़की कौलेजमे नाओं लिखौलक , तहिया लड़का बी.ए. ऑनर्सक विद्यार्थी छल। कौलेजक ऑफिसक जे काज लड़कीकेँ होइ छल, दुनू संगे जा-जा करै छल।"

विचारमे मोड़ दैत पहिल सिपाही बजला-

"समाजमे जे जातीय रूप अछि तइमे..?"

सुढ़ियाइत सिपाहीक विचारकेँ सिंहेश्वर काका लपैक कऽ पकड़ैत बजला-

"एक तँ ओहुना दुनू लड़का-लड़कीक बीच जातिक जे सम्बन्ध अछि ओ एकरंगाहे अछि। माने ई जे श्रेणीवद्ध जातिक सम्बन्धक जे एकरूपता अछि तइमे दुनूक बीच लगपन अछिए।"

सिंहेश्वर कक्काक विचार सुनि शीर्ष सिपाहीकेँ औरो जिज्ञासा जगलैन। मुदा अपन जवाबदेही माने पदक भार खुलि कऽ बजै ने दैन। तेकर कारण छल। जेना अखन धरिक जे गामक माहौल बनि चुकल छेलै, ओ विपरीत दिशामे छल, जइमे हुनको हाथ छेलैन्हे। मुदा घटना तँ आब अन्तिम पड़ावपर पहुँच गेल अछि, तँए बीतल समयक जे नीक कि अधला क्रिया भेल, ओहूमे बदलाव अनले जा सकैए। ओना, मने-मन हुनका ग्लानि भइये रहल छेलैन, मुदा ग्लानियो तँ ग्लानि छी। सभ रंगक विचारमे सभ रंगक ग्लानि सेहो होइते अछि। जइसँ किछु ग्लानि हल्लुक बनि हवामे उड़ि जाइए आ किछु ग्लानि जिनगीक सिख सेहो बनिते अछि। खाएर.., मुँह खोलि तँ शीर्ष सिपाही किछु नहि बजला मुदा मनमे ई उठिते रहैन जे घटना-समस्याक जड़िसँ अन्त धरिक सभ बात बुझी।

सिपाहीक मुँहक रूखिसँ सिंहेश्वर काका अन्दा ज केलैन जे आरो बात बुझए चाहि रहला अछि।

तैबीच पाँचो गोरे चाह पीब, पान मुँहमे लऽ नेने छला। ओना, सिंहेश्वर काका चाहमे संग नइ पुरने रहथिन , मुदा मुँहक पान सठि गेने, पानक संगी बनियेँ गेला।

पान-जरदा खा पहिल पीत फेकैत सिंहेश्वर काका बजला -

“बाउ, एक तँ जाड़क मास छी, तैपर शीतलहरी जकाँ सेहो अछिए, जइसँ कनकनी किछु बेसी बुझिए पड़ैए। हम तँ अहीठाम रहब, मुदा अहाँ सभकेँ डेरा पहुँचैत-पहुँचैत डेढ़-दू घन्टा आरो लगत। गपे छी , गप जँ पसरत तँ केते समय लागत तेकर ठेकान नहि। तँए... ।”

दोसर नम्बरक जे सिपाही छला ओ सिंहेश्वर कक्काक विचारक रसमे तेना रसा रहल छला जे जेना बुझि पड़ैन जे सौंसे दुनियाँ समटा कऽ अहीठाम आबि गेल अछि। ओना आरो चारू गोरे जे रहैथ ओहो सभ मने-मन यएह गर लगबैथ जे दू घन्टाक जाड़केँ के कहए जे चारियो घन्टाक कोनो गम नहियेँ अछि। ओना शीर्ष सिपाही अपन जिनगीक क्रियाक अनुभव महसूस करिते रहैथ। तैबीच दोसर नम्बरक सिपाही बजला-

“बाबा, ओना अखन हम सभ ड्यूटियेमे छी, जखन डेरा पहुँच जाएब तखन ड्यूटीक विश्राम हएत। अपने कनी , सोझरा कऽ कम समयमे अपन विचार रखियौ।”

सिपाहीक प्रश्न सुनि सिंहेश्वर काका सहैम गेला। सहैम ई गेला जे प्रश्न एक रहितो रस्ता तँ अनेक अछि, भलेँ ओ गंगासागर लग पहुँचैत-पहुँचैत सभ धार गंगेमे मिलि अपनाकेँ गंगाजल कहैत समुद्रमे किए ने मिलैत हुअए... ।

सिंहेश्वर काका बजला- “आइ धरिक जे मनुक्खक इतिहास रहल

ओ मूल भेल। अही मूलमे सँ अनेको विचार पनैप-पनैप अनेक नाओं धरा आगू बढ़ल अछि।"

जेना सिपाहीकेँ ई इतिहास बुझले रहैन तहिना जोरसँ मुड़ी डोलबैत बजला-

"हँ, ई तँ अछिए।"

सिपाहीक सिर डोलैत देखि सिंहेश्वर काकाकेँ अपन विचारमे मजगूतीक एहसास भेलैन। बजला-

"आइक जे परिस्थिति अपना ऐठाम बनि गेल अछि, ओ संक्रमणक स्थितिमे अछि, ओना संक्रमणक स्थिति दुनियाँ भरिमे अछि। केतौ सोझ केतौ टेँढ़, केतौ उनटा, केतौ सुनटा, केतौ नीकसँ अधला दिस बढ़ैत, तँ केतौ अधलासँ नीक दिस, केतौ अधलोसँ अधला दिस, तँ केतौ नीकोसँ नीक दिस, यएह स्थिति अछि।"

शीर्ष सिपाही गंभीर होइत गेला मुदा दोसर नम्बरक सिपाही वाह-वाही करैत कखनो मुस्कियेबो करैथ आ कखनो मुँह खोलि हँसबो करैथ।

एकाएक जेना चुप्पी पसैर गेल। एक दिस चुप्पी पसरल, दोसर दिस समयक कनकनीक संग रतियेबो करइ। जहिना भोजमे अन्तिम विन्यास बाँकी रहितो भोजखौककेँ ने उठैत बनैत आ ने पबैत बनैत। किएक तँ पेट भरिये गेल रहै छैन मुदा बितरित विन्यास बाँकी रहने जहिना किछु करितो किछु नइ बनैत तहिना भऽ गेल।

ओना शीर्ष जे छला ओ गंभीर भऽ गेल छला तँए हुनकर मन बढ़ैत रातियो आ कनकनियोँसँ हटि गेल छेलैन, तहिना दोसर नम्बरक जे सिपाही छला, हुनको गति तेनाहे सन भऽ गेल छेलैन। मुदा बाँकी सिपाहीमे किछु कछमछी आबिए गेल रहैन। ओ चाहे विषयक गंभीरतामे प्रवेश नहि केने भेल होनि वा अपन ड्यूटीकेँ समयपर निपटबैक विचार जगि गेल होइन। पहिल नम्बरक जे सिपाही छला ओ सिंहेश्वर काकाकेँ

चरियबैत कहलखिन- “नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं।”

सिपाहीक बात सुनि सिंहेश्वर काकाकेँ अपन विचार नइ बुझैक शैलीपर नजैर गेलैन। मुदा लगले मनमे उपैक गेलैन जे अनभुआर जगह सोझ पड़ने, एहनो होइते अछि। जँ कहीं सएह भेल होइन।

..समयक संग विचारकेँ सम्हारैत सिंहेश्वर काका बजला -

“भऽ सकैए जे अहाँकेँ बुझैमे नइ आएल हुअए। एकरा दोसर रूपेँ एना कहि सकै छी। दुनियाँमे जेते बुधि -विवेकधारी मनुक्ख अछि, समयक संग ओकर सन्तरण होइते छइ। चाहे ओ जेमहर हुअए।”

ओना सिंहेश्वर कक्काक विचार ओ सिपाहियो नीक जकाँ नहियेँ बुझि पेलैन मुदा दोसर नम्बरक सिपाही कहलकैन-

“काल्हि भोरमे ऐ विषयपर अपना सभ विचार-विमर्श करैत एक विचार बना लेब।”

ओना शीर्ष सिपाही जे छला ओ समोहमे पड़ि गेला। समोहमे ई पड़ला जे एहेन परिवारक संग जेहेन बेवहार हेबा चाही तइमे कमी भेल। मुदा जे भेल आब तँ उसरन-बिसरनक समय आबिये गेल अछि, तँए आबो किछु सम्हारि लेब नीके हएत।

चौकीपर सँ पाँचो गोरे उठि ठाढ़ भेला। पाँचो सिपाहीकेँ ठाढ़ होइते सिंहेश्वर काका बेटाकेँ कहलैन -

“हिनका सबहक विदाइ-दैछना हेतैन, अरियाति दहुन।”

कहि सिंहेश्वर काका अपनो उठि कऽ ठाढ़ भेला।

ओना, ‘विदाइ-दैछना’ सुनि दोसर नम्बरक सिपाही बुझलैन जे भोजन-दैछना भेटत। मुदा शीर्ष जे छला हुनका मनमे अपन कर्तव्य ठहकलैन। अबैक जे सरकारी बेवस्था भेल छल, ओकर खर्च तँ घरवारिये सिर ने पड़त..!

आगू-आगू सिंहेश्वर काका बढ़बो केला ह आ मने-मन अँटकारो लगबै छला जे कोट-कचहरीक लफड़ा छी, ऐठाम तँ सलामीसँ काज शुरू होइए आ भोजन-दैछना पबैत-पबैत बिसरजन होइते अछि।



शब्द संख्या : 2312, तिथि : 25 जनवरी 2017

बीरांगना-2

जे जिनगीकेँ दाव चढ़बै छै

वएह जिनगी पबै छइ।

जे जिनगीक जान गमाबै छै

वएह जिनगी कनै छइ।

पूस मासक अन्हरिया पखक पंचमी। आइ तेसर दिन छी, रघुनाथ कक्काक परिवारमे जे बड़का आफत आएल छेलैन ओ धीरे-धीरे थीर होइत रहैन। ओना दुनू बेटाक माथक पट्टी नइ खुजल छेलैन , दवाइ-दारू सेहो चलिते छेलैन। गामक वातावरणक गर्मी सेहो गरमाएल रहबे करइ, मुदा से दुनू दिससँ। गरमाइक अपन -अपन कारण दुनू पक्षक छेलैहे। एक पक्षक कारण छल प्रशासनिक सहयोग आ दोसर पक्षक कारण छल जे जखन दुइये भाँइ एते दुश्मनकेँ अड़ा कऽ भगा देलिऐ तखन तँ गाम-समाज हमरो छी किने। तहूमे समाजक सहयोग एहेन जे आइये बदान दऽ फरिछा लेब। तइसँ दुनू भाँइक देहक चोट सेहो कमि जाइ।

समाजमे आश्चर्य पसरिये गेल छल जे जेना ओ सभ सूमा बान्हि आक्रमण केलक तेना जँ कनियोँ इशारा समाजकेँ भेटैत तँ ओइठाम कता लाश खसैत तेकर ठेकान नहि! ओना, रंग-रंगक प्रश्न सभ उठिये रहल छल। केतौ उठैत-

“जइ परिवारमे एहेन घटना भेल ओइ परिवारक संग अन्याय

भेल..!”

केतौ उठैत- “जहिना लड़का घरसँ चोरा कऽ भागि गेल तहिना ने लड़कियो भागल, जेकरा कियो ने देखलक। तखन लड़काबलाक की दोख छै जे एना गामक जवाबदेहो लोक आ टोलोक लोक शेतनपन्नी केलक?”

पुलिस प्रशासन चुप्पी सधने जे जेना गाममे किछु भेबे ने कएल।

ओना, रघुनाथ कक्काक मन सोल्हैनी तँ नहि मुदा दसअना थीर जरूर भऽ गेल रहैन। थीर होइक कारण रहैन जे दोसरे दिन, जइ दिन घरसँ लड़का-लड़की पड़ाएल तेकर दोसरे दिन पटना अदालतमे कानूनी बिआह दुनू कऽ लेलक। जे जनतब रघुनाथ काकाकेँ भऽ गेल छेलैन।

लड़का-लड़कीक खोजमे पचासोसँ ऊपर लोक लगि गेल छल। जहिना गामक स्थिति तहिना शहर-बजारक स्थिति सेहो बनियेँ गेल अछि। माने ई जे जहिना गाम-गाममे दस-बीससँ लऽ कऽ पचीस-पचास कुटुमैती अछि, तहिना शहरो-बजार बनियेँ गेल अछि। सभ गामक लोक सभ शहरमे अछिए। नव लड़का-लड़कीक जोड़ा कोनो डेरा वा कोनो गाम पहुँचत तँ ओ चर्चाक विषय बनियेँ जाएत। मोबाइलिक जुग छीहे, क्षणे-पलमे सौंसे दुनियाँक जानकारी भेटिये जाइए। जइसँ विषम स्थिति बनियेँ गेल अछि।

सभसँ बेसी दुखद बात अछि जे कचहरीक खर्चो दुनू उधारिये रखलक। ने खाइले एकोटा पाइ संगमे छै आ ने रहैक ओरियानो कऽ सकैए। तहूसँ विकट स्थिति अछि जे शीतलहरीक समय, भरि देह कपड़ो ने छइ।

जाधैर कचहरीक काज भेल ताधैर तँ दुनू उत्सा हित रहबे करए, तँए एक्के उझूकमे काज सम्हारि लेलक। ओना जे खतरा आगूमे ठाढ़ छेलै तैपर दुनूमे सँ एकोकेँ नजैर नइ पड़इ। मनमे सिर्फ अपन ठौर पकड़ैक चिन्ता

रहइ।

खतरा ई रहै जे जखने दुनू पकड़ाएत तखने लड़कीकेँ अलग कऽ प्रेम सम्बन्धकेँ अपहरणक रूपमे बदैल लड़काक जिनगीकेँ बरबाद कऽ देब। वाह रे स्वतंत्र देशक प्रशासनक सोच। यएह छी बेकतीगत स्वतंत्रता आ ओइ स्वतंत्रताक प्रशासनिक रक्षा..!

दिनक चारि बजे दुनू गोरे माने लड़का -लड़की, कचहरीक काजसँ निवृत्त भऽ सड़कपर आबि ठाढ़ भऽ गेल। की करत, केतए जाएत? पचासो बेर लड़काक मोबाइलमे घन्टी भेल मुदा एकोबेर उठौलक नहि। उठेबो केना करैत, जखने उठबैत तँ तखने जान जोखिममे पड़िये जइतै।

ओना, लड़का गामक एक बेकतीक संग गप-सप्प करैत रहै, मुदा दुनू एतेक सुरक्षित रहै जे तेसर कियो ने बुझि पबैत। जइ बेकतीक संग सम्पर्क रहै ओहो पटने अदालतसँ बिआह केने छल। ओहो कौलेजमे पढ़िते अछि। तँए दुनूक बीच माने ओहू लड़का आ जे घरसँ पड़ा बिआह केलक, बरबैर गप-सप्प होइते छल। जइसँ गामक वातावरणक सभ जानकारी होइते छेलइ।

एक तँ ओहिना दुनू लड़का -लड़की घरसँ चोरा कऽ पड़ाएल छल, चोरे जकाँ डरा सेहो गेले छल। मुदा दुनूक जिनगी ओइठाम आबि अँटैक गेल छल जेतए पहाड़-समुद्र एकठाम रहैए। जँ जान बँचत तँ पहाड़पर चढ़ब नइ तँ जिनगी पानिमे जाएत, समुद्रमे डुमत..!

ओना रघुनाथ कक्काक समांग सचरगर छैन्हे, तँए जेते भार अपनापर मनमे पड़क चाहिऐन तेते तँ नइ रहैन मुदा परिवारक शीर्ष हेबाक कारणे दवाब नइ रहैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए।

दरबज्जापर बैसल रघुनाथ काका परिवारक विषयमे सोचैत रहैथ। बेकतीगते क्षति हएत तेतबे नइ अछि। पोता तँ जहलमे सड़बे करत जे तैसंग दोसरो-तेसरो समांग सड़त। आर्थिक क्षति की हएत आ केते हएत,

कहनाइ कठिन अछिए।

सोग-पीड़ाक सघन वनमे जहिना कियो जीवन-मृत्युक बीच झूलैत तहिना रघुनाथ काका झूलि रहल छला। साइयो किलो-मीटरपर दुनू–लड़का-लड़की–अछि। जाबे तक बिआह नइ भेल छेलै ताबे तक भलेँ लड़कीक संग पारिवारिक सम्बन्ध नहि छल, मुदा आब तँ ओ पुतोहु भेली। जइसँ बेटीबलाक अपेक्षा अपन सम्बन्ध बेसी भइये गेल अछि।

रघुनाथ काकाकेँ ने आगूक कोनो सुरक्षित बाट भेटैन आ ने पाछू हटने काज चलितैन। संजोग बनल, बेटा आबि कहलकैन-

"अनेरे अहाँ चिन्ता नइ करू, सभ गर हम लगा लेब।"

ओना सचरगर समांग रहने रघुनाथ काकाकेँ बिसवास तँ भेबे केलैन मुदा कोन गर लागत से तँ कहबे ने केने रहैन तँए मनमे ईहो होइते रहैन जे जँ गड़े कुगर भऽ गेल, तखन केना जान बँचतै? अपना उकिते जँ लड़का-लड़की केतौ आन शहर-बजार दिस कोनो गड़े पहुँचत आ ओइठामसँ जे भेद खुजि जाएत तखन तँ आरो बड़का फेरा लगि जाएत। आन-राज्यक पुलिस-प्रशासनक हाथ पड़ि जाएत।

फेर होनि जे जँ गामो दिस औत तँ एते दूरी तँइ करब कठिन अछिए। चारू दिस लोक भेद लगबैले छिड़ियाएल अछिए..!

देहमे तँ कम्पन्न रघुनाथ काकाकेँ नहि रहैन मुदा मनमे तँ रहबे करैन। तहीकाल बेटा कहलकैन-

"आब चिन्ताक कोनो बात नइ रहल। कानूनी प्रक्रियासँ सभ काज समटा जाएत।"

'कानूनी प्रक्रियासँ सभ काज समटा जाएत' सुनि रघुनाथ काकाकेँ मनथम्हन भेलैन। मनथम्हन होइते जिज्ञासा बढ़लैन। पुछलखिन-

"बौआ, केना कानूनी प्रक्रियासँ सभ काज समटा जाएत?"

बेटा कहलकैन- “ओकील सभ भार लऽ लेलैन।”

“की सभ भार लेलैन?”

“दुनूकेँ घर तक पहुँचबैक भार लऽ लेलैन। ”

ओना, बेटाक बात सुनि रघुनाथ काकाकेँ मनथम्हन भेलैन जरूर मुदा क्षणिक। लगले मनमे उठि गेलैन जे जखन पुलिस प्रशासन विपरीत अछि तखन घरपर एला पछाइत बँचा कऽ केना रखि सकै छी! तहूमे जाबत स्थानीय अदालतमे लड़कीक व्यान दर्ज नहि भेल अछि, ताबत तँ ओ किछु कए सकैए। आगिकेँ पानि आ पानिकेँ आगि बनाइये सकैए..!

रातिक नअ बजैत, माने चतुदर्शीक राति। पोता आ पोत-पुतोहुओ ओकीलक संग घर पहुँच गेल। ओकीलक संग पोतो आ पोत-पुतोहुओकेँ देखि क्षणिक खुशी रघुनाथ कक्काक ठोरपर एलैन मुदा दिन-मासक के कहए जे रातियो भरि अपनाकेँ सुरक्षित बँचा राखब असाध अछिए...।

अपना कलेजापर पाथर रखि रघुनाथ काका ओकीलकेँ विदा करैत कहलखिन-

“दिन-राति कान ठाढ़ केने रहब।”

परसू लड़का-लड़की घरसँ भागल, काल्हि बिआह केलाक पछाइत घर आबि (पहुँच) गेल, मुदा असथिरसँ रहि केना सकैए, ई समस्या अछिए।

घटनाक तेसर दिन माने लड़का-लड़कीकेँ घरसँ पड़ेला पछातिक आठम दिन, गामक आततायीक भारी आक्रमण रघुनाथ कक्काक परिवारपर भेलैन। ओइ आक्रमणक तेसर दिन, बेरुका समयमे रघुनाथ काका दरबज्जापर बैस पाछू उनैट तकला तँ मन कहलकैन जे जेहेन चोट खेने अछि, ओकरेसँ भाँज लगि सकैए...।

मनमे अबिते रघुनाथ काका पत्नीकेँ शोर पाड़ि बजला- “रीनाकेँ

संग केने आउ?”

ओना जेठक रौदसँ जड़ैत धरती, जँ बादलक कृतसँ ओहन बर्खा पबैए, जे जरैत मनक कोन कथा जे चद्दैर जकाँ ऊपरोसँ बीछा जाइए, तहिना रघुनाथ कक्काक विचारमे सेहो रहबे करैन। तैसंग सभकेँ अपन-अपन मन, अपन-अपन बुधि आ अपन-अपन विचार मनमे उठिते छेलैन। कियो ‘भौजी’ पौलक तँए खुशी, तँ कियो ‘बेटाक संग पुतोहु’ पौलक तँए खुशी। ओना परिवारेक किछु एहनो नहियेँ छला जे माइरिक चोटसँ ओछाइन नइ धेने छला आकि माथमे पट्टी नइ बन्हने छला, सेहो तँ छेलैन्हे।

ओना सुदामा काकी चाह बना रघुनाथ काकाकेँ दैयेक विचार कऽ रहल छेली, मुदा तैबीच पतिक बात सुनि सुदामा काकी कनी थकमकेली। थकमकेली ई जे रीनाकेँ संग नेने आबए कहि रहला अछि, रीना की कोनो सोझामे अछि ओ तँ केतौ फुदकैत हएत। मुदा लगले भेलैन अनेरे पएर रोकि ठाढ़ भेल छी, जे काज अगुआएल अछि पहिने वएह ने करब। बड़ हएत तँ जाइते पुछि देता जे रीना कहाँ अछि। तँ कहबैन जे सभ काज एक्के बेर करब। पहिने चाह पीबू, ताबे हमहूँ रीनाकेँ तकने अबै छी...।

समगम मन बनौने सुदामा काकी रघुनाथ काका लग चाह नेने पहुँचली।

पत्नीक हाथमे चाह देखि रघुनाथ काका किछु बजला नहि। अपन क्रिया-सूत्र मिलबए लगला। जखन शोर पाड़ि कहलयैन तखन ओ चाह बनबै छेली। तँए चूल्हि लगक आगि छोड़ि उठबो उचित नहियेँ होइत। चाहो उधिया कऽ फेका सकै छल। आगू क्रिया देखि सोचलैन, अपनो चाह पीती, पछाइत गिलास-केतली धोती, तेकर बादे ने रीनाकेँ ताकए जेती। जँ आँखिक सोझमे रहितैन तँ रस्ते-रस्ते ओ काज कए सकै छेली।

मुदा से तँ नइ छेलैन, तँए नइ भेलैन।

गिलासक चाहकेँ भफाइत देखि रघुनाथ कक्काक मनमे जगलैन, अनेरे मनमे चिन्ता बसौने छी, अनेरे पुलिस प्रशासनसँ अपनाकेँ नुकबए चाहै छी। जैठाम दुनू बिआह केलक , माने रजिष्ट्री बिआह, तैठाम की टिकट-पेपरक टैक्स तँ सरकारकेँ देनहि हएत, तैसंग की न्यायालय बिना किछु पुछनहि बिआहक रजिष्ट्री केलक।

तैबीच रीनाक संग सुदामा काकी पहुँचली। ओना दुनू गोरे चौकीक निच्चाँमे ठाढ़े रहली। दुनूकेँ चौकीपर बैसैले रघुनाथ काका ऐ दुआरे कहलखिन जे असथिरसँ किछु बात रीनाकेँ पुछबाक छेलैन। देशक भविस छी। तेतबे नहि, देश-समाज आ परिवारक संग अपन जिनगीक भविस सेहो छी, तँए जे परिवार असथिरसँ चलि अबै छल, ओइ परिवारमे एहेन भयावह घटना भेल, तइ परिवारक बाल मन–रीना–पर की प्रभाव पड़ल ओ तँ विचारे-विमर्शसँ ने बुझब सम्भव अछि।

ओना, जइ दिन रघुनाथ कक्काक परिवारमे घटना भेलैन तइ दिनसँ परिवार-जनक बीच विचारो-विमर्श बढ़बे केलैन...।

टोह लैत रघुनाथ काका पत्नीकेँ अगुअबैत बजला-

“रीनाकेँ डर-तर ते ने बेसी होइ छइ?”

रीनाक चर्च छोड़ि सुदामा काकी अपने बात बाजए लगली-

“जेना हमरो डर होइ छल जे की हएत की नहि, से आब नइ होइए।”

दादीक बात सुनि रीना मने-मन किछु मोन पाड़ए लगल। जेना बहुत किछु बिसैर गेल हुअए। बिसरैक कारण भेल छेलै जे रीना ओहन दौड़सँ नहि दौड़ल छल जे मन रखैबला रहितै, किएक तँ आँखिक सोझमे जे देखलक ओइ अपेक्षा अपन बीतल दौड़ साधारण छेलइ। ओना होइतो

अहिना छै जे चाहे ओ पूर्ण जिनगीक हुअए वा जिनगीक बीच कोनो घटना विशेष हुअए, ओकर सर्वांग मन राखब जरूरियो नहियेँ होइ छइ। ओना किछु क्रिया एहनो होइते अछि जेकरा चाहियो कऽ बिसैर नइ सकै छी, मुदा ओ अछि दैनिक जीवनसँ सटल सूत्र। जइ आधारपर जिनगी ठाढ़ रहैए। रीनाक संग दोसर ईहो बात छल, ई छल जे जे जिनगीमे बेसीकाल अबैए ओ तँ बिसराइयो जाइते अछि। जिनगीक पहिल ओहन घटना छल, जेकर कल्पनो ने रीना केने छल जे एकाएक घटित भेल।

आगूमे पत्नियोँ आ पोतियोकेँ देखैत रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन, जिनगीक क्रिया किछु एहेन अछि जेकरा लोक प्रगट करैए आ किछु एहनो तँ ऐछे जेकरा बुझितो लोक अप्रगट करैक कोशिश करैए। जेकरा 'झाँपन देब' कहि सकै छी। मुदा जिनगी तँ दू -धारक (दू धाराक) बीचो -बीच चलैए तैठाम एक धाराकेँ बुझब-जानब आ दोसरकेँ झाँपन-तोपन देब ओहो तँ अपूर्णे ने कहौत...।

असमंजसमे पड़ल रघुनाथ कक्काक मन हुमरलैन। हुमरलैन ई जे परिवारजन जेते विषयवार जानकारी राखत ओ ओते नीक भेल। तँए घरक (परिवारक) शीर्षपर रहने निच्चाँक सभकेँ (पैछला पीढ़ी) ऊपर धरिक (कमसँ कम अपना धरिक) बात जना देब बेसी नीक हएत। पहिने रघुनाथ काका सुदामा काकीपर नजैर दौड़ौलैन तँ मातृत्वक उच्च कोटि देखलैन, लगले नजैर आगू बढ़बैत रीनापर देलखिन। परसुका घटनाक आधासँ बेसी बात जेना रीना बिसैर गेल हुअए तहिना बुझि पड़लैन। बिसरबो सोभाविक छल। कोनो फलक गाछ रोपनिहार जखन फल पबए लगैए तखन शुरूक बात (माने केना रोपलौं, केना ताम-कोर केलौं, केना पटौनी केलौं इत्यादि) किए मन राखत। आब ओकर औचित्ये की रहल। तँए ओकर औचित्ये समाप्त भऽ गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। मुदा आब ओकर औचित्य अछि। माने ई जे वर्तमानमे की करब अछि।

रघुनाथ काका रीनाकेँ पुछलखिन- "बुच्ची, ओइ दिन माने परसुका घटना दिन तूँ दौड़ कऽ पड़ा गेलह तँए ने, अगर जँ रस्तेमे घेरा कऽ पकड़ा जइतह तखन?"

कौलेजमे पढ़ैत पनरह बर्खक रीनाकेँ शब्द भेदी वाण जकाँ जना हृदयमे लगलै। हृदयमे लगिते मन दलमलित भऽ गेलइ। मनकेँ दलमलाइते रीनाक होशक संग जोश जगलै। जेना-जेना जोश जगैत गेलै तेना-तेना आगिमे तपैत सोना जकाँ विचारक रंग सेहो बदलए लगलै। बाजल-

"बाबा, अपनो मन कहैए जे जखन निहत्था छेलौं, तखनो तँ हाथमे मुट्ठी छेलए-हे, जँ चारू-भरसँ आतताइ घेर लैत तैयो तँ दूटा हाथ आ दूटा पएर रहबे करए, कृष्णजीक सुदर्शन चक्र बनि केतेकेँ नाको-आँखि आ केतेकेँ छातियो तोड़ि कऽ खसा दैतिऐ।"

रीनाक बात सुनि रघुनाथ कक्काक मनमे उठलैन-

"यएह छी परिवारजनक सहयोग, मुदा विचारकेँ बिखण्डित भेने परिवार परिवार कहाँ रहि जाइए।"

दोहरा कऽ रघुनाथ काका पुछलखिन-

"बुच्ची, ओते लोकक बीच एहेन साहस केना कए सकितह। देखिये कऽ थरथरा जइतह।"

मुस्की मारैत रीना बाजल-

"बाबा, साहस तँ मनक वेग छी, ओ तँ दुनियाँकेँ देखैक नजैरक उपज छी। जेकरा अपन इज्जत-आवरू मनमे बसैत रहत। ओ डरबुक भइये ने सकैए। जाबे घटमे प्राण रहैत, ताबे पाछू केना हटि जैतिऐ। जिनगीमे जँ प्रण नहि तँ ओ प्राणे की आ जिनगीए की?"

रघुनाथ काका- "मुदा..?"

हँसैत रीना बाजल-

“मुदा-तुदा किछु ने!

अपन जिनगी, अपन हाथ

अपने संगी अपने साथ।”



शब्द संख्या : 1992, तिथि : 29 जनवरी 2017

Notes